

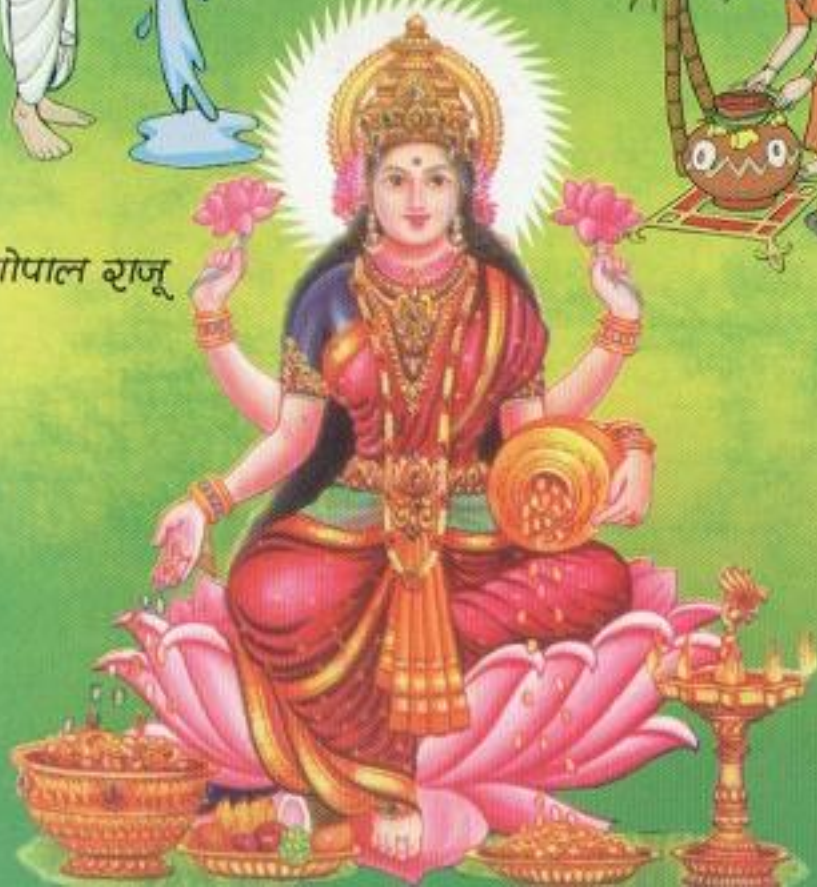
दुर्भाग्यनाशक

टोटके और उपाय

दूर करें दुर्भाग्य



गोपाल राजू



Digitize By



Call @ # 9897598458
9259446946

दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय

वर्तमान दशक में हमारी जीवन शैली में एक विशेष परिवर्तन आया है कि हम वैभवशाली और आरामदायक जीवन की ओर अग्रसर हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप अधिकाधिक धनोपार्जन समाज में प्रतिष्ठा का हेतु बन चुका है। लेकिन धनोपार्जन में ज्योतिष के अनुरूप सितारों का प्रभाव होने पर ही हम धनवान बन सकते हैं। जिन लोगों के धनवान बनने में कोई ज्योतिषीय विघ्न है तो उन्हें दूर करने के तान्त्रिक उपायों सहित इस पुस्तक में निर्देश दिए गये हैं।

इस प्रकार वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता के अनुरूप लिखी गई इस पुस्तक को प्रस्तुत किया है आपके जाने-माने लेखक 'गोपाल राजू' ने।

समर्पित

पूर्व पत्नी स्व. कविता एवं भाँजे स्व.पन्नु को।

— गोपाल राजू

दुर्भाग्यनाशक

टोटके और उपाय

अर्थात्

दूर करें दुर्भाग्य

लेखक :

गोपाल राजू

(स्वर्णपदक प्राप्त)

तन्त्राचार्य, ज्योतिष सम्राट, ज्योतिष महामहोपाध्याय,

ज्योतिषरत्न, हस्त-रेखाविद, रत्न विशेषज्ञ।

मूल्य : 80.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे)
हरिद्वार-249401
फोन : (01334) 226297

वितरक : रणधीर बुक सेल्स
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : गगन बुक डिपो
4694, चरखेवालान (निकट नई सड़क, दाईवाड़ा)
दिल्ली-6

संस्करण : सन् 2008

शब्द सज्जा : जे के प्रिन्टोग्राफर्स, दिल्ली-6

मुद्रक : राजा ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली-92

(पूर्व प्रकाशित 'दूर करें दुर्भाग्य' नामक पुस्तक का परिवर्द्धित संस्करण)

© रणधीर प्रकाशन

DURBHAGYA NASHAK TOTKE AUR UPAYE

Written by : Gopal Raju

Published by : Randhir Prakashan, Hardwar (India)

“मिथ्या ज्ञान ही दुर्भाग्य है”

भूमिका

दुर्भाग्य, कितना सीधा-सरल सा शब्द! कोई भी इस शब्द की तार्किक व्याख्या कर सकता है। इस पर लिखना तो और भी सरल लगेगा, क्योंकि आए दिन व्यवहार में सुनाई देने वाला यह शब्द लगभग प्रत्येक व्यक्ति के पीछे छलावे सा लगा हुआ है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाला कोई बिरला ही सम्भवतः दुर्भाग्य के कुचक्र से बचा हो। इस विषय पर लिखने को जब मैंने लेखनी उठाई, मुझे तब पता चला कि नित्य व्यवहार में आने वाला यह शब्द वास्तव में कितना जटिल है और इसकी व्याख्या करना कितना कठिन है।

मैंने अपनी पुस्तकों में यह जटिल विषय ही क्यों चुना, इसका स्पष्टीकरण भी विषय की तरह ही जटिल है। मैं चिरन्तर से चिन्तन-मनन कर रहा था कि इस विषय पर लिखूँ और दुर्भाग्य दूर करने के सरलतम एवं व्यावहारिक प्रयोग एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करूँ। परन्तु इसकी व्याख्या का आदि और अन्त ही नहीं मिल पा रहा था। कहाँ से प्रारम्भ करूँ और कहाँ पर इसका अन्त समझूँ।

एक दिन एक सर्वसम्पन्न परिचित के मुँह से दुर्भाग्य शब्द सुनकर मुझे इस पुस्तक को प्रारम्भ करने की प्रेरणा मिल गई। उस दिन देर रात तक मैं अत्रिराम सोचता रहा कि उस व्यक्ति के जीवन में किस बात की कमी है। धन सम्पदा, वैभव-ऐश्वर्य, सुन्दर सुशील और गुणवती पत्नी,

आज्ञाकारी, तेजस्वी, होनहार और स्वस्थ मानसिकता वाले बच्चे, घर का स्वस्थ, प्रसन्नचित्त और शान्त वातावरण। सब कुछ तो उपलब्ध है उनको दुनिया में। वह इतने सम्पन्न हैं कि सारा परिवार यदि हाथ पर हाथ रखकर खाता-पीता ही रहे तो भी उन सबके जीवन में किसी बात की कमी न आए। फिर उन सज्जन के मुँह पर दुर्भाग्य शब्द क्यों आया!

वास्तव में बात यह थी कि उनकी किसी पुश्तैनी छोटी सी जमीन का सौदा हुआ था और उसके उन्हें दस लाख रुपये मिले थे। उन्हें इस बात का पछतावा हो रहा था कि चार माह पहले न बेचकर उसी छोटे से टुकड़े को उन्होंने यदि आज बेचा होता तो उन्हें कम-से-कम डेढ़-दो गुना अधिक पैसे मिल जाते। बाप-दादाओं के समय की मुफ्त में मिली जमीन दस लाख में बेचकर भी वह अपना माथा पकड़कर मेरे सामने अपने दुर्भाग्य को कोस रहे थे।

क्या इतना सब कुछ होते हुए भी यह उनका दुर्भाग्य था? वास्तव में दुर्भाग्य किसको माना जाए? चार माह पूर्व जो उनका सौभाग्य था आज उनके लिए दुर्भाग्य बन गया। इसका ठीक उल्टा जमीन खरीदने वाले के लिए हुआ, क्योंकि आज वह सौभाग्यशाली हो गया। उसको कल्पना भी नहीं थी कि उस जमीन का मूल्य चार माह में दोगुना भी हो सकता है।

किसी का दुर्भाग्य अन्य के लिए सौभाग्य का कारण होता है। इसके विपरीत किसी के लिए वह दुर्भाग्य बन सकता है। भीषण गर्मी के बाद बरसने वाला वर्षा का जल एक किसान के लिए बहुत सौभाग्यशाली है, वही वर्षा एक कुम्हार के लिए दुर्भाग्य का कारण भी हो सकती है। शब्द एक ही है परन्तु एक कारण से और एक ही समय में उसके प्रभाव भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। एक धनाढ्य व्यक्ति बहुत सौभाग्यशाली है। परन्तु उसका समस्त धन रेगिस्तान में उसको प्यास से तड़पकर मरते समय एक घूँट पानी तक नहीं दिलवा सकता। वहाँ एक फक्कड़, निर्धन

बंजारा अधिक धनाढ्य है। अधिक सौभाग्यशाली है क्योंकि उसके पास पीने के लिए पर्याप्त पानी है।

धनाढ्य-दरिद्र, स्त्री-पुरुष, अभिनेता-राजनेता, आस्तिक-नास्तिक, शान्तिवादी-आतंकवादी, बौद्धिक-निर्बुद्धि आदि सैकड़ों व्यक्तियों से अलग-अलग घण्टों चर्चा करने के बाद मैं कुछ निष्कर्ष निकाल पाया हूँ। विषय वस्तु आगे बढ़ाने से पूर्व वह ज्ञान आवश्यक हो जाता है जिसके लिए हम बढ़ रहे हैं। दुर्भाग्य शब्द को निम्नलिखित शब्दों और बनाई हुई परिभाषाओं से स्पष्ट करता हूँ।

“संसार में किसी के लिए प्रतिकूल स्थिति का सामना करना उसके लिए दुर्भाग्य है।”

“विपरीत प्रारब्ध का होना दुर्भाग्य है।”

“महत्वाकांक्षाओं का अधूरा रहना अथवा पूर्ण न होना दुर्भाग्य है।”

“मनुष्य द्वारा किये गए अशुभ कर्मों का फल भोगना दुर्भाग्य है।”

“विषम परिस्थितियाँ दुर्भाग्य को जन्म देती हैं।”

“विषय वासनाओं की पूर्ति होते चले जाना ही दुर्भाग्य का मूल कारण है।”

“आज का अविवेकी कार्य कल का दुर्भाग्य है।”

“उत्तरोत्तर सुख प्राप्ति की हवस ही दुर्भाग्य का कारण बनती है।”

“दुःख दरअसल सुख का घट जाना है और यहाँ से ही दुर्भाग्य प्रारम्भ होता है।”

“जीवन की सीमितताओं से निकले नहीं कि समझिये दुर्भाग्य को निमन्त्रण दे दिया।”

“मिथ्या ज्ञान ही दुर्भाग्य है।” यह मेरे एक कट्टर आर्यसमाजी मित्र का कथन है।

“भौतिक सुखों में कमी होना दुर्भाग्य है।”

“विषय-भोग और इन्द्रियों की अनुकूलता अन्ततः दुर्भाग्य का कारण बनती है।”

“धन की हानि दुर्भाग्य है।”

“स्वास्थ्य की हानि दुर्भाग्य है।”

“रोटी, कपड़ा और मकान का न मिलना दुर्भाग्य है।”

“भाग्यहीन होना दुर्भाग्य है।”

“बच्चों पर पढ़ाई का भार दुर्भाग्य है।”

“स्वार्थ अथवा परमार्थ सिद्धि की अप्राप्ति ही दुर्भाग्य है।”

“किसी भी प्रिय का विछोह दुर्भाग्य है।”

“एक विशिष्ट समय में मनुष्य की सत्कर्म अथवा दुष्कर्म में होने वाली असफलता उसका दुर्भाग्य है।”

“स्वास्थ्य, वैभव-ऐश्वर्य और बौद्धिकता से रहित व्यक्ति दुर्भाग्यशाली है।”

वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण बहुत सी कठिनाइयाँ आज सरल बना दी गयी हैं। दूरियाँ सिमटकर छोटी हुई हैं। असाध्य रोगों की चिकित्सा सम्भव कर दी गई है। अनेक असम्भव सी लगने वाली ऐसी बातों को सम्भव बना दिया गया है जिनकी सम्भावना की कभी कल्पना भी नहीं रही थी। यहाँ तक कि वैज्ञानिकों ने आज मृत्यु की परिभाषा ही बदल दी है। प्रत्येक व्यक्ति इस बात को स्वीकार करेगा कि जीवन में विविधतायें और सुख-सुविधायें बढ़ी हैं। आज की यह उपब्धियाँ ही हमारे दुर्भाग्य का कारण बन रही हैं।

धार्मिक प्रवचन सुनते समय, श्मशान में अपने प्रियजन की चिता जलाते समय, असाध्य रोगग्रस्त किसी असहाय रोगी से मिलते समय अथवा क्रोध और कोई जघन्य पाप कर चुकने के बाद अथवा किन्हीं कारणों से उत्पन्न पश्चातापवश जैसी भावना बनती है, यदि वह हमारे

जीवन में उतरकर स्थाई हो जाए तो दुर्भाग्य पैदा करने वाले कारण ही उत्पन्न नहीं होंगे। लेकिन अधिकांशतः होता यही है कि हम इन विभिन्न विपरीत स्थितियों में उत्पन्न बुद्धि भावना को घटना-क्रम समाप्त हो जाने के बाद एक झटके से बदलकर पुनः भौतिक वातावरण में रंग जाते हैं। साधारण भाषा में कहें कि हमारी वही घिसी-पिटी दुनियादारी की बातें पुनः चालू हो जाती हैं। यह ही हमारे दुर्भाग्य का कारण है।

जहाँ कहीं भी चिन्ता, भय, कष्ट, आशंका, दुःख, निरुत्साह, क्षोभ आदि का प्रादुर्भाव होता है, वहाँ समझिए विश्वास का सर्वथा अभाव होना प्रारम्भ हो जाता है। यहाँ से ही दुर्भाग्य साथ पकड़ लेता है। विपरीत परिस्थिति, शान्ति और शक्ति के साथ चित्त को एकाग्र करके ही दुर्भाग्य को जीता जा सकता है।

देखा जाये तो इच्छाएँ ही दुर्भाग्य की जननी हैं। यदि इच्छाओं की पूर्ति के पीछे न भागकर प्रारम्भ में ही उनका दमन प्रारम्भ कर दिया जाये तो सौभाग्य की प्राप्ति हो सकती है। यह सब केवल आत्मसंयम से ही सम्भव है। आत्मसंयम धन-रत्नों से कहीं अधिक मूल्यवान है। इसका कोई मोल नहीं है। इस बिना पैसे के क्रय की हुई वस्तु में ही हमारा कल्याण है। क्रोधाग्नि से भी सौभाग्य का धीरे-धीरे पलायन प्रारम्भ हो जाता है। इस पर भी आत्मसंयम से अधिकार जमाया जा सकता है। इससे जब तक नहीं उबरा जा सकता है जब तक मनसा, वाचा और कर्मणा हम असत्य के कुमार्ग पर चलना छोड़ नहीं देते।

एक बहुत ही सामान्य सा प्रश्न मुझसे अनेक जिज्ञासु प्रायः पूछते हैं कि जब भाग्य में दुर्भाग्य तय है तो फिर सौभाग्य कैसे मिल जायेगा? कर्म से दुर्भाग्य को बदला जा सकता है, यह पाठक समझ लें। यह अकाट्य सत्य है कि भाग्य की एक अधिकतम सीमा प्रारब्ध में निर्धारित है। उस सीमा को लाँघने में व्यक्ति के क्रियमाण कर्म उपयोगी सिद्ध होते हैं। प्रारब्ध में यदि बीमारी लिखी थी तो दवा से कभी कोई रोगी ठीक

नहीं होता। पढ़ाई में कमजोर बच्चे को एक योग्य पढ़ाने वाले अध्यापक से विद्या अर्जित करने में कभी सफलता नहीं मिलती। फल के किसी बीज में पौधा बनना, पेड़ में विकसित होकर फल आदि देने का सारा कार्यक्रम विधि ने पूर्व में ही निर्धारित कर दिया है। इस पूरे छिपे हुए कार्यक्रम का किसी को पूर्वानुमान नहीं है। वह बीज सड़ सकता है और फल-फूलकर एक सघन वृक्ष भी बन सकता है। यह सब निर्भर करेगा उस माली पर जो उसके लिए कार्य करेगा। यदि वह किसी अनाड़ी माली के हाथ लगा तो अर्द्ध विकसित रह सकता है। इस अर्द्ध विकसित पौधे को कोई योग्य माली पर्याप्त मात्रा में खाद, पानी और अपना श्रम लगाकर अधिक विकसित भी कर सकता है। व्यक्ति के प्रारब्ध को भी कोई माली रूपी योग्य और निःस्वार्थ भाव से कर्म करने वाला तान्त्रिक अथवा उसका प्रयोग प्रभावित करके सौभाग्य के चरम बिन्दु तक पहुँचा सकता है। यह दवा की तरह उसका क्रियमाण कार्य है।

भाग्य ने मेरे साथ छल किया। मेरे तो कर्म ही फूट गये। सब कुछ मेरे दुर्भाग्य के कारण हो रहा है आदि नकारात्मक बुद्धि वाली बातों से जीवन गर्त में ही जायेगा। हमने जीवन जीने के लिए टेढ़े-मेढ़े अथवा कहें कि गर्त में जाने वाले मार्ग को अंगीकार कर लिया है। अपने इस कुमार्ग को चुनकर हमने दुर्भाग्य पैदा कर लिया है। अपने इस कुमार्ग को चुनकर हम दुर्भाग्य को रो रहे हैं, बस यही हमारा दुर्भाग्य है।

प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित समस्त प्रयोग एक उत्प्रेरक की तरह कार्य करने में सक्षम हैं। बिना किसी क्षति के यह दुर्भाग्य को प्रभावित करते हैं, ऐसा अनेक भुक्त भोगियों का अनुभव है। अध्यात्म के जिस मार्ग पर हमें जाना है उन सरल प्रयोगों का वर्णन यहाँ मैंने इस उद्देश्य से लिख दिया है कि प्रभु ही सर्वोपरि है। तन्त्र, तान्त्रिक अथवा उसके क्रियाकलाप आदि सब प्रभु कृपा पर आधारित हैं। कुछ लोभी और झूठी ख्याति अर्जित करने वाले कथित तान्त्रिक स्वयं को ही भगवान का स्थान देने

नहीं होता। पढ़ाई में कमजोर बच्चे को एक योग्य पढ़ाने वाले अध्यापक से विद्या अर्जित करने में कभी सफलता नहीं मिलती। फल के किसी बीज में पौधा बनना, पेड़ में विकसित होकर फल आदि देने का सारा कार्यक्रम विधि ने पूर्व में ही निर्धारित कर दिया है। इस पूरे छिपे हुए कार्यक्रम का किसी को पूर्वानुमान नहीं है। वह बीज सड़ सकता है और फल-फूलकर एक सघन वृक्ष भी बन सकता है। यह सब निर्भर करेगा उस माली पर जो उसके लिए कार्य करेगा। यदि वह किसी अनाड़ी माली के हाथ लगा तो अर्द्ध विकसित रह सकता है। इस अर्द्ध विकसित पौधे को कोई योग्य माली पर्याप्त मात्रा में खाद, पानी और अपना श्रम लगाकर अधिक विकसित भी कर सकता है। व्यक्ति के प्रारब्ध को भी कोई माली रूपी योग्य और निःस्वार्थ भाव से कर्म करने वाला तान्त्रिक अथवा उसका प्रयोग प्रभावित करके सौभाग्य के चरम बिन्दु तक पहुँचा सकता है। यह दवा की तरह उसका क्रियमाण कार्य है।

भाग्य ने मेरे साथ छल किया। मेरे तो कर्म ही फूट गये। सब कुछ मेरे दुर्भाग्य के कारण हो रहा है आदि नकारात्मक बुद्धि वाली बातों से जीवन गर्त में ही जायेगा। हमने जीवन जीने के लिए टेढ़े-मेढ़े अथवा कहें कि गर्त में जाने वाले मार्ग को अंगीकार कर लिया है। अपने इस कुमार्ग को चुनकर हमने दुर्भाग्य पैदा कर लिया है। अपने इस कुमार्ग को चुनकर हम दुर्भाग्य को रो रहे हैं, बस यही हमारा दुर्भाग्य है।

प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित समस्त प्रयोग एक उत्प्रेरक की तरह कार्य करने में सक्षम हैं। बिना किसी क्षति के यह दुर्भाग्य को प्रभावित करते हैं, ऐसा अनेक भुक्त भोगियों का अनुभव है। अध्यात्म के जिस मार्ग पर हमें जाना है उन सरल प्रयोगों का वर्णन यहाँ मैंने इस उद्देश्य से लिख दिया है कि प्रभु ही सर्वोपरि है। तन्त्र, तान्त्रिक अथवा उसके क्रियाकलाप आदि सब प्रभु कृपा पर आधारित हैं। कुछ लोभी और झूठी ख्याति अर्जित करने वाले कथित तान्त्रिक स्वयं को ही भगवान का स्थान देने

नहीं होता। पढ़ाई में कमजोर बच्चे को एक योग्य पढ़ाने वाले अध्यापक से विद्या अर्जित करने में कभी सफलता नहीं मिलती। फल के किसी बीज में पौधा बनना, पेड़ में विकसित होकर फल आदि देने का सारा कार्यक्रम विधि ने पूर्व में ही निर्धारित कर दिया है। इस पूरे छिपे हुए कार्यक्रम का किसी को पूर्वानुमान नहीं है। वह बीज सड़ सकता है और फल-फूलकर एक सघन वृक्ष भी बन सकता है। यह सब निर्भर करेगा उस माली पर जो उसके लिए कार्य करेगा। यदि वह किसी अनाड़ी माली के हाथ लगा तो अर्द्ध विकसित रह सकता है। इस अर्द्ध विकसित पौधे को कोई योग्य माली पर्याप्त मात्रा में खाद, पानी और अपना श्रम लगाकर अधिक विकसित भी कर सकता है। व्यक्ति के प्रारब्ध को भी कोई माली रूपी योग्य और निःस्वार्थ भाव से कर्म करने वाला तान्त्रिक अथवा उसका प्रयोग प्रभावित करके सौभाग्य के चरम बिन्दु तक पहुँचा सकता है। यह दवा की तरह उसका क्रियमाण कार्य है।

भाग्य ने मेरे साथ छल किया। मेरे तो कर्म ही फूट गये। सब कुछ मेरे दुर्भाग्य के कारण हो रहा है आदि नकारात्मक बुद्धि वाली बातों से जीवन गर्त में ही जायेगा। हमने जीवन जीने के लिए टेढ़े-मेढ़े अथवा कहें कि गर्त में जाने वाले मार्ग को अंगीकार कर लिया है। अपने इस कुमार्ग को चुनकर हमने दुर्भाग्य पैदा कर लिया है। अपने इस कुमार्ग को चुनकर हम दुर्भाग्य को रो रहे हैं, बस यही हमारा दुर्भाग्य है।

प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित समस्त प्रयोग एक उत्प्रेरक की तरह कार्य करने में सक्षम हैं। बिना किसी क्षति के यह दुर्भाग्य को प्रभावित करते हैं, ऐसा अनेक भुक्त भोगियों का अनुभव है। अध्यात्म के जिस मार्ग पर हमें जाना है उन सरल प्रयोगों का वर्णन यहाँ मैंने इस उद्देश्य से लिख दिया है कि प्रभु ही सर्वोपरि है। तन्त्र, तान्त्रिक अथवा उसके क्रियाकलाप आदि सब प्रभु कृपा पर आधारित हैं। कुछ लोभी और झूठी ख्याति अर्जित करने वाले कथित तान्त्रिक स्वयं को ही भगवान का स्थान देने

लगे हैं। ऐसे धूर्तों से बचें क्योंकि इनके कारण ही तन्त्र, उपहास और तिरस्कार का विषय बना है।

अन्त में अपने प्रकाशक के प्रति दो शब्द आभार के अवश्य कहूँगा जिनके सशक्त सम्पादन में मेरी एक अनन्य कृति इस मनमोहक रूप सज्जा में आप तक पहुँच सकी।

दुर्भाग्य दूर करने का श्रीगणेश करिए। मन में अटूट श्रद्धा और विश्वास जगाइए, प्रभु सहायता के लिए सदैव आपके साथ हैं।

अन्त में यह सदैव स्मरण रखें कि फल मिलना, न मिलना अन्ततः ईश्वरीय देन है, हमारा दायित्व नहीं।

शरद पूर्णिमा

वि. सम्वत् २०४८

— गोपाल राजू

ज्योतिष अनुसन्धान केन्द्र

पी.ओ. बॉक्स-८७

३०, सिविल लाइन

रुड़की-२४७६६७ (उत्तरांचल)

दूरभाष : ०१३३२-२७४३७०

अनुक्रम

| | |
|---|-----|
| सर्वोपकारी सूर्य | १३ |
| गायत्री प्रार्थना | २७ |
| श्री राम, जय राम, जय जय राम—एक तारक मन्त्र | ३६ |
| स्वर योग और दुर्भाग्य | ४६ |
| सूर्य स्वर | ५१ |
| चन्द्र स्वर | ५२ |
| शून्य स्वर | ५३ |
| स्वर के बहाव का समय | ५३ |
| स्वर प्रवाह अनुकूल करना | ५४ |
| स्वर से दूर करें दुर्भाग्य | ५५ |
| शुभ और अशुभ दिन | ५७ |
| जीवन के गुप्त चक्र | ६८ |
| मायावी वर्ग | ८२ |
| रत्नों से दूर करें दुर्भाग्य | ९७ |
| वास्तु ज्योतिष में विभिन्न रंग | ११० |
| दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय अर्थात् तान्त्रिक प्रयोगों द्वारा दूर करें दुर्भाग्य | ११९ |

“आज का अविवेकी कार्य कल का दुर्भाग्य है।”

— बालकवि वैरागी

सर्वोपकारी सूर्य

शास्त्रों में सूर्य को परमात्मा स्वरूप माना गया है। सूर्य ही कालचक्र का प्रणेता और प्रणव रूप है। जो प्रणव के अर्थभूत सच्चिदानन्द तथा भूः, भुवः और स्वः स्वरूप से त्रिभुवन एवं सम्पूर्ण जगत की सृष्टि करने वाले हैं उन सूर्यदेव के सर्वश्रेष्ठ तेज का ध्यान करने मात्र से हमारी बुद्धि को प्रेरणा मिलती है। सूर्य से ही सब ऋतुएँ होती हैं। ऋतुओं से अन्न होता है और अन्न से व्यक्ति का जीवन चलता है। सूर्य से वायु, भूमि, जल और अग्नि उत्पन्न होती है।

सूर्य ही प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान—इन पाँच प्राणों के रूप में विद्यमान हैं। सूर्य श्रवण, त्वचा, चक्षु, रचना और घ्राण—इन पाँच इन्द्रियों के रूप में कार्यरत हैं। सूर्य वाक्, पाणि, पाद, वायु और उपस्थ—यह पाँच कर्मेन्द्रिय हैं। सूर्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ज्ञानेन्द्रियों के पाँच विषय हैं। सूर्य, वचन, आदान, गमन, मल-त्याग और आनन्द इन पाँच कर्मेन्द्रियों के विषय हैं। सूर्य आनन्दमय, ज्ञानमय और विज्ञानमय हैं। सूर्य से ही विश्व दीप्तिमान है।

सूर्य की ऊर्जा से ही पृथ्वी पर जीवन है। पृथ्वी के लगभग ७० प्रतिशत क्षेत्र में जल है। सूर्य ऊर्जा और पृथ्वी के जल से वाष्प बनती है जो आकाश में जाकर मेघमण्डल का रूप धारण करती है। इससे वर्षा

होती हैं। इसी से अनेक प्रकार के रस, फल-फूल, अन्न आदि उत्पन्न होते हैं। इन सबसे प्रत्येक प्राणी का भरण-पोषण होता है। इसीलिए सूर्य को पिता कहा गया है। सूर्य की कुल ऊर्जा का अल्पतम ही पृथ्वी तक पहुँचता है। १ सैकेण्ड के कई भाग में जो ऊर्जा पैदा होती है उसका भी जीव अपने करोड़ों वर्षों में उपयोग नहीं कर पाता। सूर्य से निरन्तर प्रति सैकेण्ड चालीस लाख टन द्रव्यमान के परिमाण में ऊर्जा निकलकर आकाश में विकिरण हो रही है। उसमें हाईड्रोजन के परमाणु सर्वाधिक हैं। सूर्य की आराधना करने से समस्त रोगों का स्वतः ही शमन हो जाता है। सूर्य दुर्भाग्य को दूरकर परमसुख की प्राप्ति करवाने वाले हैं। मैं पिछले तीस वर्षों से सूर्य की प्रतिदिन पूजा करता हूँ। मुझे आज पता चलता है कि मैंने इससे क्या अर्जित किया। अपने प्रयोगों में सूर्य आराधना को मैं विशेष रूप से बल देता हूँ। सूर्योपासना से असंख्य लोगों को लाभ पहुँचा है। इस संक्षिप्त वैज्ञानिक विवरण के बाद अब सूर्यरहित-जीवन की एक बार कल्पना करके देखिए।

प्रिय पाठकों से भी मेरा निवेदन है कि वह नित्य प्रति दोनों संध्याओं में (प्रातः और सायंकाल दोनों बेलाओं में) सूर्य-नमस्कार और सूर्य को अर्घ्याञ्जलि दिया करें। सूर्य भगवान की प्रार्थना किया करें—

ओ३म विश्वानि देव सवितदुरितानि परासुव ।

यद् भद्रं तन्न आसुव ॥

(ऋक. ५/८२/५, शु. यजु. ३०/३)

अर्थात् समस्त संसार को उत्पन्न करने वाले सृष्टिपालन संहार करने वाले किंवा विश्व में सर्वाधिक दैदीप्यमान एवं जगत को शुभकर्मों में प्रवृत्त करने वाले हे परब्रह्म स्वरूप सविता देव! आप हमारे सम्पूर्ण आधिभौतिक, आधिदैविक, आधिदैहिक बुराइयों और पापों को हमसे दूर-बहुत दूर ले जाएँ, दूर करें, किन्तु जो भला है, कल्याण है, श्रेय है, मंगल है, उसे हमारे लिए विश्व के हम सभी प्राणियों के लिए चारों ओर

से भली-भाँति ले आएँ, हे 'यद् भद्रं तन्न आसुव'।

अपने सरलतम तान्त्रिक प्रयोगों में मैं यदि अन्धकार और दुर्भाग्य दूर करने वाले सूर्यदेव के प्रयोग नहीं लिखूँगा तो मेरा कार्य अधूरा होगा क्योंकि सूर्यदेव ही देवताओं में अत्यन्त उत्कृष्ट और सर्वोत्तम तथा ज्योतिर्मय परमात्मा को प्राप्त करवाने वाले हैं।

प्रातःकालीन उदय होते हुए सूर्य के सामने एक जल से भरे पात्र को लेकर खड़े हो जाइए। अपने दोनों हाथों में पात्र को पकड़कर इतना ऊपर उठाइए कि उसमें से जब आप जल गिराएँ तो उससे छनकर सूर्य की किरणें आपके समस्त शरीर विशेषरूप से आँखों पर पड़ें। ध्यान रखिए कि जल को सूर्य की तरफ फेंकना नहीं है वरन अर्पण करना है—श्रद्धाभाव से।

सूर्य को इस प्रकार से जल देने को अर्घ्य देना कहते हैं। अर्घ्य देने में मैं किसी भी प्रकार का बन्धन नहीं मानता हूँ। अपने प्रयोगों के लिए व्यक्ति के नहाने-धोने, व्रत आदि का भी मैं कोई औचित्य नहीं समझता। यह सब शारीरिक आडम्बर हैं।

पूजा पूर्णरूप से आत्मिक है। हाँ आत्मशुद्धि अनिवार्य है। यहाँ बस इतना समझ लें आत्मशुद्धि नहाने, व्रत आदि से कदापि नहीं मिलती। मैं महिलाओं के मासिक धर्म के दिनों में भी सूर्य अर्घ्य देना नहीं रुकवाता। यह तो प्राकृतिक है। महिलाएँ पाँच दिन पूजा से क्यों वंचित रहें?

निम्न मन्त्र पाँच बार बोलकर प्रत्येक बार अर्घ्य दें। यह सर्वाधिक सरल प्रयोग है। किसी भी दिन से यह प्रारम्भ कर दें। परन्तु अच्छा हो यदि यह सूर्य के नक्षत्रों में से किन्हीं एक में प्रारम्भ करें। इस प्रयोग का प्रभाव तब दिखाई देना प्रारम्भ हो जायेगा जब यह आपके जीवन का अंग बन जाए अर्थात् जिस दिन आप यह अपने से चूक जाएँ जो आपको लगने लगे कि दिनचर्या में से एक महत्वपूर्ण कार्य छूट गया। जब पाँच

बार मन्त्र बोलकर पाँच ही बार सूर्य को जल दे दें तो नीचे गिरे जल को अपनी अनामिका ऊँगली से छुआकर माथे और दोनों आँखों पर लगा लीजिए। जल छोड़ते समय यह सोचकर रोमांचित होइए कि सूर्य की ऊर्जा किरणें पानी से छनकर आप के शरीर में भृकुटि से प्रवेश कर रही हैं। अभ्यास होने पर अर्घ्य देते समय आपका रोम-रोम पुलकित होने लगेगा। बस ऐसी ही स्थिति प्रतिपल बनाए रखने के साधन ढूँढ़ते रहिये। जप मन्त्र यह है—

“ॐ श्री सूर्य नारायणाय नमः”

यह सबसे सरल मन्त्र है इसीलिए इसकी चर्चा पहले की है। छोटी आयु में यदि किसी को दृष्टिदोष के कारण चश्मा प्रयोग करना पड़ रहा है तो यह प्रयोग अवश्य करिए। १-२ वर्ष में ही आपका चश्मा उतर जायेगा। मेरा १५ वर्ष पुराना चश्मा उतर गया है। मैं आपके सामने प्रत्यक्ष प्रमाण हूँ।

इसके अतिरिक्त सूर्य का एक अन्य सरल परन्तु उतना ही प्रभावशाली मन्त्र है—

“ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्”

इसमें ‘ॐ’ एकाक्षर मन्त्र है जो ब्रह्म है। ‘घृणिः’ यह दो अक्षरों का मन्त्र है। ‘सूर्यः’ यह दो अक्षरों का मन्त्र है। ‘आदित्य’ मन्त्र में तीन अक्षर हैं। इन सबको मिलाकर सूर्य नारायण का अष्टाक्षर महामन्त्र— ‘ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्’ बनता है।

ऊपर की भाँति मन्त्र बोलकर अर्घ्य देने से दारिद्र्य और समस्त पापों का नाश होता है। मनुष्य की पाँच महापातकों से मुक्ति होती है। इस मन्त्र का जप करने से समझिए सैकड़ों यज्ञों और पुण्य कर्मों का फल मिलता है। जब सूर्यदेव हस्त अर्थात् चन्द्रमा के नक्षत्र में होते हैं तब यदि संकल्प लेकर कोई व्यक्ति इस मन्त्र का सूर्य के सम्मुख जप करके अर्घ्य दे तो वह महामृत्यु से तर जाता है। दुर्भाग्य तो ऐसे मनुष्य के पास से

स्वतः ही कोसों दूर भाग जाता है।

गर्भवती महिलाओं तथा आँख के रोगियों को सूर्य उपासना अवश्य करनी चाहिए। गर्भाधान के प्रथम मास से ही महिलाएँ यदि यह प्रयोग करें तो उन्हें निश्चित रूप से पुत्र प्राप्ति होती है। जिन महिलाओं को किन्हीं कारणों से गर्भपात होने की समस्याएँ आती थीं उन पर मैंने सूर्य उपासना का सरलतम प्रयोग अनेक बार किया है।

पुत्र कामना वाले दम्पति किसी भी सूर्य के नक्षत्र में प्रातःकाल सूर्य के सामने खड़े होकर संकल्प लें कि बच्चा होने तक नित्य प्रतिदिन दोनों श्रद्धापूर्वक वह सूर्य को अर्घ्य देंगे। अब वह एक साबुत नारियल फोड़ कर उसका फूल निकाल लें। सूर्योपासना के बाद दोनों सम्मिलित रूप से यह नारियल केवल लड़कों में बाँट दें। सब नारियल बाँट जाने के बाद महिला पहले से निकाला हुआ गोले का फूल निगल लें। यह चबाए नहीं, क्योंकि यह बहुत कड़वा होता है। बच्चा होने तक सूर्य को अर्घ्य देने और मन्त्र जपने में एक दिन का भी नागा नहीं होना चाहिए। दोनों में से यदि कोई बीच में किन्हीं कारणों से अर्घ्य न भी दे पाए तो कोई एक व्यक्ति यह कार्य अवश्य ही करता रहे। देखने-पढ़ने में यह कठिन अवश्य लग रहा होगा परन्तु यह प्रयोग कठिन है नहीं।

इसी प्रकार सूर्योपासना से अन्धकार का नाश, किसी के द्वारा कुछ करे हुए का उपचार, नेत्र रोगों, चर्म रोग, वात रोग उपाय आदि व्याधियों का समाधान होता है। सूर्य के सम्मुख गायत्री मन्त्र का जप करने से उसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। व्यक्ति केवल गायत्री मन्त्र जप कर अर्घ्य देता रहे तो उस के अनेक कार्य प्रभु पूर्ण कर देते हैं।

पाठकों के लाभार्थ सूर्य के परम गोपनीय एक सौ आठ नामों का वर्णन यहाँ कर रहा हूँ। यह स्वर्ग और मोक्ष देने वाले हैं। आप सूर्य उदय और सूर्य अस्त के समय यह जप कर सूर्य को अर्घ्य दें। प्रत्येक नाम के पहले 'ॐ श्री' और अन्त में 'नमः' लगाया करें अर्थात् सूर्य के प्रत्येक

नाम को नमस्कार करना है। जैसे ॐ श्री सूर्य नमः, ॐ श्री अर्यमा नमः आदि। सूर्य के सौभाग्य और मोक्ष देने वाले नाम इस प्रकार हैं—सूर्य, अर्यमा, भग, त्वष्टा, पूषा (पोषक), अर्क, सविता, रवि, गभस्तिमान (किरणों वाला), अज (अजन्मा), काल, मृत्यु, धाता (धारण करने वाला), प्रभाकर (प्रकाश का खजाना), पृथ्वी, आप (जल), तेज, रव (आकाश), वायु, परायण (शरण देने वाला), सोम, बृहस्पति, शुक्र, बुध, अंगारक (मंगल), इन्द्र, विवस्वान, दीप्तांशु (प्रज्वलित किरणों वाला), शुचि (पवित्र), सौरि (सूर्य पुत्र मनु), शनैश्चर, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, स्कन्द, वैष्णव (कुबेर), यम, वैद्युत (बिजली में रहने वाले), अग्नि, जठराग्नि, ऐन्धन (ईन्धन), तेजःपति, धर्मध्वज, वेदकर्ता, वेदाँग, वेदवाहन, कृत (सत्युग), त्रेता, द्वापर, कलि, सर्वाभयश्रय, कला, काष्ठा, मुहुर्त, क्षपा (रात्रि), याम (प्रहर), क्षण, सम्बत्सर, कर, अश्वत्थ, कालचक्र, विभावसु (अग्नि), पुरुष, शाश्वतयोगी, व्यक्ताव्यक्त, सनातन, कालाध्यक्ष, प्रजाध्यक्ष, विश्वकर्मा, तमोनुद (अन्धकार दूर करने वाला), वरुण, सागर, अंश, जीमूत (मेघ), जीवन, अरिहा (शत्रुनाशक), भूताश्रम, भूतपति, सर्वलोकनमस्कृत, स्रष्टा, संवर्तक (प्रलयकालीन), अग्नि, सर्वादि, अलोलुप (निलोभ), अनन्त, कपिल, भानु, कामद (कामनाओं की पूर्ति करने वाला), सर्वतोमुख (सब ओर देखने वाला), जय, विशाल, वरद, सर्वभूतनिपेवित, मन, सुपर्ण (गरुड़), भूतादि, शीघ्रग (शीघ्र चलने वाला), प्राणधारण, धन्वन्तरि, धूमकेतु, आदिदेव, अदितिपुत्र, द्वादशशात्मा (बारह स्वरूप वाला), दक्ष, पिता, माता, पितामह, स्वर्गद्वार, प्रजाद्वार, मोक्षद्वार, त्रिविष्टप (स्वर्ग), देहकर्ता, प्रशान्तात्मा, विश्वात्मा, विश्वतोमुख, चराचरात्मा, सूक्ष्मात्मा, मैत्रेय और करुणान्वित (दया करने वाला)।

सूर्य उपासना की महिमा वेदों, गीता, पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में मिलती है। श्रीकृष्ण जी ने भी अर्जुन से कहा है—हे अर्जुन! जो मनुष्य प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल सूर्यदेव को अर्घ्यादि से पूजा स्मरण

करता है, वह जन्म-जन्मान्तर में कभी दरिद्र नहीं होता, सदा धन-धान्य और सौभाग्य से वह समृद्ध रहता है।

सूर्य चिकित्सा सिद्धान्त के अनुसार रोगोत्पत्ति का कारण शरीर में रंगों का घटना-बढ़ना है। रंग एक रासायनिक मिश्रण है। हमारा शरीर भी रासायनिक तत्वों से बना हुआ है जिसके जिस अंग में जिस प्रकार के तत्व की अधिकता होती है उसके उसी अंग में उसके अनुरूप उस अंग का रंग बन जाता है।

सूर्य में इन्द्रधनुष के सातों रंग होते हैं। शरीर में जिस रंग की क्षीणता हो जाती है यदि उसकी पूर्ति सूर्य के उस रंग विशेष से कर दी जाए तो व्यक्ति स्वास्थ्य लाभ करता है। रंगीन पानी की बोतलें भरकर सूर्य की रोशनी में रखना इसी सिद्धान्त पर आधारित है। रंगों के सिद्धान्त पर ही विभिन्न रत्न प्रयोग करवाए जाते हैं। वर्ण चिकित्सा के सम्बन्ध में वेदों में भी वर्णन मिलता है। अथर्ववेद (१/२२) में लिखा है—

अनु सूर्यमुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते।

गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परिदध्मसि॥

अर्थात् हे हरिमा—तुम्हारा पीलापन (पाण्डु, कामला आदि रोग) तथा हृद्द्योतः—हृदय की जलन (हृदय सम्बन्धी रोग), सूर्यमनु—सूर्य की अनुकूलता से, उत् अयताम्—उड़ जाऊँ, गोः—रश्मियों के तथा प्रकाश के उस, रोहितस्य—लाल, वर्णेन—रंग से, त्वा—तुम्हें, परि—सब ओर, दध्मसि—धारण करता है।

भाव यह है कि सूर्य की लाल रश्मियों के प्रकाश में खुले शरीर बैठने तथा लाल रंग की गाय के दूध का सेवन करने से पाण्डु और हृदय सम्बन्धी रोगों में बहुत लाभ मिलता है। श्वेत कुष्ठ जैसे असाध्य रोग भी पूर्याष्टक का श्रद्धापूर्वक नित्य पाठ करने से दूर हो जाते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा रोग निदान में सूर्य रश्मियों की उपयोगिता सरी हुई है। वहाँ स्पष्ट लिखा है कि प्रतिदिन ऊषाकाल में उठकर सूर्य

की रश्मियों का सेवन करने वाला कभी रोगी नहीं होता। वह दीर्घायु प्राप्त करता है। अनेक विद्वानों ने यह स्वीकारा है कि हजारों वर्ष पहले सूर्योपासक अन्य प्रकार के बहुत से एकेश्वरवादियों से मानसिक तथा आध्यात्मिक बातों में अधिक बढ़े-चढ़े होते थे।

सूर्य के उपयोगों की यदि चर्चा प्रारम्भ कर दी जाए तो एक अलग से वृहद् ग्रन्थ ही तैयार हो जाएगा।

इस अध्याय में हमारी चर्चा का मूल विषय है सूर्य और उसकी तान्त्रिक साधना। सर्वप्रथम पाठक इस विषय में श्रद्धा पैदा कर लें। क्योंकि बिना श्रद्धा-विश्वास के कोई भी साधना पूर्ण नहीं होगी। सत्यता पर दो मार्गों द्वारा पहुँचा जा सकता है। एक है श्रद्धा और विश्वास का सीधा-सीधा रास्ता। दूसरा है तर्क का माध्यम। तर्क के अन्तर्गत आता है दर्शन शास्त्र।

बुद्धि के माध्यम से अर्थात् दर्शनशास्त्र पढ़कर सत्यता तक पहुँचना एक बौद्धिक प्रक्रिया है। परन्तु बुद्धि में एक अवगुण है। यह तर्क द्वारा किसी सत्य को मनवा तो सकती है। परन्तु उस तर्क के अनुरूप कार्य करने के लिए किसी को बाध्य नहीं कर सकती। दूसरी ओर श्रद्धा का यह गुण है कि किसी तथ्य की प्रामाणिकता वह भले ही न स्थापित कर सके, किन्तु उसके अनुरूप कार्य करने पर हमें बाध्य अवश्य करती है। हम जितना भी कर्म करते हैं, उनमें ९५ प्रतिशत श्रद्धा और विश्वास से उत्प्रेरित है। वह बुद्धि अथवा तर्क से कदापि नहीं है।

तन्त्र शास्त्र का आधार श्रद्धा है तर्क नहीं। इसको स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है कि तर्क-वितर्क का आश्रय छोड़कर सत्य की अनुभूति ही तन्त्र का विषय है।

तन्त्र साधना में शान्ति कर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण यह छह प्रकार के कर्म होते हैं जिन्हें षट्कर्म कहते हैं।

इन छह कर्मों के द्वारा मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन, विद्वेषण,

वशीकरण, आकर्षण, रसायन और यक्षिणी साधना अर्थात् नौ प्रकार के प्रयोग किए जाते हैं। जिन प्रयोगों द्वारा अनिष्टकारक ग्रहों अथवा विभिन्न रोगों आदि का उपचार किया जाता है, वह शान्ति कर्म कहलाते हैं।

जिन कर्मों से किसी जीव अथवा मनुष्य को अपने वश में किया जाता है वह वशीकरण कर्म कहे जाते हैं। जहाँ किसी भी गति को रोकने का प्रयोजन किया जाता है वह स्तम्भन कर्म कहलाते हैं। जहाँ दो अथवा अन्य लोगों में शत्रु अथवा विरोधी भावनाएँ जाग्रत करवाई जाती हैं उनको विद्वेषण कर्म कहते हैं।

जहाँ मन में अशान्ति पैदा की जाती है उन्हें उच्चाटन कर्म कहते हैं। जहाँ ऐसे प्रयोग किए जाते हैं कि किसी का प्राणान्त ही हो जाए अथवा वह मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगे ऐसे प्रयोग मारण प्रयोग कहे जाते हैं।

मैं अपने ग्रन्थों में केवल शान्ति कर्मों के प्रयोगों पर ही बल देता हूँ। जो व्यक्ति विषय को निःस्वार्थ भावना से जानने में इच्छुक हैं वह तन्त्र के अन्य ग्रन्थों का अध्ययन-मनन करें। तन्त्र की कुछ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—गायत्री तन्त्र, काम रत्न, मन्त्र-महोदधि, मन्त्र-महार्णव, योगिनी-तन्त्र, श्यामा रहस्य, उड्डीश तन्त्र, साबरी तन्त्र, वशीकरण साधन, यन्त्र-चिन्तामणि आदि।

यहाँ मैं एक बहुत ही गोपनीय और सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाले सूर्य के सर्वश्रेष्ठ यन्त्र पन्दरिया अथवा पंचदशी यन्त्र का वर्णन कर रहा हूँ। शंकर भगवान ने पार्वती जी के आग्रह पर इस यन्त्र का वर्णन इस प्रकार किया है—

हे पार्वती! पहले मैं पंचाक्षरी महामन्त्र बतलाता हूँ, सावधानी और ध्यानपूर्वक सुनो क्योंकि यह मन्त्र सभी सिद्धियों की प्राप्ति करवाने में सक्षम है। इसको जल, अग्नि और पृथ्वी इन तीनों स्थानों में अर्पित करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं श्री हरः

कलम से ही लिखकर पूर्वोक्त मन्त्र श्रद्धा से दस हजार जप ले तो इन चारों की प्राप्ति होती है।

दारिद्र्य नाश के लिए बरगद के वृक्ष के नीचे पाँच सौ बार इस मन्त्र को लिखने से लाभ मिलता है।

इस सिद्धि अथवा समस्त भोगों की प्राप्ति के लिए किसी घने पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर कपूर, अगर, मैनसिल और गोमूत्र से भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिखकर अपने पास रख लें तो आशातीत फल की प्राप्ति होती है।

वाक्सिद्धि के लिए बेलपत्र के रस में मैनसिल और हरताल को घोलकर बेल की कलम से रात्रि में किसी एकान्त स्थान पर इस यन्त्र को धरती पर दो हजार बार लिखने से मनवाँछित फल की प्राप्ति होती है।

भोजपत्र के ऊपर भृंगराज के रस से इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर यदि इस प्रकार धारण कर लिया जाए कि वह हृदय के ऊपर लटकता रहे तो इससे बाद-विवाद में श्री की प्राप्ति होती है।

आक, अकौवा अथवा मदार के दूध, इसी की कलम और इसके ही पत्ते पर यदि यह यन्त्र किसी शत्रु के नाम सहित एक सौ आठ बार लिखा जाए तो शत्रु का दुष्प्रभाव कम होता है, वह परास्त होता है अथवा उसे कष्ट पहुँचता है।

इस यन्त्र को दूध, उड़द, तिल, शक्कर, घी तथा करवीर वृक्ष के फूलों सहित यदि जल में यह रहकर प्रवाहित किया जाए कि वह व्यक्ति वश में हो, तो बली से बली व्यक्ति भी वश में हो जाता है। किसी कार्य की कामना करके यदि इसी प्रकार यन्त्र को जल में प्रवाहित किया जाए तो वह कार्य अवश्य ही सिद्ध होता है। जल में प्रभावित करने वाले यन्त्र को यदि गोरोचन, अगर और कुमकुम से भोजपत्र पर लिखकर धूप-दीपादि दिखाकर प्रवाहित किया जाए तो शंकर भगवान उस साधक को भाग्यवान और जीवनमुक्ति का स्वप्न दिखाकर धन्य करते हैं।

जो साधक शुभ मुहूर्त में भूमिशायी, संयमी तथा मन, कर्म और वचन से शुद्ध चित्त होकर किसी सिद्धपीठ में यह यन्त्र एक लाख बार पृथ्वी पर लिखकर फिर चावल, शक्कर, सरसों और घी इन चारों को मिलाकर विधि-विधान से होम करता है तो पूर्णरूप से यन्त्र उसको सिद्ध हो जाता है। ऐसा साधक ही किसी को यह यन्त्र देने के लिए योग्य गुरु भी बन जाता है।

यदि हल्दी के घोल और सेही के काँटे की कलम बनाकर भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिखकर शत्रु के घर के मुख्य द्वार पर गाढ़ दिया जाये तो उस परिवार में कलह उत्पन्न हो जाती है। यदि सेही के काँटे से बनाई गयी कलम भी यन्त्र के साथ ही दबा दी जाए तो प्रभाव और भी विकट रूप ले लेता है।

यदि अपामार्ग अर्थात् लटजीरा के रस से भोजपत्र पर इसे बनाकर त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके धारणा किया जाए तो तिजारी, चौथिया और ऐकांतिक ये तीनों प्रकार के ज्वर से रोगी को लाभ मिलता है।

केसर और शंखपुष्पी की स्याही और मोरपंखी की कलम से काँसे की थाली पर एक सौ आठ बार इस यन्त्र को बनाया जाये और उस पर कोई भी खाद्य पदार्थ अथवा पेय डालकर किसी मन्द बुद्धि विद्यार्थी अथवा ऐसे बच्चे को, जिसके क्रियाकलापों से उसके घर-बाहर वाले तंग आ चुके हों, पिलाया जाये तो उसे आशातीत लाभ पहुँचता है। यह प्रयोग कई बार दोहरा दें।

हल्दी के घोल से भोजपत्र पर एक सौ आठ यन्त्र बनाकर और उनको आटे की गोली में मिलाकर यदि मछलियों को खिला दिया जाए तो अनेक प्रकार की शारीरिक व्याधियों से छुटकारा मिल जाता है।

जन्म पत्री में जो ग्रह विशेष पीड़ाकारक चल रहा हो यदि उसके नक्षत्र में इस यन्त्र की एक सौ आठ गोलियों में मिलाकर मछलियों को खिलाया जाए तो उस ग्रह की शान्ति होती है। इस प्रयोग का मैं अनेक

लोगों पर सफल प्रयोग कर चुका हूँ।

पंचधातु अथवा अष्टधातु की अंगूठी पर इस यन्त्र को बना कर यदि धारण किया जाए तो भाग्य में वृद्धि होती है। यन्त्र बनवाते समय यह विशेष ध्यान रखा जाए कि अंक अंगूठी पर उभरे हुए बनने चाहिए।

इस प्रकार पंचदशी यन्त्र के कुछ प्रयोगों को देखते हुए अनेक विद्वानों ने एक मत से स्वीकार किया है कि यह यन्त्र मानव जीवन के चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करवाने में पूर्णरूप से सक्षम है।

सूर्य यन्त्र की सिद्धि के लिए प्रत्येक मनुष्य को अपने जन्म नक्षत्र, लग्न, वर्ण और राशि के अनुसार ही समय, विधि आदि का अनुसरण करना चाहिए अन्यथा कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। यन्त्र साधना के लिए सर्वाधिक उत्तम समय दीवाली, होली की रात्रि तथा कोई भी ग्रहण है।

यन्त्र और मन्त्र सिद्धि में साधक को प्रयोग से पहले यम नियमों को पालन करना परम आवश्यक है। क्रूरकर्मी, दुष्ट, दुराचारी और स्वार्थी यन्त्र सिद्धि कदापि नहीं कर सकता। पाठक यह ध्यान रखें कि तान्त्रिक शक्तियाँ भी ब्रह्मचर्य आदि की अपेक्षा करती हैं। अभीष्ट लक्ष्य में श्रद्धा जितनी गहरी होगी, प्रयोग उतना ही प्रचण्ड और शक्तिशाली होगा।

लोग उथली और एकांगी मन्त्र-यन्त्र साधनाएँ करते हैं इसलिए ही उसके सुप्रभाव से वंचित रह जाते हैं। मन्त्र और यन्त्र साधना के चार आधार हैं—शब्दशक्ति, मानसिक एकाग्रता, चारित्रिक श्रेष्ठता एवं लक्ष्य के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास। जो इन चारों आधारों को साथ लेकर चलते हैं उनकी तान्त्रिक साधना कभी निष्फल नहीं होती। वह देव दर्शन, इष्टसिद्धि, रोग से मुक्ति, ऋण से छुटकारा, आकर्षण आदि अनेक कार्य सिद्धि के भोक्ता बनते हैं। आप भी योग्य गुरु के संरक्षण में इस चमत्कारी साधना से लाभ उठाएँ।

“मनुष्य द्वारा किए गए अशुभ कर्मों का भोग ही दुर्भाग्य है।”

— सन्त वाणी

गायत्री प्रार्थना

हमारे परिवेश में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह कम विलक्षण नहीं है। बौद्धिक वर्ग के लिए कुशल मस्तिष्क के आधार पर ही सफलता प्राप्त करते हैं और अपनी प्रतिभा से अन्य लोगों का भी हित कर जाते हैं। प्रत्यक्ष चेतन मस्तिष्क द्वारा इन लोगों की उपलब्धियाँ कम चमत्कारी नहीं हैं। इस चेतन मन से परे अचेतन मस्तिष्क भी है जो अपने में रहस्य के भण्डार भरे हुए है। अचेतन मन के क्रिया-कलापों का लगभग ७ प्रतिशत भाग ही अब तक उजागर हो पाया है। इन ज्ञात रहस्यों की ही थाह नहीं मिल पा रही है। इसके अतिरिक्त जो अज्ञात भाग शेष पड़ा हुआ है, उसकी विलक्षणता और रहस्यता का अनुमान आप स्वतः लगा सकते हैं।

आज मनुष्य को इन्हीं विलक्षण शक्तियों के आधार पर अतिमानव और अज्ञात गुह्य शक्तियों से सम्पन्न बनाने की दिशा में निरन्तर कार्य चल रहे हैं। मैटाफिजिक्स, परामनोविज्ञान, अतीन्द्रिय विज्ञान आदि अनेक विज्ञान की धाराएँ इन विषयों पर कार्यरत हैं कि कैसे अचेतन मस्तिष्क के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जाए। यह बात एक मत से सब अवश्य स्वीकार करने लगे हैं कि अचेतन मन सर्वाधिक रहस्यमय, अद्भुत और शक्तिशाली तन्त्र है।

वेद, पुराण तथा भागवत आदि में उल्लेख आता है कि चेतन और अचेतन जगत में गायत्री (जो पापों का नाश करे) ही शक्ति रूप में विद्यमान है। गायत्री ही सोम है और गायत्री ही सावित्री है। साधना क्षेत्र में गायत्री को ही जीवनशक्ति, प्राणऊर्जा और कुण्डलिनी आदि शक्ति के रूप में जाना जाता है।

देवी भागवत में आता है—

'ब्रह्मत्वं चेदाप्तुकामऽस्युपास्व गायत्री चेल्लोक कामोऽन्यदेवम्।'

अर्थात् जिसे ब्रह्म की इच्छा हो वह गायत्री महाशक्ति की उपासना करे। अन्य कामनाओं की पूर्ति के लिए वह अन्य देवताओं की पूजा करे।

वेदों का सार यह निकलता है कि गायत्री उपासना से साक्षी बुद्धि— ऋतम्भरा प्रज्ञा का उदय होता है जिससे समस्त पापों का नाश होकर पवित्रता मिलती है।

स्कन्द पुराण में महर्षि व्यास जी का कथन है—

'गायत्रेवतपो योगः साधनं ध्यानमुच्यते।

सिद्धिनां सामता माता नातः किञ्चिद् बृहत्तरम्॥'

अर्थात् गायत्री ही तप और गायत्री ही योग है। गायत्री सबसे बड़ा ध्यान और साधन है। इससे बढ़ कर सिद्धिदायक प्रयोग और कोई नहीं है।

मनु भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं—

'सावित्र्यास्तु परन्नास्ति।'

अर्थात् गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं है।

गायत्री मंजरी में मिलता है—'हे पार्वती! समस्त योग साधनाओं का मूलभूत आधार गायत्री है।'

महाभारतकार में निर्देशित है—

'परांसिद्धिमवाप्नोति गायत्रीमुत्तमां पठेत्।'

अर्थात् परासिद्धि प्राप्त करने के लिए सर्वश्रेष्ठ गायत्री को ही

जपना चाहिए। गायत्री को सर्वसिद्धि प्रदाता कहा गया है—

‘गायत्र्या सर्वसंद्धिर्द्धिजानां श्रुति संमता।’

अर्थात् वेद में वर्णन की गई समस्त सिद्धियाँ गायत्री उपासना से मिलती हैं। वैदिक साहित्य में गायत्री उपासना का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दू धर्म में सभी मतावलम्बी वैष्णव, शैव, शाक्त और सनातन धर्मावलम्बी आदि इस उपासना का ही आश्रय ग्रहण करते हैं। वेदों का सार उपनिषद और उपनिषदों का सार गायत्री मन्त्र है। इसके द्वारा ही अचेतन मन को जाग्रत करके सिद्धियों की प्राप्ति की जा सकती है। दुर्भाग्य को दूर करने के लिए गायत्री प्रार्थना से बढ़कर सरल और साध्य अन्य कुछ नहीं हो सकता। आज मैटाफिजिक्स, परामनोविज्ञान, अतीन्द्रिय आदि विज्ञानों द्वारा अचेतन मन में रहस्यों के ज्ञान की बात चल रही है, वह गायत्री मन्त्र से सहज ही सिद्ध हो सकती है। संसार की ऐसी कोई भी समस्या नहीं है जो गायत्री महामन्त्र से सिद्ध न हो सकती हो।

यह अद्भुत सत्य है कि मन्त्रों में शक्ति होती है। परन्तु मन्त्रों की क्रमबद्धता, शुद्ध उच्चारण और प्रयोग का ज्ञान परम आवश्यक है। दैनिक जीवन में गायत्री प्रार्थना की सरल विधि लिख रहा हूँ। यह सब प्रभु कृपा और शान्ति-कुन्ज, हरिद्वार के सौजन्य से सुलभ हो सकी है। सर्वप्रथम पाठक किसी योग्य विद्वान से गायत्री मन्त्र का शुद्ध उच्चारण पूछकर उसे कण्ठस्थ कर लें। गायत्री मन्त्र निम्न प्रकार है—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

सृष्टि की रचना से पूर्व अखिल ब्रह्माण्ड से मात्र एक ही अनहद नाद गुंजायमान हो रहा था। वह था ॐ। सृष्टि की रचना के उपरान्त जब ब्रह्मा महाशक्ति गायत्री ने वेदों की रचना की तब शब्द रूप में परमात्मा की आदि शक्ति ॐ को ही स्वीकार किया गया। इसका कारण था कि परमात्मा का स्वयंसिद्ध और स्वयं प्रकट नाम यही आदि शक्ति मन्त्र ॐ

ही था। इसी कारण हमारे ऋषि-मुनियों और आचार्यों ने ॐ को ही समस्त मन्त्रों का आधार माना। इसे ही प्रणव कहा गया। इससे ही सात व्याहृतियों की उत्पत्ति हुई। इन व्याहृतियों से वेद उत्पन्न हुए। भूः भुवः स्वः—यह तीन महा व्याहृतियाँ मानी गयीं। इससे ही महः जनः तपः और सत्य ये चार अन्य व्याहृतियाँ हुईं।

गायत्री मन्त्र का अर्थ लिखने में ग्रन्थ बना दिए जाएँ तो भी कम हैं। फिर भी जो कुछ अर्थ बटोर पाया हूँ, इस प्रकार हैं—

| | |
|------------|--|
| ॐ | सर्वव्यापक रक्षक हमारे, सर्वगुण सम्पन्न हो। |
| भूः | सत्यस्वरूप ओजदाता, प्राणों के भी प्राण हो। |
| भुवः | दुःख विनाशक ज्ञानदाता, तुम कृपानिधान हो। |
| स्वः | सुखस्वरूप स्वर्गदाता, परम-आत्मा महान हो। |
| तत् | अनन्त, अपार, परमब्रह्म, देववर्णित सार हो। |
| सवितुः | सर्व जगत उत्पन्नकर्ता, सर्व-पालनहार हो। |
| वरेण्यम् | वरण करने योग्य भगवन्, आप अपरम्पार हो। |
| भर्गो | सब पापों के भंजनकर्ता, तेजस्वरूप अपार हो। |
| देवस्य | दिव्य स्वरूप ज्ञानदाता, देव गुण सम्पन्न हो। |
| धीमहि | ऐसे ब्रह्मस्वरूप का, मेरे हृदय में ध्यान हो। |
| धियो योनः | वह हमारी बुद्धियों का, हर तरह से हित करे। |
| प्रचोदयात् | और दिन-रात हमें, सन्मार्ग पर प्रेरित करे। |

भावार्थ—हे सर्वव्यापक ज्योति स्वरूप परमात्मन्! प्राणदाता, सत्यस्वरूप, सर्व दुःखहारा, ज्ञानसागर, सबको सुख देने वाले, अनन्त अपार, सृष्टिकर्ता, सबके पालनकर्ता, सब पापों के विनाशक, शुद्ध, तेज स्वरूप, ज्ञानपुञ्ज, आनन्ददाता, दिव्यस्वरूप परमात्मा का हम ध्यान करते हैं। हे ब्रह्मस्वरूप हमारी बुद्धि शुद्ध हो, जिससे हम प्रतिपल सन्मार्ग पर प्रेरित होते रहें।

गायत्री महात्म्य

जो कोई गायत्री मन्त्र को श्रद्धा और भक्तिपूर्वक जपता है, उसे साक्षात् भगवान के दर्शन होते हैं, मोक्ष मिलता है, कल्याण होता है, उसके सब पापों का नाश होता है एवं वांछित मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। पुत्र इच्छुक को पुत्र, धन की कामना वाले को धन, रोगी को आरोग्यता, विजय चाहने वाले को जय, भक्ति की कामना वाले को भक्ति, प्रेम चाहने वाले को प्रेम और प्रेम का आश्रय परमात्मा आदि प्राप्त होता है। इस स्थिति को प्राप्त होने के बाद किसी भौतिक वस्तु की कामना ही नहीं रह जाती।

अपने दुर्भाग्य दूर करने वाले प्रयोगों में मैंने गायत्री उपासना को इसीलिए चुना कि व्यक्ति ऐसा सहारा अपनाए जिसके बाद किसी क्षीण सहारे की आवश्यकता ही न रह जाए। पाठक नित्य गायत्री मन्त्र का जप करें। मन्त्र जप का सरल और संक्षिप्त विधान इस प्रकार है।

गायत्री प्रार्थना एवं उपासना के लिए कुछ सनातन नियम जुड़े हुए हैं। उसमें सर्वप्रथम यह है कि शरीर, स्थान को शुद्ध करके पूर्वाभिमुख होकर बैठा जाए। शुद्धता का अर्थ मात्र स्नान और धुले हुए कपड़े बदल लेने से नहीं लेना चाहिए। शुद्धता में चिन्तन, चरित्र और सुव्यवहार का होना भी अनिवार्य है। उपासना के लिए एक स्थान, एक आसन और एक समय का संकल्प भी ले लेना चाहिए।

बैठने के लिए कोई भी सुविधानुसार आसन चुन सकते हैं। परन्तु इस प्रकार बैठें कि मेरुदण्ड बिल्कुल सीधी रहे। गरदन भी सीधी रखें। दृष्टि सम्यक् अर्थात् अधखुली रखें। चित्त को प्रसंग की सीमा से बाहर न भागने दें। नासाग्र पर ध्यान केन्द्रित कर लें। अब एक सीधा-साधा तरीका तो यह है कि एक चित्र गायत्री का रखकर मन्त्र का जप शुद्ध उच्चारण से प्रारम्भ करें। माला से यदि जप कर रहे हैं तो उनकी संख्या १, ३, ५ अथवा ९ आदि कुछ भी हो, विषम ही हो। अर्थात् माला विषम

संख्या पर ही छोड़ें। जप संख्या कितनी रखें यह अपनी श्रद्धा और समयानुसार तय कर लें। परन्तु जितनी जप संख्या एक बार रखें उतने का ही आगे भी संकल्प रखें। यदि आप चित्र के स्थान पर गायत्री यन्त्र रख लें तो अधिक उपयुक्त होगा। यदि यन्त्र जुटाने में असुविधा है तो हमारे केन्द्र से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। निश्चित जप संख्या पूरी करने के पश्चात् हाथ की दोनों हथेलियों को आपस में घिसकर गर्म करके अपने चेहरे पर फिरा लिया करें। इससे ज्ञान तन्तु सतेज और सक्रिय हो जाते हैं।

यदि आपके पास उपयुक्त समय और लगन है तो गायत्री उपायना प्रज्ञा योग के रूप में किया करें। इसके पाँच अंग हैं—

१. आत्मशोधन।
२. देव पूजन।
३. जप।
४. ध्यान।
५. विसर्जन।

आत्मशोधन क्रिया में निम्नलिखित प्रकार से अनुसरण करें—

१. दाहिने हाथ की हथेली में गंगाजल रखकर बायें हाथ की हथेली से उसे ढक कर मन-ही-मन गायत्री मन्त्र जपें औं मन्त्र पढ़ते-पढ़ते ही समस्त शरीर पर वह अभिमन्त्रित जल छिड़क लें।
२. पंचपात्र से चम्मच में जल लेकर तीन बार आचमन करें। मन में ऐसी भावना रखें कि यह आचमन मन, कर्म और वचन तीनों की पवित्रता के लिए है।
३. सिर के मध्य भाग में शिखा मूल को जल से गीला कर लें। इस क्रिया को शिखा वन्दन कहते हैं।
४. शोधन क्रिया में प्राणायाम मुख्य अंग है। सिद्धि के लिए

इसका खूब अभ्यास करें। बायीं हथेली से पहले दाएँ हाथ की कोहनी पकड़ लें, अब दाएँ हाथ के अंगूठे से नाक का दायाँ नथुना और अनामिका ऊँगली से बायाँ नथुना दबाया जाता है और तर्जनी तथा मध्यमा ऊँगलियों से भृकुटि। यह प्राणायाम की मुद्रा है। बायें नथुने से पूरी साँस खींचने को पूरक और अन्दर साँस रोकने को कुम्भक कहते हैं। जब साँस बाहर निकालते हैं तो यह रेचक कहलाता है। इस प्रकार पूरक, कुम्भक और रेचक साँस की इन तीन क्रियाओं से एक प्राणायाम हुआ। नित्य कम-से-कम तीन बार प्राणायाम करना चाहिए। इसकी संख्या बढ़ाना आपकी लगन पर निर्भर है। पूरक क्रिया के समय यह भावना रहनी चाहिए कि विश्वव्यापी महाप्राण के दिव्य अंश का प्रवेश शरीर में हो रहा है। कुम्भक के समय ध्यान करिए कि अन्तःकरण प्राणतत्त्व को सोख रहा है।

जब रेचक क्रिया हो तब ऐसा ध्यान करिए जैसे शरीर के अन्दर से कलुषता बाहर निकाली जा रही है। जितनी देर साँस अन्दर रोककर कुम्भक करें, उतनी ही देर साँस को बाहर रोक दें, यह क्रिया वाह्य कुम्भक कहलाती है। इससे शरीर की जो कलुषता बाहर फेंकी गई थी उसे पुनः पूरक द्वारा अन्दर न आने का थोड़ा समय मिल जाता है। प्राणायाम की क्रिया सब सिद्धियों का मूल है। किसी भी प्रकार की पूजा-अर्चना से पूर्ण प्राणायाम लगाकर बैठें। यह ध्यान केन्द्रित करने के लिए सबसे उत्तम प्रक्रिया है। जिन विद्यार्थियों का ध्यान पढ़ने में नहीं लगता, उनमें एकाग्रता की कमी होती है वह प्राणायाम लगाकर फिर पढ़ना प्रारम्भ करें, निश्चय ही उनकी एकाग्रता बढ़ने लगेगी। प्राणायाम लगाकर गायत्री मन्त्र की साधना करने से व्यक्ति के अंग-प्रत्यंग में एक दैविक शक्ति का

चमत्कारिक प्रादुर्भाव होने लगता है। व्यक्ति शक्तिवान, तेजस्वी और ओजस्वी बनने लगता है। धीरे-धीरे उसका मन निर्मल, पवित्र और दिव्य शक्ति से ओत-प्रोत होकर बुराइयों से स्वतः ही पलायन करने लगता है। उसके सारे दुर्भाग्य दूर होकर सौभाग्य का द्वार खोल देते हैं। शरीर के कैसे भी कफ, वात और पित्त प्रदत्त रोगों में गायत्री की उपासना रामबाण सिद्ध होती है। ऐसे में रोगी के पास गंगाजल में तुलसी दल मिलाकर पास रख देना चाहिए। मन्त्र जप समाप्ति के बाद इस अभिमन्त्रित जल से आचमन करके सारे घर में छिड़क देना चाहिए।

अभिमन्त्रित जल को ग्रहण करना न्यास कहलाता है। इसका प्रयोग इस प्रकार करना चाहिए। बायीं हथेली पर अभिमन्त्रित जल रखकर दाहिने हाथ की पाँचों ऊँगलियों को उसमें डुबाकर क्रमशः मुँह, नाक के छिद्रों, कान, भुजाओं और जंघाओं का स्पर्श करवाना चाहिए। न्यास का मूल अर्थ है अपनी कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों को पवित्रता के साथ गठबन्धन करना। जो जल बचे उसे अपने सिर और समस्त शरीर पर छिड़कना चाहिए। इससे मन, बुद्धि और चित्त से समस्त दोषों का पलायन होता है।

आत्मशोधन के बाद प्रज्ञायोग का दूसरा अंग अर्थात् देव पूजन करना चाहिए। पूजा स्थल में रखा हुआ गायत्री चित्र अथवा यन्त्र पंच उपकरणों पुष्प, दीपक, चन्दन, नैवेद्य और अक्षत से अलंकृत करना चाहिए। गायत्री मन्त्र पठन का क्रम चलता रहे।

देव पूजन के बाद जो भी माला की संख्या आपने जपनी निर्धारित की है, वह पूरी करनी चाहिए। ऐसा विद्यमान ग्रन्थों में मिलता है कि हमारे दैहिक, भौतिक और आत्मिक इन शरीरों की शुद्धि के लिए एक

प्रति के हिसाब से एक अर्थात् कम-से-कम तीन मालायें अवश्य ही मन्त्र जप पूरे कर लेना चाहिए। गायत्री मन्त्र जप के लिए चन्दन, तुलसी अथवा रुद्राक्ष में से कोई भी एक माला चुन सकते हैं।

प्रज्ञायोग का अगला अंग है ध्यान। बिना ध्यान के जप अधूरा है। जप के साथ ध्यान का समावेश होना चाहिए। उदय होते हुए सूर्य की लालिमा का ध्यान करते हुए अनुभव करें कि दिव्य किरणें शरीर में पैठ रही हैं। इससे हमारे स्थूल शरीर अर्थात् काया में बल, सूक्ष्म शरीर अर्थात् मस्तिष्क में ज्ञान और कारण शरीर अर्थात् हृदय में दिव्य भावों की बरसात हो रही है। हम भोग रहे हैं। रोमांच हो रहा है। हम धीरे-धीरे मन्त्र में इतना रम रहे हैं कि भौतिक बातों में हमारा मन जा ही नहीं रहा है। वाणी और मस्तिष्क से यदि यह क्रिया प्रारम्भ हो जाए तब समझिये आप सब संकटों से दूर हो गये हैं।

जप संख्या पूर्ण होने पर हाथों की हथेली आपस में रगड़ कर चेहरे पर अवश्य फिरा लें।

अन्तिम अंग आता है देवता को विसर्जित करने का। जप संख्या पूर्ण होने के बाद श्रद्धा सुमन से चित्र अथवा यन्त्र को देवस्वरूप और आत्मकारक मानते हुए प्रणाम करके विदाई देनी चाहिए। उठकर अन्त में सूर्य को अर्घ्य दे दें। अर्घ्य स्थान पर देव प्रयोजन के निमित्त खड़े-खड़े परिक्रमा कर लें।

गायत्री उपासना का यह उल्लेख अंशमात्र भी नहीं है। परन्तु इतना भी यदि साधक निष्ठापूर्वक कर लें तो उनको समस्त दुःखों से छुटकारा मिल जाएगा। इस सरल उपक्रम को जीवन का अंग बनाने में कोई कठिनाई भी पाठक को नहीं आनी चाहिए।

विषय भोग और इन्द्रियों की अनुकूलता अन्ततः
दुर्भाग्य का कारण बनती है।

— रामकृष्ण परमहंस

श्री राम, जय राम, जय जय राम— एक तारक मन्त्र

हमारा जीवन सौभाग्य और दुर्भाग्य की अनुभूतियों से भरा हुआ है। कभी हमें सौभाग्य का अनुभव होता है और कभी हम दुर्भाग्य की दलदल में गहरे धँसते चले जाते हैं। सौभाग्य हमें निश्चित रूप से अच्छा लगता है परन्तु दुर्भाग्य से दुःखी होना किसी को भी अच्छा नहीं लगता। सब सौभाग्य की ही कामना रखते हैं। दुर्भाग्य दूर करने को व्यक्ति यथाशक्ति पुरुषार्थ करता है। कर्म करने के क्रम-उपक्रम प्रत्येक व्यक्ति के भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। कुछ लोग दुर्भाग्य दूर करने के लिए प्रभु का सहारा लेते हैं—उसकी पूजना अर्चना कर उसकी कृपा पाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। कुछ लोग मादक द्रव्यों का प्रयोग करने लगते हैं। कुछ लोग अपने क्रिया-कलापों से मुक्ति पा जाते हैं और अन्य दुःखमय जीवन व्यतीत करते हुए मानसिक संत्रास के शिकार हो जाते हैं।

यदि देखा जाए तो यह सब मूलतः इस बात पर अधिक निर्भर करता है कि हम इसे अनुभव करते हैं अथवा नहीं।

दुर्भाग्य की मात्रा और दुर्भाग्य होने की समयावधि इस बात पर निर्भर करती है कि दुःख का अनुभव हम कितनी गहनता अथवा गहराई

से करते हैं। दुर्भाग्य एक व्यक्ति के लिए पहाड़ के समान होता है परन्तु दूसरे के लिए वही एक साधारण सी बात भी हो सकती है। दुःख अथवा दुर्भाग्य असल में सौभाग्य के कम हो जाने का नाम है। इसी प्रकार दुःख को कम हो जाना सुख अथवा सौभाग्य का प्रतीक है। दोनों का जीवन में अनुभव आवश्यक रूप से होता रहता है। यह नाव के दो चप्पुओं के समान है। यदि एक का भी सन्तुलन बिगड़ गया तो समझिये जीवन की नैया डगमगा जाएगी।

अपनी जीवन की नैया को संतुलन में रखने के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाय तारक मन्त्र है। 'श्री राम, जय राम, जय जय राम' कुल सात शब्दों वाले इस साधारण से दिखने वाले तारक मन्त्र में जो शक्ति छुपी हुई है वह चर्चा का विषय नहीं है, न ही वह पढ़ाने से आएगी। यह तो उस मीठे फल के समान है जिसका स्वाद चखकर ही उसके गुण का अनुभव किया जा सकता है। हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य आज यही है कि हम राम नाम जप का सहारा नहीं ले रहे। हमने जितना ही अधिक राम नाम को खोया है, हमारे जीवन में उतनी ही विषमता बढ़ी है, उतना अधिक ही हमें संत्रास मिला है। एक सार्थक नाम के रूप में हमारे ऋषियों-मुनियों ने राम नाम को पहचाना है। उन्होंने इस पूजनीय नाम की परख की और नामों के आगे लगाने का चलन प्रारम्भ किया। प्रत्येक हिन्दू परिवार में देखा गया है कि बच्चे के जनम में राम के नाम का सोहर होता है। वैवाहिक आदि सुअवसरों पर राम के गीत गाये जाते हैं। यहाँ तक कि जीव के अन्तिम समय में भी राम नाम का ही घोष किया जाता है। राम सबमें हैं। राम में शिव और शिव में राम विद्यमान हैं। राम जी को शिव का महामन्त्र माना गया है। राम सर्वमुक्त हैं। राम सबकी चेतना का सजीव नाम है। कुख्यात डाकू रत्नाकर राम नाम से वशीभूत होकर प्रभावित हुआ और अन्ततः महर्षि बाल्मीकि नाम से विख्यात हुआ। राम नाम की चैतन्य धारा से समय की प्रत्येक आवश्यकताएँ स्वयं ही पूरी हो

जाती हैं। यह नाम सर्व समर्थ है।

जो चेतन को जड़ करई, जड़ई करई चैतन्य।

अस समर्थ रघुनायकहिं, भजत जीवते धन्य ॥

हमारे देश के प्रत्येक रामभक्त के लिए राम उसके हृदय में बास कर सुख-सौभाग्य और सांत्वना देने वाले हैं। तुलसीदास जी ने रामचरित् मानस में लिख दिया है कि प्रभु के जितने भी नाम प्रचलित हैं उन सब में सर्वाधिक श्रीफल देने वाला नाम राम का ही है। इससे एक बधिक, पक्षी, पशु आदि तक तर जाते हैं।

भद्राचलम् के भक्त रामदास, महाराष्ट्र के समर्थ गुरु रामदास, कान्हगढ़ के सन्त रामदास हनुमान जी की परम्परा पर चले। यह सब सन्तजन श्रीराम को सदा अपने हृदय में रखकर उसी की प्रेरणा से महान् और सौभाग्यशाली बने। दक्षिण भारत के सन्त त्यागराजन् ने निरन्तर अनेक वर्षों तक राम नाम का जप किया। अन्ततः उन्हें अपने हृदय में अन्दर तथा बाहर राम के साक्षात् दर्शन हुए। श्री हनुमान, डाकू रत्नाकर, बालक ध्रुव, अजामिल, श्री लक्ष्मण, श्री रामकृष्ण परमहंस आदि की रामभक्ति सर्वविदित है। जिस प्रकार भक्त प्रह्लाद ने राम की भक्ति करके पूर्ण आत्म-समर्पण कर दिया था, अपना दुर्भाग्य दूर करने के लिए हम भी उसी प्रकार से श्री राम की भक्ति करें। जब हमारी भक्ति विश्वास की उस चरमसीमा तक पहुँच जाएगी कि हमें लगने लगे कि श्री राम ने हमारे हृदय में वास करते हुए हमें प्रेरणा देना प्रारम्भ कर दिया है, तब हम उसमें पूर्णतया विलीन हो जाएँगे, राममय हो जाएँगे और तब दुर्भाग्य हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएगा।

आज राम की पूजा का सर्वश्रेष्ठ रूप यही है कि हम उनका ध्यान कर अपने हृदय में अन्तर्यामी को स्थान दें ताकि वह हमें श्रेष्ठ व महान् आदर्शों के कार्य करने की प्रेरणा दें। हमारे हृदय पर उनका इतना प्रभुत्व हो जाए कि दूषित या अपवित्र विचार हमसे कोसों दूर रहें। सन्त तुलसी

जाती हैं। यह नाम सर्व समर्थ है।

जो चेतन को जड़ करई, जड़ई करई चैतन्य।

अस समर्थ रघुनायकहिं, भजत जीवते धन्य ॥

हमारे देश के प्रत्येक रामभक्त के लिए राम उसके हृदय में बास कर सुख-सौभाग्य और सांत्वना देने वाले हैं। तुलसीदास जी ने रामचरित् मानस में लिख दिया है कि प्रभु के जितने भी नाम प्रचलित हैं उन सब में सर्वाधिक श्रीफल देने वाला नाम राम का ही है। इससे एक बधिक, पक्षी, पशु आदि तक तर जाते हैं।

भद्राचलम् के भक्त रामदास, महाराष्ट्र के समर्थ गुरु रामदास, कान्हगढ़ के सन्त रामदास हनुमान जी की परम्परा पर चले। यह सब सन्तजन श्रीराम को सदा अपने हृदय में रखकर उसी की प्रेरणा से महान् और सौभाग्यशाली बने। दक्षिण भारत के सन्त त्यागराजन् ने निरन्तर अनेक वर्षों तक राम नाम का जप किया। अन्ततः उन्हें अपने हृदय में अन्दर तथा बाहर राम के साक्षात् दर्शन हुए। श्री हनुमान, डाकू रत्नाकर, बालक ध्रुव, अजामिल, श्री लक्ष्मण, श्री रामकृष्ण परमहंस आदि की रामभक्ति सर्वविदित है। जिस प्रकार भक्त प्रह्लाद ने राम की भक्ति करके पूर्ण आत्म-समर्पण कर दिया था, अपना दुर्भाग्य दूर करने के लिए हम भी उसी प्रकार से श्री राम की भक्ति करें। जब हमारी भक्ति विश्वास की उस चरमसीमा तक पहुँच जाएगी कि हमें लगने लगे कि श्री राम ने हमारे हृदय में वास करते हुए हमें प्रेरणा देना प्रारम्भ कर दिया है, तब हम उसमें पूर्णतया विलीन हो जाएँगे, राममय हो जाएँगे और तब दुर्भाग्य हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएगा।

आज राम की पूजा का सर्वश्रेष्ठ रूप यही है कि हम उनका ध्यान कर अपने हृदय में अन्तर्यामी को स्थान दें ताकि वह हमें श्रेष्ठ व महान् आदर्शों के कार्य करने की प्रेरणा दें। हमारे हृदय पर उनका इतना प्रभुत्व हो जाए कि दूषित या अपवित्र विचार हमसे कोसों दूर रहें। सन्त तुलसी

दास जी ने भी लिखा है कि जहाँ काम तथा उसकी सन्ततियाँ होंगी वहाँ राम रह ही नहीं सकते।

श्री राम का वर्णन यहाँ इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि अन्य देवी-देवताओं की तुलना में वह सबको सरलता से प्राप्त हो जाते हैं। जो कुछ सीमितताओं में रह जाते हैं, सर्वसुलभ नहीं होते वह सब माननीय तो हो सकते हैं, परन्तु वन्दनीय नहीं। प्रभु राम के चरण वन्दनीय हैं। वह सबको एक ही भाव से अपना लेते हैं। राम नाम में चित्त को प्रसन्न करने और दुर्भाग्य दूर करने की अपारशक्ति निहित है। अन्य सामान्य कार्यों की भाँति उन्हें प्राप्त करना उतना ही सरल है। अधिकांश लोग धन सम्बन्धी अथवा अन्य भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए जीवनपर्यन्त प्रयत्नशील रहते हैं। प्रभु को प्राप्त करने का वह लेशमात्र भी यत्न नहीं करते। ऐसे लोगों के लिए विशेष रूप से मैं राम के नाम प्रताप से सम्पन्न तारक मन्त्र की महिमा लिख रहा हूँ। वह सच्चे मन से राम की आराधना कर दुर्भाग्य को दूर भगाएँ।

कलियुग में जन्म-जन्मान्तर के दुष्कर्मों से बचाने वाला और मोक्षकारक यदि कोई मन्त्र है तो वह है विष्णु के सहस्रों नाम के प्रताप वाला तारक मन्त्र—‘श्री राम, जय राम, जय जय राम।’ श्री राम नाम जप योग सबसे सरल, सुरक्षित तथा निश्चितरूप से लक्ष्य की प्राप्ति करवाने वाला है। मन्त्र जप के लिए आयु, स्थान, स्थिति, जात-पात आदि किसी भी बाह्य आडम्बर का बन्धन नहीं है। चौबीस घण्टों में किसी भी समय, किसी भी स्थिति अथवा स्थान पर इसको जपा जा सकता है। मुझसे अनेक लोग प्रश्न करते हैं कि तारक मन्त्र जपने का सबसे अच्छा समय कौन सा है, इसके जाप के लिए क्या नहा-धोकर पवित्र होकर बैठना अनिवार्य है, दीपक, अगरबत्ती कैसे जलाएँ, मुँह किस दिशा की ओर करके बैठें, इसका जाप क्या घर के बाहर भी किया जा सकता है? ऐसे अनेक प्रश्न जिज्ञासुओं को मैं स्पष्ट कर रहा हूँ कि तारक मन्त्र के लिए

स्थान, समय, दिशा, पवित्रता अथवा अपवित्रता, दीप, आदि किसी का भी बन्धन नहीं है। सहज रूप में मन एकाग्र करके किसी भी समय नाम जप कर सकते हैं।

व्यक्ति की मनोवृत्ति बदलने, सौम्य व्यवहार तथा मानसिक शान्ति के लिए तारक मन्त्र बहुत ही लाभकारी है। अनेक सन्तों के अतिरिक्त, जैसा कि ऊपर लिख चुका हूँ, महात्मा गांधी ने भी तारक मन्त्र का सहारा लेकर इतनी बड़ी विजय प्राप्त की थी।

तारक मन्त्र 'श्री' से प्रारम्भ होता है। 'श्री' को सीता अथवा शक्ति का प्रतीक माना गया है। राम शब्द 'रा' रकार और 'म' मकार से मिलकर बना है। 'रा' अग्नि स्वरूप है, यह हमारे दुष्कर्मों का दाह करता है। 'म' जल तत्व द्योतक है। जल आत्मा की जीवात्मा पर विजय का कारक है।

इस प्रकार पूरे तारक मन्त्र—श्री राम, जय राम, जय जय राम का सार निकलता है—शक्ति से परमात्मा पर विजय। ॐ बीज मन्त्र को हिन्दू धर्म में परमात्मा का प्रतीक माना गया है। इसलिए मन्त्रों के पहले ॐ का जाप किया जाता है। ॐ को जोड़ देने से तारक मन्त्र 'ॐ श्री राम, जय राम, जय जय राम' रूप में जपा जाता है।

योग शास्त्र में देखा जाए तो 'रा' वर्ण को सौर ऊर्जा का कारक माना गया है। यह हमारी रीढ़ रज्जू के बायीं ओर स्थित पिंगला नाड़ी में स्थित है। यह यहाँ से शरीर में पौरुष ऊर्जा का संचार करता है। 'म' वर्ण को चन्द्र ऊर्जा कारक अर्थात् स्त्रीलिंग माना गया है। यह रीढ़ रज्जू के बायीं ओर स्थित इडा नाड़ी में प्रवाहित होता है।

इसीलिए कहा गया है कि श्वास और निश्वास और निरन्तर रकार 'र' और मकार 'म' का उच्चारण करते रहने से दोनों नाड़ियों में प्रवाहित ऊर्जा से संसार में सामंजस्य बना रहता है।

आध्यात्मवाद में यह माना गया है कि जब व्यक्ति 'रा' शब्द का

उच्चारण करता है तो इसके साथ-साथ उसके आन्तरिक पाप बाहर फेंक दिए जाते हैं। इस समय अन्तःकरण पाप रहित हो जाता है। अभ्यास में भी 'रा' को इस प्रकार उच्चारण करना है जिससे कि पूरे का पूरा श्वास बाहर निकल जाए। इस समय आपको तान्देन से रिक्तता अनुभव होने लगेगी। इस स्थिति में पेट बिल्कुल चिपक जाता है।

एक बार फिर स्पष्ट कर लीजिए कि 'रा' का केवल उच्चारण मात्र ही नहीं करना है। इसे लम्बा खींचना है रा ऽ...ऽ...ऽ...। अब 'म' का उच्चारण करें। 'म' शब्द बोलते ही दोनों होंठ स्वतः एक ताले की मानिन्द बन्द हो जाते हैं। और इस प्रकार बाह्य विकार पुनः अन्तःकरण में प्रवेश करने पर बन्द होंठ रोक लगा देते हैं। राम-राम अथवा तारक मन्त्र रटते रहने से मन तथा मस्तिष्क को पवित्रता प्राप्त होती है और व्यक्ति अपने पवित्र मन में परब्रह्म परमेश्वर के अस्तित्व को अनुभव करने लगता है। यह कितनी सरल विधि है शान्ति पाने को, फिर भी न जाने क्यों व्यक्ति इधर-उधर भटकता फिरता है।

व्यक्ति के शरीर में ७२,००० नाड़ी मानी गयी है। इनमें से १०८ नाड़ियों का अस्तित्व हृदय में माना गया है इसलिए मन्त्र जप संख्या १०८ मानी गयी है अर्थात् एक माला। १०८ जप संख्या के अनेक महत्व हैं, यहाँ केवल इतना समझ लीजिए कि कम से कम इतना जाप करना महत्वपूर्ण है।

सुर, ताल तथा प्राणायाम से जप को और भी अधिक शक्तिशाली बनाया जाता है। मन्त्र जाप में तीन पादों की प्रधानता है। सबसे पहले आता है मौखिक जाप। जैसे ही हमारा मन मन्त्र के सार को समझने लगता है, हम जाप की द्वितीय स्थिति अर्थात् उपांशु में पहुँच जाते हैं। इस स्थिति में मन्त्र की फुसफुसाहट भी नहीं सुनी जा सकती। तृतीय स्थिति में मन्त्र जप केवल मानसिक ही रह जाता है। यहाँ मन्त्रोच्चारण केवल मानसिक रूप से चलता रहता है। इसमें दृष्टि भी खुली रहती है

और मानसिक संलग्नता के साथ-साथ व्यक्ति अपने दैनिक कर्मों में भी लीन रहता है। यह अवस्था तारक मन्त्र के एक करोड़ मन्त्र जाप कर लेने मात्र से आ जाती है।

एक लाख तारक मन्त्र जप लेने से व्यक्ति में अनोखी सुखानुभूति होने लगती हैं। यहाँ से व्यक्ति के लिए दुर्भाग्य नाम की किसी भी वस्तु का अस्तित्व ही नहीं रह जाता। यदि इस संख्या में मन्त्र जप के बाद किसी बीमार व्यक्ति की भृकुटि में माला के सुमेरु लुआ दिया जाए तो उसे आशातीत लाभ होता है। परन्तु इस प्रकार के प्रयोग के बाद माला को गंगाजल से शुद्ध करके फिर प्रयोग में लाना चाहिए।

यहाँ माला का भी थोड़ा सा स्पष्टीकरण कर दूँ तो प्रिय पाठकों को सरलता हो जाएगी। मन्त्र जप माला में १०८ दाने होते हैं। माला, तुलसी, वैजयन्ती, रुद्राक्ष, कमलगट्टे, किसी भी रत्न, अकीक आदि की हो सकती है। अलग-अलग कार्य सिद्धियों के अनुसार ही इन मालाओं का चयन होता है। तारक मन्त्र के लिए सर्वश्रेष्ठ माला तुलसी के दानों की मानी गयी है। माला के १०८ मनके हमारे हृदय में स्थित १०८ नाड़ियों के प्रतीक स्वरूप हैं। माला का १०९वाँ दाना सुमेरु कहलाता है। व्यक्ति को एक बार में १०८ जाप करने चाहिए।

इसके बाद सुमेरु से माला पलटकर पुनः जाप आरम्भ करना चाहिए। किसी भी स्थिति में माला का सुमेरु लौघना नहीं चाहिए। माला को अंगूठे और अनामिका से दबाकर रखना चाहिए और मध्यमा ऊँगली से एक मन्त्र जप कर एक दाना हथेली के अन्दर की ओर खींच लेना चाहिए। मन्त्र जप में तर्जनी अंगली से माला को छूना वर्जित माना गया है। माला के दाने कभी-कभी ५४ भी होते हैं। ऐसे में माला फेरकर सुमेरु से पुनः लौटकर एक बार फिर एक माला अर्थात् १०८ जप पूरे कर लेने चाहिए।

इस प्रकार दो बार जपने से १०८ जप पूरे कर लेना चाहिए। जिन्हें

अधिक लगन हो वह १००८ बार एक बैठक में नाम जप करें। मानसिक रूप से पवित्र होने के बाद किसी भी सरल मुद्रा में बैठे जिससे कि वक्ष, गर्दन और सिर एक सीधी रेखा में रहे और ऊर्जा का प्रवाह रीढ़ रज्जू में एक सीधी रेखा में रहे। मन्त्र जप पूरे करने के बाद अन्त में माला का सुमेरु माथे से छूआकर माला को किसी पवित्र स्थान में रख दें।

मन्त्र जप के लिए करमाला का भी प्रयोग किया जाता है। करमाला से मन्त्र जप की विधि यहाँ लिख रहा हूँ।

जिन लोगों के पास किसी भी प्रकार की माला नहीं है वह इस प्रकार जप कर सकते हैं। दाएँ हाथ की अनामिका अंगली के प्रथम पोर से नीचे से ऊपर की ओर जाते हुए करमाला की गिनती का विधान है। प्रथम पोर से एक तथा उसकी तीसरी पोर से तीन एक गिनती हो जाएगी। चौथी संख्या मध्यमा के निचले पोर से प्रारम्भ होगी। मध्यमा का ऊपरी पोर ६ की गिनती दर्शाएगा। तर्जनी में इसी प्रकार ऊपरी पोर तक नौ की गिनती पूरी होगी। अब दसवीं गिनती के लिए अंगूठा पुनः अनामिका अंगली के पहले पोर पर आएगा और क्रमशः ग्यारह, बारह जपते हुए इसी अंगली के अन्तिम अर्थात् तीसरे पारे पर पहुँच जाएगा।

इस एक चक्र में बारह तक गिनती पूरी हो जाएगी। एक चक्र के बाद बाएँ हाथ का अंगूठा इसी हाथ की अनामिका अंगली के प्रथम पोर पर रख लें। अंगूठा यहीं रखे रहें। दूसरे चक्र के लिए दाएँ हाथ में क्रमशः अनामिका के प्रथम पोर से चलकर तर्जनी के अन्तिम पोर तक जाकर पुनः अनामिका अंगली के अन्तिम पोर तक आ जाने से बाहर संख्या एक बार फिर पूरी हो जाएगी। इसके साथ ही बाएँ हाथ का अंगूठा अब इस हाथ की ही अनामिका अंगली के द्वितीय पोर पर रख लें तो आपके चौबीस जप पूरे हो जायेंगे।

इसी प्रकार दाएँ हाथ से १२-१२ के ९ चक्र पूरे कर लें। गिनती के लिए बायें हाथ की तर्जनी अंगली के अन्तिम पोर तक ९ की संख्या

“विपरीत प्रारब्ध का होना दुर्भाग्य है।”

स्वर योग और दुर्भाग्य

ज्ञान का शिरोमणि स्वर योग नई पीढ़ी के लिए सर्वथा अच्छी वस्तु है। कुछ एक योगाभ्यासियों को छोड़कर अन्य प्रत्येक के लिए इसका ज्ञान और अभ्यास करवाना आज आवश्यक है। क्योंकि इससे अधिक सहज, सरल, कल्याणकारी एवं उपयोगी ज्ञान अन्य कोई नहीं है।

इस विज्ञान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह थोड़े से अभ्यासमात्र से ही सिद्ध किया जा सकता है। दूसरे योग के प्रारम्भिक चरणों में बिना किसी गुरु आदि के झंझटों से भी कार्य चलाया जा सकता है। इसमें विपरीत प्रभाव की लेशमात्र भी सम्भावना नहीं है। इस अध्याय में इस विषय पर सार संक्षेप सर्वसाधारण के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

स्वर ज्ञान का मूल मन्त्र है सहज विश्वासी, सरल हृदय और एकाग्रचित्तता का धनी होना। यदि व्यक्ति यह तीनों नहीं अपना सकता तो उसके लिए यह विज्ञान निरर्थक है। वह यह अध्याय पढ़कर व्यर्थ समय न गवाएँ। चंचल चित्त और प्रायः विक्षुब्ध रहने वाले व्यक्ति, किसी-न-किसी स्वार्थ से प्रेरित होकर अथवा हिंसा, प्रतिहिंसा और भय से दूसरे के अनहित का सोचकर इस ज्ञान का दुरुपयोग करने वाले व्यक्ति भी स्वर योग ज्ञान में सिद्धहस्त नहीं हो सकते।

प्रत्येक अभ्यासी को शान्त, सदाचारी, शुद्ध, सात्विक, कृतज्ञ और दृढ़संकल्प होना चाहिए। अन्य विद्याओं के विपरीत स्वर योग में यह

अनोखी विचित्रता और विलक्षण गुण निहित है कि उपरोक्त गुण सम्पन्न व्यक्ति के निष्ठापूर्वक अभ्यास प्रारम्भ कर देने से उनमें स्वतः आवश्यक गुणों का प्रादुर्भाव होने लगता है। स्वर साधक के लिए अन्य साधनाएँ जैसे तत्त्व साधना, प्राण साधना, त्राटक, छाया साधना, ध्यान योग आदि स्वयं ही सहज प्रतीत होने लगती हैं। स्वर साधक आत्मिक संकेत ग्रहण करने लगते हैं और वह ईश्वर प्रदत्त शक्ति का सदुपयोग करने में लीन हो जाते हैं।

दैनिक जीवन में स्वर योग को प्रायोगिक रूप में प्रयोग करते रहने से व्यक्ति के समस्त दुर्भाग्य दूर होने लगते हैं अर्थात् वह धीरे-धीरे समस्त परेशानियों से मुक्त हो जाता है। वह रोगों का शमन कर पूर्णरूप से स्वास्थ्य लाभ कर सकता है। दुर्घटनाओं से उसकी रक्षा हो सकती है। वह मनवाँछित सिद्धि प्राप्त कर किसी का भी सम्मोहन कर अपने अनुरूप उससे कार्य करवा ले। पति-पत्नी स्वर साध कर समागम करें तो मनवाँछित पुत्र अथवा पुत्री प्राप्त कर सकते हैं।

प्रारम्भिक और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे अनेक छात्र-छात्राओं को मैंने स्वर साधना करवाकर चमत्कारिक रूप से अधिक सफल होते हुए देखा है। उनकी स्मृति में विलक्षण परिवर्तन आया है। ऐसे ही जीवन के किसी भी महत्वपूर्ण कार्य पर प्रस्थान करने से पूर्व स्वर ज्ञान के अनुकूल अनुसरण करने पर अनेक आशातीत फल प्राप्त होते देखे गये हैं।

कहा गया है कि स्वर योग का ज्ञानी ही परम योगी है। मृत्युलोक में ऐसा व्यक्ति प्रत्येक स्थान पर पूजनीय है। दुर्भाग्य उससे कोसों दूर भागता है। वह सुख-शान्ति का अनुभव करते हुए परम आनन्द को प्राप्त होता है और यहीं पर सुख के लिए दर-दर भटकने वाली उसकी जिज्ञासा का अन्त हो जाता है, वह यदि कहें कि पूर्णता को प्राप्त होने की अवस्था तक पहुँच जाता है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अनेक वर्षों पूर्व का एक प्रसंग अकस्मात् मस्तिष्क पटल पर घूम

रूप में पाठकों के लाभार्थ लिख रहा हूँ।

प्रत्येक व्यक्ति जीवित अवस्था में दिन और रात निरन्तर साँस लेता रहता है। साँस लेने और छोड़ने के मध्य एक स्वाभाविक अन्तर बना रहता है। श्वसन क्रिया में हमें लगता है कि नासिका के दोनों छिद्रों से समान रूप से क्रिया हो रही है, परन्तु ऐसा है नहीं।

यदि थोड़े से अभ्यास के बाद नासिका छिद्रों पर ध्यान दें तो हमें पता चलने लगेगा कि श्वसन क्रिया दोनों छिद्रों से बराबर न होकर अदल-बदल कर होती रहती है। साँस के बहाव की स्थिति कभी-कभी दोनों छिद्रों से समान भी हो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वरोँ का प्रभाव नासिक छिद्रों से बदलता रहता है। यह पूर्णतया स्वाभाविक प्रक्रिया है। यदि अभ्यास किया जाए तो सरलता से स्वरोँ के बदलने को साधा जा सकता है अर्थात् हम अपनी इच्छानुसार स्वर चला सकते हैं।

स्वर के अनेक नाम प्रचलित हैं। कोई इसे 'प्राण' कहता है तो कोई 'जीवनधारा'। योग शास्त्र श्वास-निश्वास को 'प्राणवाहिनी नाड़ी' कहता है। कई विद्वान इसे 'प्रकाश सिद्धान्त' कहते हैं। स्वर से स्थूल शरीर में प्राणशक्ति का संचार होता है इसलिए इसे प्राणशक्ति ही कहना अधिक उचित है। प्राणायाम द्वारा ही प्राणों की साधना होती है और प्राण साधना से टेलीपैथी आदि-आदि सिद्ध की जाती है।

प्राणशक्ति विषय में जितना भी प्रवेश करेंगे विषय जटिल और गम्भीर होता जाएगा। विषय की एक अवस्था तक पहुँचने के बाद योग्य गुरु की कृपा और सानिध्य अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आगे चलकर सहारे के बिना बढ़ना असम्भव है और गुरु से अच्छा सहारा कोई दे नहीं सकता। इस अध्याय में जितना मैं लिख रहा हूँ उतना अध्ययन 'स्वान्तः सुखाय' कोई भी सरलता और सहजता से स्वयं ही कर सकता है।

जो वायु हमारी नाक के दाहिने छिद्र में प्रवाहित होती है उसे 'दाहिना स्वर', 'सूर्य स्वर' अथवा 'पिंगला' नामों से जाना जाता है। इसी

प्रकार से बायीं नासिका छिद्र से प्रवाहित होने वाले स्वर को 'बायाँ स्वर', 'चन्द्र स्वर' अथवा 'इड़ा' नामों से सम्बोधित करते हैं। इन्हें क्रमशः 'सूर्य नाड़ी' और 'चन्द्र नाड़ी' भी कहा जाता है। स्पष्ट शब्दों में इसे इस तरह समझ लीजिए कि यदि वायु का प्रवाह दायीं नासिक छिद्र से हो रहा है अथवा बाएँ से, तो उसे कहेंगे कि क्रमशः सूर्य स्वर चल रहा है या चन्द्र स्वर चल रहा है।

नासिका छिद्रों में स्वर का प्रवाह स्वाभाविक रूप से बदलता रहता है। यह परिवर्तन लगभग एक-एक घण्टे के अन्तराल से होता रहता है। अर्थात् यदि एक घण्टे सूर्य स्वर रहता है तो दूसरे घण्टे में चन्द्र स्वर स्वतः चलने लगता है और तीसरे घण्टे पुनः सूर्य स्वर प्रारम्भ हो जाता है। जब दायीं से बायीं अथवा बायीं से दायीं नासिका छिद्र से वायु प्रवाह बदलता है तो उस समय कुछ काल के लिए दोनों स्वरों में समान प्रवाह होता है। स्वर के बदलने के समय को 'स्वर का सन्धिकाल' कहते हैं। स्वर के समान प्रवाह को 'सुषुम्ना नाड़ी' कहते हैं।

ईश्वर और उसकी सृष्टि विलक्षण, अद्भुत और अनन्त है। प्रभु की विचित्रता और पराकाष्ठा का जीता जागता उदाहरण मनुष्य है। यह एक ऐसा यन्त्र है जिसके माध्यम से अनेक ज्ञान संचित किए जाते हैं। स्वर के पीछे छिपे ज्ञान को आज तक विज्ञान भी नहीं समझ पाया है। हमारे ऋषियों और योगियों को इसका पूर्ण ज्ञान था। वह पूर्ण रूपेण स्वरज्ञानी थे। और उनके चरणों में लक्ष्मी और समस्त ऐश्वर्य विराजते थे। यदि नाड़ी के अनुसार समस्त क्रियाकलाप किए जाएँ जो सौभाग्य की प्राप्ति होती है। किस नाड़ी के प्रवाह के समय कौन-कौन से कार्य करें कि हमारा दुर्भाग्य दूर हो, यह संक्षिप्त में वर्णन कर रहा हूँ।

सूर्य स्वर

श्वास-निश्वास को थोड़ा सा साधकर ध्यान नासाग्र पर केन्द्रित

रहा है। मैं रुड़की से लखनऊ एक विशेष निमन्त्रण पर जा रहा था। भीषण गर्मी के दिन थे और उस पर भीड़ का रेला। राम-राम करते सफर तय हो रहा था। मेरे ठीक सामने बाली बर्थ पर एक साधारण से दिखने वाले सज्जन भी यात्रा कर रहे थे। एकाएक मैंने देखा कि उनका चेहरा गर्मी की तपिश और यात्रा की दुःखदायी थकान से तमतमा रहा है। उनके पूरे चेहरे पर लाल-लाल चकत्ते भरने लगे थे, जो शनैः-शनैः उनके पूरे शरीर पर फैलने लगे। एक तो गर्मी ऊपर से उनका रोग, आस-पास बैठे लोगों के लिए घृणा और तिरस्कार का कारण बनने लगा। एक-दो सज्जन तो छूत के रोग से भयभीत होकर उनके पास से उठकर भीड़ में इधर-उधर समाने लगे।

एक बार तो मैं भी उनकी विकृत-वीभत्स दशा देखकर घिन से भर गया। परन्तु दूसरे पल ही उनके प्रति दयाभाव से मेरा मन बदल गया। मानवता के नाते मैं उनकी अकस्मात् बदली हुई दशा के बारे में पूछने लगा। अपनी पानी की बोतल भी द्रवित होकर मैंने उनकी ओर बढ़ा दी। उन्होंने नकारात्मक मुद्रा में सिर हिलाकर मना कर दिया और ऊंगली तथा मुँह के मौन संकेत से चुप रहने को कहा। उनके संकेत से स्पष्ट हो रहा था कि किसी के भी बात करने के व्यवधान से उन्हें असीम वेदना हो रही थी।

अब तक उनके दार्ये-बायें ठसे हुए व्यक्तियों ने भी उन्हें ठीक से बैठने के उद्देश्य से स्थान छोड़ दिया था। वह सज्जन दोनों पैर ऊपर करके आराम से बैठ गये। उनकी स्थिति पल-प्रतिपल बिगड़ती ही जा रही थी। चेहरे की लालिमा लाल-लाल बढ़ते हुए चकत्तों से अब डरावनी और वीभत्स होने लगी थी। उन्होंने बिल्कुल सीधे बैठकर ध्यान मुद्रा में दोनों आँखें बन्द कर ली थीं। बिना हिले-डुले लगभग १०-१५ मिनट वह एक ही मुद्रा में बिल्कुल निश्चल बैठे रहे। यह क्या! एक चमत्कार होने लगा था। उनका चेहरा, हाथ, शरीर आदि सब धीरे-धीरे सामान्य

रहा है। मैं रुड़की से लखनऊ एक विशेष निमन्त्रण पर जा रहा था। भीषण गर्मी के दिन थे और उस पर भीड़ का रेला। राम-राम करते सफर तय हो रहा था। मेरे ठीक सामने वाली बर्थ पर एक साधारण से दिखने वाले सज्जन भी यात्रा कर रहे थे। एकाएक मैंने देखा कि उनका चेहरा गर्मी की तपिश और यात्रा की दुःखदायी थकान से तमतमा रहा है। उनके पूरे चेहरे पर लाल-लाल चकते भरने लगे थे, जो शनैः-शनैः उनके पूरे शरीर पर फैलने लगे। एक तो गर्मी ऊपर से उनका रोग, आस-पास बैठे लोगों के लिए घृणा और तिरस्कार का कारण बनने लगा। एक-दो सज्जन तो छूत के रोग से भयभीत होकर उनके पास से उठकर भीड़ में इधर-उधर समाने लगे।

एक बार तो मैं भी उनकी विकृत-वीभत्स दशा देखकर घिन से भर गया। परन्तु दूसरे पल ही उनके प्रति दयाभाव से मेरा मन बदल गया। मानवता के नाते मैं उनकी अकस्मात् बदली हुई दशा के बारे में पूछने लगा। अपनी पानी की बोतल भी द्रवित होकर मैंने उनकी ओर बढ़ा दी। उन्होंने नकारात्मक मुद्रा में सिर हिलाकर मना कर दिया और ऊँगली तथा मुँह के मौन संकेत से चुप रहने को कहा। उनके संकेत से स्पष्ट हो रहा था कि किसी के भी बात करने के व्यवधान से उन्हें असीम वेदना हो रही थी।

अब तक उनके दायें-बायें ठसे हुए व्यक्तियों ने भी उन्हें ठीक से बैठने के उद्देश्य से स्थान छोड़ दिया था। वह सज्जन दोनों पैर ऊपर करके आराम से बैठ गये। उनकी स्थिति पल-प्रतिपल बिगड़ती ही जा रही थी। चेहरे की लालिमा लाल-लाल बढ़ते हुए चकत्तों से अब डरावनी और वीभत्स होने लगी थी। उन्होंने बिल्कुल सीधे बैठकर ध्यान मुद्रा में दोनों आँखें बन्द कर ली थीं। बिना हिले-डुले लगभग १०-१५ मिनट वह एक ही मुद्रा में बिल्कुल निश्चल बैठे रहे। यह क्या! एक चमत्कार होने लगा था। उनका चेहरा, हाथ, शरीर आदि सब धीरे-धीरे सामान्य

करिए। थोड़ेसे अभ्यास में ही आप पहचानने में सिद्धहस्त हो जायेंगे कि कौन सा स्वर चल रहा है। यदि एकाग्रता से स्वर कर पता न चले तो बारी-बारी से हाथ की ऊँगली द्वारा नाक के छिद्रों को क्रमशः बन्द करके तेजी से श्वास छोड़िए इस प्रकार दोनों छिद्रों में से अधिक प्रवाह वाला छिद्र आप अनुमान कर लेंगे। यदि दोनों स्वर तुलना करने पर समान दिखाई दें तो समझिए कि सुषुम्ना नाड़ी चल रही है। संयम के साथ ध्यान लगाते रहें फिर यह सब अत्यन्त सरल हो जाएगा।

सूर्य स्वर प्रवाह काल में निम्नलिखित कार्यों का चयन करिये, अवश्य ही सफल होंगे। क्रय-विक्रय, औषधि सेवन, गृह प्रवेश, यात्रा, व्यायाम, विरोध, मदिरा पान, खेती, दान, युद्ध, बैरी को दण्ड देना, अपने से बलवान को वश में करना, विष का उपचार, भूत उतारना, लेन-देन। इनके अतिरिक्त सूर्य स्वर में तांत्रिक साधनाएँ भी शीघ्रता से सिद्ध हो जाती हैं। यह साधनाएँ हैं—मोहन, मारण, उच्चाटन, मन्त्रोपासना, यन्त्र-तन्त्र सम्बन्धी साधना, भूत, प्रेत, बैताल, यक्षिणी की साधना, षट्कर्मों की साधना तथा स्तम्भन आदि सम्बन्धी साधनायें।

चन्द्र स्वर

चन्द्र स्वर, इड़ा अर्थात् बायें स्वर में निम्नलिखित कार्य प्रारम्भ किये जाएँ तो पूर्ण लाभ प्राप्त करने की सम्भावना बढ़ जाती है। जैसे—व्याधि चिकित्सा, दिव्य औषधि का सेवन, पौष्टिक कर्म, अन्न और लकड़ी से सम्बन्धित वस्तुओं का संग्रह, यात्रा, दान, विवाह, आश्रम प्रवेश, यज्ञ, मित्रता, विद्यारम्भ, देव दर्शन के लिए प्रस्थान, देव मूर्तियों की स्थापना, मन्त्र सिद्ध करना, दीक्षा लेना, मोक्ष प्राप्ति हेतु कर्म करना, द्रव्य संचय, बन्धु बान्धवों से मिलने जाना, गीत, नृत्य तथा शास्त्रसम्मत कार्य, अपने अधिकारी के पास जाना, घर में पशु लाना, राज मन्दिर अथवा जलाशय बनवाया, आभूषण धारण करना, तिलक लगाना (विशेषकर

जब सम्मोहन के लिए लगाना हो) तथा गुरु आदि की पूजा करना आदि।

शून्य स्वर

शून्य स्वर, रिक्त अथवा जीव स्वर को सम स्वर भी कहते हैं। सम स्वर की अवस्था में प्राण सुषुम्ना नाड़ी में प्रवाहित होता है। शून्य स्वर के समय साँसरिक कार्य नहीं करने चाहिए। इस काल में दुष्ट कर्म और योगाभ्यास ही करना चाहिए। मोक्ष प्राप्ति सम्बन्धी कार्य करने के लिए समकाल सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यह काल काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार पर विजय प्राप्त करने के लिए बहुत ही प्रभावकारी है। इस काल में कहीं की भी यात्रा सर्वथा वर्जित मानी गई है।

स्वर के बहाव का समय

जिस प्रकार से प्रकृति की प्रत्येक वस्तु का समय निश्चित है। ठीक उसी प्रकार से स्वर के बहने का समय भी निश्चित है। दिन, रात, सूर्य, चन्द्र ग्रह आदि नक्षत्र तथा मौसम आदि का प्रकृति ने एक नियम निर्धारित किया है। सब कुछ उसी क्रम में निरन्तर घटता रहता है। स्वर के बहाव का समय सूर्योदय से निर्धारित किया जाता है। वैसे स्वर के बहाव को लेकर अनेक मत हैं। कुछ मानते हैं कि स्वरों का बहना निश्चित नहीं है। कुछ की मान्यता है कि यदि व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ है तब ही उसकी साँस एक सुनिश्चित क्रम में बहेगी अन्यथा उसका कोई क्रम नहीं रहेगा। मेरी अपनी स्वयं की मान्यता है कि स्वर का कोई क्रम नहीं होता। शरीर में ऊर्जा का सामंजस्य बना रहे उसी के अनुरूप गरम अथवा ठण्डे अर्थात् सूर्य और चन्द्र स्वर का बहना प्राकृतिक नियम से स्वतः होता रहता है।

कुछ आधारभूत नियमों के अनुसार तिथि और शुक्ल तथा कृष्ण पक्षों में सूर्य उदय के समय क्रमशः चन्द्र और सूर्य स्वरों का प्रवाह

प्रारम्भ होना माना गया है। फिर उत्तरोत्तर एक-एक घण्टे के अन्तराल से स्वर परिवर्तित होते रहते हैं। इस प्रकार पूरे दिन भर के १२ घण्टे सूर्य नाड़ी और १२ घण्टे चन्द्र नाड़ी में प्रवाह होता है। इस नियम में परिवर्तन होने अर्थात् सूर्योदय के समय से विपरीत नाड़ी में प्रवाह होने से दुर्भाग्य, हानि, नाश, मृत्यु, व्याधि आदि की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। इसीलिए ऋषि-मुनि विपरीत स्वर प्रवाह होते ही उसे अपने अनुकूल प्रवाहित करने लगते थे और दुर्भाग्य से कोसों दूर रहते थे। स्वर बहने का समय कुछ भी हो परन्तु यह अकाट्य सत्य है कि विपरीत स्वर बहने से अनिष्ट की सम्भावना बढ़ जाती है।

स्वर प्रवाह अनुकूल करना

स्वर के प्राकृतिक नियमानुसार यदि वाँछित स्वर की प्रतीक्षा में बैठे रहेंगे तब तो गाड़ी ही छूट जायेगी। कुछ सरल प्रयोगों द्वारा हम स्वर को अपनी इच्छानुसार वाँछित नाड़ी में प्रवाहित करवाकर मनवाँछित फल की प्राप्ति कर सकते हैं।

प्रयोग-१

स्वच्छ रुई को इतनी बड़ी गोली बना लें जिसको कि सुविधापूर्वक नासिका छिद्र में डालकर स्वर प्रवाह अवरुद्ध किया जा सके। अब जिस स्वर को चलाना है उससे विपरीत नासिका छिद्र में रुई की गोली फँसा दीजिए। इस प्रकार स्वतः ही खुली नासिका छिद्र से स्वर प्रवाह प्रारम्भ हो जाएगा।

प्रयोग-२

जिस स्वर को चलाने की आप आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं उससे विपरीत करवट से आप लेट लायें। उदाहरण के लिए मान लीजिए आप बायें अंग पर जोर देते हुए पाँच मिनट तक निश्चल लेटे रहें। पूरा ध्यान आप दायें स्वर पर ही केन्द्रित करके रखें। पाँच मिनट में ही धीरे-

धीरे आपका दायौं स्वर चलने लगेगा।

प्रयोग-३

मैं अपने कार्यों के लिए यह प्रयोग अधिक सुविधाजनक मानता हूँ क्योंकि इस प्रयोग से कहीं भी और कैसी भी परिस्थिति में वाँछित स्वर चलाया जा सकता है। इस प्रयोग के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति और चित्त की एकाग्रता की आवश्यकता है। अपना चित्त नासिका छिद्रों के सबसे संवेदनशील भाग पर लगाइए। एक पल में ही आप प्रवाहित हो रहे स्वर को परख लेंगे। अब जिस स्वर को चलाना हो, सारा ध्यान उसके संवेदनशील भाग पर केन्द्रित करके श्वास-निश्वास इतनी लें कि वह वहीं तक ही सीमित होती लगे। इस प्रकार से आपका वाँछित स्वर चलने लगेगा। इस प्रयोग में लम्बे अभ्यास की आवश्यकता है। परन्तु एक बार यदि अभ्यास हो जाये तो यह प्रयोग सबसे सरल लगने लगेगा।

इस प्रकार अनुकूल स्वर के कार्य सुगमता से प्रारम्भ किए जा सकते हैं। साधारणतः जब भी विपरीत स्वर प्रारम्भ हो जाए तब समझ लीजिये दुर्भाग्य पीछा करने वाला है।

स्वर से दूर करें दुर्भाग्य

स्वर विज्ञान के संक्षिप्त से परिचय द्वारा पाठक सम्भवतः इसकी उपयोगिता भली-भाँति समझ गए होंगे। स्वर विज्ञान क्या है, इसे कैसे अपने अनुकूल बनाया जाए, यह भी अब तक स्पष्ट हो गया होगा।

यहाँ पाठकों के लाभार्थ सरल परन्तु उतनी ही महत्वपूर्ण बातें प्रस्तुत कर रहा हूँ। इनका अनुसरण करके आप भी दुर्भाग्य को दूर भगा सकते हैं।

प्रयोग

पक्ष, तिथि अथवा नक्षत्र-मुहूर्त के झंझट में न पड़कर प्रातःकाल मात्र एक बार अनुकूल स्वर के अनुसार उठने की आदत डालिये, आपका

सारा दिन अच्छा बीतेगा। प्रातःकाल उठते समय सप्ताह के दिनों का ध्यान रखिये। इन दिनों के अनुरूप ही प्रातःउठते समय स्वर बहना चाहिये। यदि ऐसा नहीं है तो स्वर को अनुरूप करने का यत्न करिए। जो स्वर प्रातः चल रहा हो सर्वप्रथम उस तरफ की हथेली की रेखायें देखें। प्रभु से दीन होकर दिन अच्छी तरह से व्यतीत होने की प्रार्थना करें। फिर उस हथेली को उस तरफ की ही कनपटी और गाल तथा आँख पर फिरायें। उसके बाद धरती पर पैर रखने से पहले बहने वाले स्वर की हथेली की अनामिका ऊँगली से स्पर्श करके माथे से लगाये। अब उस तरफ का ही पैर सर्वप्रथम धरती पर उतारे। प्रातः उठने पर पृथ्वी को माथे से लगाने का यह नियम बना लें। प्रभु सदैव आपकी दुर्भाग्य से रक्षा करेंगे। किस दिन प्रातः कौन सा स्वर चलना शुभ है, यह यहाँ दे रहा हूँ—

सप्ताह का दिन

सोमवार

मंगलवार

बुधवार

गुरुवार

शुक्रवार

शनिवार

रविवार

चलने वाला स्वर

बायाँ

दायाँ

बायाँ

दायाँ

बायाँ

दायाँ

दायाँ

सारा दिन अच्छा बीतेगा। प्रातःकाल उठते समय सप्ताह के दिनों का ध्यान रखिये। इन दिनों के अनुरूप ही प्रातःउठते समय स्वर बहना चाहिये। यदि ऐसा नहीं है तो स्वर को अनुरूप करने का यत्न करिए। जो स्वर प्रातः चल रहा हो सर्वप्रथम उस तरफ की हथेली की रेखायें देखें। प्रभु से दीन होकर दिन अच्छी तरह से व्यतीत होने की प्रार्थना करें। फिर उस हथेली को उस तरफ की ही कनपटी और गाल तथा आँख पर फिरायें। उसके बाद धरती पर पैर रखने से पहले बहने वाले स्वर की हथेली की अनामिका ऊँगली से स्पर्श करके माथे से लगाये। अब उस तरफ का ही पैर सर्वप्रथम धरती पर उतारे। प्रातः उठने पर पृथ्वी को माथे से लगाने का यह नियम बना लें। प्रभु सदैव आपकी दुर्भाग्य से रक्षा करेंगे। किस दिन प्रातः कौन सा स्वर चलना शुभ है, यह यहाँ दे रहा हूँ—

सप्ताह का दिन

सोमवार

मंगलवार

बुधवार

गुरुवार

शुक्रवार

शनिवार

रविवार

चलने वाला स्वर

बायाँ

दायाँ

बायाँ

दायाँ

बायाँ

दायाँ

दायाँ

“भौतिक सुखों की कमी दुर्भाग्य है।”

-एक भौतिकवादी

शुभ और अशुभ दिन

ऐसे अनेक व्यक्ति देखने को मिलते हैं जिनके जीवन में किसी-न-किसी तिथि, दिन, माह अथवा वर्ष का प्रभाव निरन्तर बना रहता है। यह मात्र किताबी बात ही नहीं है, उन व्यक्तियों के स्वयं के अनुभवों के आधार पर मैंने यह निष्कर्ष निकाला गया है; जिन्हें वास्तव में ऐसे अंक मिले हैं।

अच्छे-बुरे दिन चुनना इस अध्याय की सहायता से अधिक सरल हो जायेगा। अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को लिखते जाइये। घटनाओं के दिन, माह, तिथि आदि का अवलोकन करते चलिये। अवलोकन कीजिए कि किस घटना के लिये किस-किस दिन, तिथि आदि की आवृत्ति हो रही है।

उदाहरण के लिए मान लेते हैं कि किसी व्यक्ति के लिए शुभ घटनाएँ अधिकांशतः मंगलवार और शनिवार को घटित हुई हैं। सोमवार को इन्हीं सज्जन के लिये सदा दुःखद अनुभूतियाँ ही होती हैं। सौभाग्य से अच्छे-बुरे दिनों का पता इतनी सरलता से चल जाये तब तो सोने पे सुहागा। एक बार ऐसे दिनों का पता चल जाये तब तो जीवन के अपने महत्वपूर्ण क्रियाकलाप इन्हीं के अनुरूप करना प्रारम्भ कर दीजिये। यदि ऐसा न हो तो आप पस्तक में से अपने अनुरूप दिनों का चयन करने का

प्रयास करते रहिये। अपने प्रयास में आप निश्चय ही सफल होंगे।

एक अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ के अनुसार शुक्रवार का दिन बहुत ही अशुभ माना गया है। अनेक पुराने आँकड़े जमा करने पर उन्होंने देखा कि इस बात में सत्यता है। शुक्रवार को की गई शादियों में अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक अनबन, तलाक आदि दिखलाई दिये। शुक्रवार को पैदा हुए बच्चे उतने अधिक बुद्धिमान और स्वस्थ नहीं हुए जितने कि अन्य दिनों में पैदा हुए बच्चे। मछेरों की खोई हुई नावों में देखा गया कि अधिकाँश नावें मल्लाहों द्वारा शुक्रवार को ले जाई गई थीं। दुर्घटनाओं, बैंक डकैतियों अथवा अन्य अनेक प्राकृतिक आपदाओं आदि में शुक्रवार का अधिक योगदान देखा गया।

शुक्रवार के दुष्परिणामों को देखते हुए इस दिन के लिए बहुत से शोधपूर्ण कार्य किये गए। अन्ततः अनुभव में यह आया है कि शुक्रवार का दुष्परिणाम तब अधिक तीव्र हो जाता है तब प्रत्येक माह के कुछ दिन विशेष भी इस दिन आ जाते हैं। ऐसे दिनों को उन लोगों ने प्रयोग न करने की सलाह दी। उनके यह भी अनुभव में आया कि ऐसा अनुसरण करने से व्यक्ति के जीवन में अशुभता की कमी आई है।

पाठकों के लाभार्थ वह तिथियाँ मैं इस अध्याय में लिख रहा हूँ। इन तिथियों में शुक्रवार भी पड़ जाये तो जहाँ तक सम्भव हो शुभ कर्मों को इन दिनों में स्थगित कर दें।

| माह | तिथियाँ |
|--------|----------------------------|
| जनवरी | १, २, ४, ५, १०, १५, १७, १९ |
| फरवरी | ८, १०, १७, २६, २७, २८ |
| मार्च | १६, १७, २० |
| अप्रैल | ७, ८, १०, २०, १६, २६ |
| मई | कोई नहीं |
| जून | ४, ८, १०, २२ |

| | |
|---------|----------------------|
| जुलाई | १५, २१ |
| अगस्त | १, १९, २०, २९, ३० |
| सितम्बर | २, ४, ६, ७, २१, २३ |
| अक्टूबर | ४, ६, १६, २४ |
| नवम्बर | ५, ६, १५, २०, २९, ३० |
| दिसम्बर | ६, ७, ९, १५, २२ |

इन तिथियों को अनेक शुभ कार्यों जैसे कि यात्रा, विवाह, नौकरी में प्रवेश, महत्वपूर्ण हस्ताक्षर अथवा किसी व्यक्ति से मिलना आदि के लिए वर्जित माना गया है।

इस लिस्ट में ध्यान देने योग्य बात यह है कि इसमें अंक १३ को दुर्भाग्यपूर्ण नहीं माना गया है। जबकि अंक १३ का हौवा और इसके प्रयोग करने से पहले अनेक बार सोचने की बात सर्वविदित है।

यदि व्यक्ति को अपनी ठीक जन्म तिथि का ज्ञान है तो शुभ और अशुभ दिनों को चुनने में निम्न सारणियाँ अति उपयोगी सिद्ध होंगी। यदि जन्म तिथि न भी पता हो तब भी इस अध्याय का उपयोग अपने चलित नाम की राशि के अनुरूप किया जा सकता है।

२१ जनवरी से १९ फरवरी तक अथवा कुम्भ राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|--------|-------------------|--------------------|
| जनवरी | १, ५, ९, १०, १५ | २०, २, १९, २४, ३१ |
| फरवरी | २, ५, ६, ११, १६ | २९, १३, २०, २६, २७ |
| मार्च | ३, ६, ७, १०, १७ | ३०, ११, १९, २४, २५ |
| अप्रैल | ४, ५, १०, २०, २३ | २९, ७, १४, १५, २४ |
| मई | ७, ८, १६, १७, २५ | ३१, ४, १२, १८, २९ |
| जून | ५, १२, १७, १८, २५ | २६, १, २, २८, ३१ |

★ दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय ★

| | | |
|---------|--------------------|--------------------|
| जुलाई | १०, ११, १९, २२, २३ | २८, ५, १२, १३, २६ |
| अगस्त | १०, ११, १९, २०, २४ | २५, २, २२, २३, २७ |
| सितम्बर | १०, ११, १२, २२, २९ | ३०, ४, ५, १९, २५ |
| अक्टूबर | १, ३, ९, १३, २७ | २८, २, ८, ११, २६ |
| नवम्बर | ४, ५, १०, १५, २३ | २८, ११, १८, २६, २७ |
| दिसम्बर | ७, ८, १३, २१, २५ | २७, ९, १६, १७, २४ |

२० फरवरी से २० मार्च तक अथवा
मीन राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|---------|---------------------|--------------------|
| जनवरी | ५, ७, ९, २१, २२ | २७, ८, १६, २३, २८ |
| फरवरी | ४, ७, ९, २०, २१ | २६, ५, १०, २२, २५ |
| मार्च | ५, ६, १२, १३, १७ | २९, ११, १५, १८, २६ |
| अप्रैल | ६, ८, ११, १५, २२ | ३०, ९, १२, २०, २३ |
| मई | ८, १४, १५, १९, २४ | २९, ४, १७, २०, २८ |
| जून | १०, ११, १९, २१, २३ | २७, ६, १८, २४, २८ |
| जुलाई | ११, १५, २०, २२, २४ | ३१, ८, २१, २५, २६ |
| अगस्त | १३, १६, १७, २०, २८ | ३०, ४, ५, १९, २५ |
| सितम्बर | १५, १७, १९, २४, २७ | २८, ३, ८, १८, २६ |
| अक्टूबर | १७, १९, २०, २१, २९ | ३०, ४, ६, ८, २८ |
| नवम्बर | ८, ९, १०, १४, १९ | २१, १, १२, १८, २४ |
| दिसम्बर | ३, ७, ९, १३, २२, २८ | ११, १६, २०, २९ |

२१ मार्च से १९ अप्रैल तक अथवा
मेघ राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|-------|-----------------|-------------------|
| जनवरी | १, ५, ९, २३, २७ | २८, ६, १६, २६, २९ |

★ दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय ★

| | | |
|---------|--------------------|--------------------|
| जुलाई | १०, ११, १९, २२, २३ | २८, ५, १२, १३, २६ |
| अगस्त | १०, ११, १९, २०, २४ | २५, २, २२, २३, २७ |
| सितम्बर | १०, ११, १२, २२, २९ | ३०, ४, ५, १९, २५ |
| अक्टूबर | १, ३, ९, १३, २७ | २८, २, ८, ११, २६ |
| नवम्बर | ४, ५, १०, १५, २३ | २८, ११, १८, २६, २७ |
| दिसम्बर | ७, ८, १३, २१, २५ | २७, ९, १६, १७, २४ |

२० फरवरी से २० मार्च तक अथवा
मीन राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|---------|---------------------|--------------------|
| जनवरी | ५, ७, ९, २१, २२ | २७, ८, १६, २३, २८ |
| फरवरी | ४, ७, ९, २०, २१ | २६, ५, १०, २२, २५ |
| मार्च | ५, ६, १२, १३, १७ | २९, ११, १५, १८, २६ |
| अप्रैल | ६, ८, ११, १५, २२ | ३०, ९, १२, २०, २३ |
| मई | ८, १४, १५, १९, २४ | २९, ४, १७, २०, २८ |
| जून | १०, ११, १९, २१, २३ | २७, ६, १८, २४, २८ |
| जुलाई | ११, १५, २०, २२, २४ | ३१, ८, २१, २५, २६ |
| अगस्त | १३, १६, १७, २०, २८ | ३०, ४, ५, १९, २५ |
| सितम्बर | १५, १७, १९, २४, २७ | २८, ३, ८, १८, २६ |
| अक्टूबर | १७, १९, २०, २१, २९ | ३०, ४, ६, ८, २८ |
| नवम्बर | ८, ९, १०, १४, १९ | २१, १, १२, १८, २४ |
| दिसम्बर | ३, ७, ९, १३, २२, २८ | ११, १६, २०, २९ |

२१ मार्च से १९ अप्रैल तक अथवा
मेघ राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|-------|-----------------|-------------------|
| जनवरी | १, ५, ९, २३, २७ | २८, ६, १६, २६, २९ |

| | | |
|---------|-------------------|-------------------|
| फरवरी | २, ५, १०, १९, २५ | २९, ८, १५, १६, २३ |
| मार्च | ४, ९, १०, १९, २० | ३१, ३, ६, १५, २१ |
| अप्रैल | १, ५, १४, १५, १९ | २८, २, ३, १७, ३० |
| मई | ३, १२, १३, १८, २१ | ३१, ८, १४, २७, २८ |
| जून | ३, ७, १७, १८, २५ | २७, ४, ५, २३, २६ |
| जुलाई | १, ६, १४, २३, २८ | २९, २, ४, ३०, ३१ |
| अगस्त | २, १०, ११, २४, २५ | २३, ६, १२, २२, २३ |
| सितम्बर | ७, १०, ११, १२, २१ | २५, २, २३, २४, २६ |
| अक्टूबर | ३, ९, १३, १७, १९ | ३१, ६, १४, २६, २७ |
| नवम्बर | १, ५, ८, १४, २० | ३०, ६, १८, २२, २९ |
| दिसम्बर | १, १३, २५, २६, २७ | ३१, ६, १२, २२, २८ |

२० अप्रैल से २० मई तक अथवा

वृष राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|---------|--------------------|--------------------|
| जनवरी | ५, ७, ११, १५, १७ | २५, २, १०, २४, ३० |
| फरवरी | ३, ५, ६, ७, २४ | २८, १९, २०, २२, २३ |
| मार्च | १, १०, १७, १९, २० | २९, ३, २४, २५, २८ |
| अप्रैल | ३, ७, १२, २४, २५ | २९, १४, १६, १९, २७ |
| मई | १, ५, ६, ९, २३ | २७, ११, १३, २४, २६ |
| जून | १, ५, ९, १४, १५ | २७, ३, ६, १८, १९ |
| जुलाई | २, ७, ८, १७, २१ | ३१, ५, ६, १८, २० |
| अगस्त | १२, १३, १४, २२, २६ | ३१, १, ९, २८, २९ |
| सितम्बर | १, १२, २२, २६, २७ | ३०, ५, ११, २५, २९ |
| अक्टूबर | ५, ६, ७, २०, २१ | २६, १०, ११, २४, २५ |
| नवम्बर | ३, ७, ८, १३, २२ | २९, ५, ९, २०, २७ |
| दिसम्बर | ३, ५, १३, २०, २५ | ३१, १, १२, २३, २८ |

२१ मई से २१ जून तक अथवा
मिथुन राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|---------|-------------------|--------------------|
| जनवरी | १, ९, १९, २०, २७ | २८, ४, ५, ११, २६ |
| फरवरी | ५, ६, ११, २१, २३ | २५, १, २, २८, २९ |
| मार्च | ६, ९, १५, २०, ३० | ३१, ७, १९, २८, २९ |
| अप्रैल | १, ५, ७, १६, १७ | २४, १५, १९, २०, २२ |
| मई | ३, ६, ७, १७, २४ | २५, १४, २१, २३, २६ |
| जून | ३, ७, ९, १३, २५ | २६, ११, १६, १७, २७ |
| जुलाई | २, ९, १०, १९, २३ | २९, ७, ८, १५, २० |
| अगस्त | ७, १४, २१, २४, २५ | २७, ४, ११, १७, २२ |
| सितम्बर | ३, ११, १२, १७, २१ | २६, १, ३, १४, २२ |
| अक्टूबर | १, ९, १७, १९, २३ | २८, ५, ८, ११, २७ |
| नवम्बर | ५, ९, १५, २३, २४ | ३०, ३, ७, २२, २८ |
| दिसम्बर | १, ७, ११, १२, २१ | २५, ५, ६, १९, २७ |

२२ जून से २२ जुलाई तक अथवा
कर्क राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|--------|------------------|--------------------|
| जनवरी | ३, ९, ११, १३, १६ | २९, ६, ८, २७, २८ |
| फरवरी | ७, ८, १३, १४, २२ | २७, ३, ११, २४, २५ |
| मार्च | ५, ७, १२, २०, २१ | २५, १, ४, २२, २६ |
| अप्रैल | २, ७, ८, १२, १३ | २९, ५, १९, २०, २५ |
| मई | १, ५, १०, ११, १८ | १९, ३, १७, २३, ३० |
| जून | २, ७, १०, १५, २४ | २८, १३, १९, २०, २२ |
| जुलाई | ३, ४, ७, २०, २२ | २५, १०, १३, २३, २८ |

| | | |
|---------|-------------------|-------------------|
| अगस्त | ५, ८, ९, २१, २२ | ३०, ७, १२, १९, २० |
| सितम्बर | ५, १२, १३, १९, २७ | २८, ३, १०, १६, १७ |
| अक्टूबर | १, ३, ११, १५, १६ | ३०, ७, १४, २७, २५ |
| नवम्बर | ६, ७, १६, १७, २७ | ३०, ८, ९, १८, १९ |
| दिसम्बर | ४, ९, १३, २४, ३० | ३१, ६, ७, १८, २१ |

२३ जुलाई से २१ अगस्त तक अथवा
सिंह राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|---------|-------------------|--------------------|
| जनवरी | १, ४, १३, १५, १८ | २७, ३, ८, १२, ३० |
| फरवरी | १, १५, २०, २४, २५ | २९, ८, १२, २१, २८ |
| मार्च | ९, १८, १९, २०, २१ | २८, १२, २२, २४, २५ |
| अप्रैल | १, ५, १०, ११, १८ | २३, ७, ८, १६, २२ |
| मई | २, ३, ६, १२, १३ | ३१, ५, १८, १९, २४ |
| जून | ३, ४, १३, १७, २६ | ३०, २, १४, २१, २२ |
| जुलाई | २, ६, ९, १४, २३ | २९, १२, १३, २४, २५ |
| अगस्त | ३, ७, १०, २३, २५ | ३०, ९, १४, २१, २२ |
| सितम्बर | ३, १५, १६, २२, २६ | २९, ५, १७, १८, १९ |
| अक्टूबर | १, १३, १७, २७, २८ | ३१, ९, १४, १५, २९ |
| नवम्बर | ९, १०, १५, २०, २३ | २७, ५, १२, १३, १७ |
| दिसम्बर | ७, ११, १६, १८, २२ | २६, ३, ९, २३, २८ |

२२ अगस्त से २२ सितम्बर तक अथवा
कन्या राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|-------|-------------------|-------------------|
| जनवरी | १, ३, ९, १५, २० | ३१, ४, ११, १८, १९ |
| फरवरी | ३, १२, १३, १८, २३ | २७, ८, १५, १६, २९ |

★ दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय ★

| | | |
|---------|--------------------|--------------------|
| मार्च | १, ११, २०, २१, २८ | २९, ६, ७, २६, २७ |
| अप्रैल | ७, ८, १५, १७, २४ | २५, २, ३, ९, २९ |
| मई | ४, ७, १०, १८, २२ | ३१, ८, २१, २७, २८ |
| जून | १, ६, ७, ११, १५ | २९, ३, ९, १६, २४ |
| जुलाई | ४, ९, १०, १७, २५ | ३०, २, १४, २०, २२ |
| अगस्त | ३, ५, १२, २२, २८ | २९, १०, १७, १८, २३ |
| सितम्बर | ४, ९, १०, २२, २३ | २८, ७, ८, १७, २१ |
| अक्टूबर | १, २, ११, १२, २५ | ३०, ४, ८, १४, २० |
| नवम्बर | १७, १८, २२, २३, २५ | ३०, ५, ७, १२, २१ |
| दिसम्बर | ९, १०, १८, २३, २६ | २८, ४, ५, ६, २४ |

२३ सितम्बर से २३ अक्टूबर तक अथवा
तुला राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|---------|-------------------|--------------------|
| जनवरी | १, ५, ९, १९, २० | २७, ६, ७, २१, २३ |
| फरवरी | २, ६, १५, २०, २४ | २९, ११, १७, १९, २२ |
| मार्च | ४, १४, १८, २३, २७ | ३१, २, ९, १०, २८ |
| अप्रैल | १, १५, १९, २३, २४ | २८, ४, ५, १४, २३ |
| मई | ७, ८, १२, १७, २१ | २४, ३, ९, २३, २९ |
| जून | ८, १२, १३, १६, २२ | ३०, ७, १९, २०, २७ |
| जुलाई | ४, १४, १९, २०, २३ | २८, १०, १७, २७, २९ |
| अगस्त | १, ७, १०, ११, १५, | ३०, १२, १३, २२, २७ |
| सितम्बर | ३, ६, ११, २०, २२ | २९, ८, १६, १७, २४ |
| अक्टूबर | ४, ५, १७, २२, २४ | २७, ८, १२, २०, २१ |
| नवम्बर | १, ४, ६, १४, १९ | २६, ९, १७, २८, २९ |
| दिसम्बर | ३, १२, १३, २१, २५ | २९, ४, ७, १५, १९ |

२४ अक्टूबर से २२ नवम्बर तक अथवा
वृश्चिक राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|---------|-------------------|--------------------|
| जनवरी | २, ३, ७, ८, २२ | ३०, १०, १६, १८, २४ |
| फरवरी | ३, ९, १७, १८, २४ | २७, १, १२, १४, २० |
| मार्च | १, ६, १५, २०, २५ | २९, ३, ११, १९, ३० |
| अप्रैल | २, ३, १२, १७, २१ | २९, ७, ८, २६, २८ |
| मई | ५, १०, ११, १५, १९ | २७, ४, ६, २४, २६ |
| जून | ६, ११, १५, १९, २३ | २५, २, ८, २६, २८ |
| जुलाई | ४, ७, ९, १७, २१ | ३०, ३, ८, १९, ३१ |
| अगस्त | ५, ९, १३, १७, १८ | २७, २, १२, २२, २८ |
| सितम्बर | ९, १०, १२, २३, २७ | २८, ११, १४, १८, २९ |
| अक्टूबर | २, ३, ११, २०, २५ | २९, ८, ९, २२, २६ |
| नवम्बर | २, ३, १६, १७, २३ | ३०, ५, १२, १८, २९ |
| दिसम्बर | २, ५, १८, १९, २४ | २७, ३, ६, १६, १८ |

२३ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक अथवा
धनु राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|--------|-------------------|-------------------|
| जनवरी | १, ९, १४, १५, २३ | २४, ६, १२, १८, २२ |
| फरवरी | ३, ५, ७, १९, २१ | २८, ८, १५, १६, २३ |
| मार्च | ५, ८, १०, १९, २३ | ३१, ६, ७, १५, २१ |
| अप्रैल | ४, १४, १५, १९, २० | २८, ३, १८, २२, २६ |
| मई | १, १२, १६, २०, २६ | ३१, ७, १४, १५, २७ |
| जून | ७, ८, १३, १७, २१ | २५, ३, ११, २३, २४ |
| जुलाई | ६, ११, १५, २१, २२ | २५, ७, २०, २३, २९ |

| | | |
|---------|-------------------|--------------------|
| अगस्त | ३, ६, ७, १४, १५ | २९, ४, १२, १८, २८ |
| सितम्बर | १, १०, १२, १५, २६ | २९, १३, १७, २०, २२ |
| अक्टूबर | ४, ५, २२, २३, २७ | ३१, ११, १२, १८, २६ |
| नवम्बर | ९, १९, २०, २३, २४ | २८, ६, १४, १५, २२ |
| दिसम्बर | ३, ७, ८, १७, २२ | २५, ६, ११, १८, २८ |

२२ दिसम्बर से २० जनवरी तक अथवा
मकर राशि में जन्में लोगों के लिए

| माह | शुभ दिन | अशुभ दिन |
|---------|--------------------|--------------------|
| जनवरी | २, ७, १८, २६ | ३१, ११, १४, १५, २८ |
| फरवरी | ३, ७, ९, १२, १३ | २७, ११, १८, २४, २५ |
| मार्च | १, ५, ७, १०, २४ | २८, ८, १६, १७, २३ |
| अप्रैल | २, ३, ७, १६, २५ | २६, १२, १३, १९, २० |
| मई | ५, ६, १४, १५, २७ | ३१, १०, १६, २९, ३० |
| जून | १, १४, १५, १८, २४ | २९, ५, १३, २२, २६ |
| जुलाई | ९, १२, १३, १७, २० | २७, २, ११, १६, २४ |
| अगस्त | ३, ८, ९, १६, २१ | ३१, ६, १८, १९, २९ |
| सितम्बर | ५, ९, १४, १८, १९ | २७, १, ३, १७, २३ |
| अक्टूबर | १०, ११, १६, १७, २५ | ३०, ८, १२, २१, २७ |
| नवम्बर | ६, ७, ८, १२, १३ | २६, १०, १७, १८, २५ |
| दिसम्बर | ३, ८, ९, १९, २४ | ३१, २, ६, ११, ३० |

इन अंकों का प्रयोग करते समय एक बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि अशुभ अंकों में से किस में भी व्यक्ति का यदि जन्म होता है तो वह अंक विशेष उसके लिए अशुभ नहीं कहलायेगा। अशुभ अंक, वास्तव में देखा जाए, अशुभ नहीं है क्योंकि किसी-न-किसी के लिए, वह शुभ अवश्य होंगे।

उदाहरण के लिए मान लें कि किसी व्यक्ति का जन्म ३० दिसम्बर को हुआ है। यहाँ अन्तिम सारिणी के अनुसार उसके शुभ और अशुभ दिन देखे जायेंगे। क्योंकि ३० दिसम्बर, २२ दिसम्बर से २० जनवरी के मध्य पड़ता है। व्यक्ति के दिसम्बर मास के शुभ दिन ३, ८, ९, १९, २४ एवं ३१ तिथियाँ होंगी तथा अशुभ दिन दिसम्बर मास की ३० तारीख इस तिथि में अशुभ नहीं मानी जायेगी। ठीक इसी प्रकार वर्ष के प्रत्येक माह में जन्मे व्यक्ति की उस तिथि को अशुभ न मानें जिसमें कि वह जन्म लेता है।

“जीवन की सीमितताओं से निकले नहीं कि
समझिए दुर्भाग्य को निमन्त्रण दे दिया।”

— गोपाल राजू

जीवन के गुप्त चक्र

हमारे जीवन को जन्म से लेकर मृत्यु तक तीन गुप्त चक्र निरन्तर प्रभावित करते रहते हैं। यह चक्र कैसे हैं और किस प्रकार से व्यक्ति के जीवन को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं? यह सब अन्य गुप्त विद्याओं की भाँति अनबूझा ही है। विश्व के अनेक प्रगतिशील देशों में इन चक्रों को लेकर शोधकार्य होते रहे हैं। परन्तु कोई भी इस गुत्थी को पूर्णतया सुलझा नहीं पाया है। गुप्त चक्रों के अनसुलझे रहस्य के बाद भी अनेक विकसित देशों ने इसकी प्रामाणिकता और अस्तित्व को स्वीकार किया है।

अनेक गुह्य विद्याओं की तरह जिज्ञासु बौद्धिक वर्ग ने भी एक मत से यह मान लिया है कि यह चमत्कारिक गोपनीय विषय साधारण ज्ञान की परिधि से परे है। यदि शुद्धता से इन चक्रों की गणना करके इनके अनुसार अनुसरण किया जाता है तो तुलनात्मक रूप से अनुकूल प्रमाण सम्भावित होते हैं।

पाठकों के मन में यह उथल-पुथल अवश्य हो रही होगी कि दुर्भाग्य दूर करने के लिए मैंने यह विषय क्यों चुना है। जो पाठक मुझे निरन्तर पढ़ रहे हैं, उन्होंने यह अवश्य देखा होगा कि मैं सर्वथा अनूठा,

अछूता और ऐसा कुछ करने में प्रयत्नरत हूँ जो सर्वसाधारण के ज्ञान की परिधि में हो और विषय के लिए प्रयोग होने वाली विषयवस्तु सर्व सुलभ हो। मात्र किताबी अथवा अव्यवहारिक, दुष्कर अथवा दुर्गम विषय वस्तु को मैंने अपने किसी भी ग्रन्थ में स्थान नहीं दिया है।

दुर्भाग्य दूर करने के लिए इन गुप्त चक्रों को मैंने प्रामाणिक पाया है। यह मेरे व्यक्तिगत अनुभवों के सर्वथा अनुकूल सिद्ध हुए हैं। सरलता से गणना किए जाने वाले इन गुप्त चक्रों की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि यह अंग्रेजी साहित्य में ही उपलब्ध हो पाए हैं। हिन्दी में इन चक्रों की विस्तृत व्याख्या सर्वप्रथम इस पुस्तक के माध्यम से प्रकाश में आ रही है।

जापान, अमेरीका, ब्रिटेन तथा यूरोप के अनेक विकसित देशों सहित विश्व के अनेक विकासशील देशों में भी इन गुप्त चक्रों का चलन देखने को मिल जायेगा। लगभग प्रत्येक कम्प्यूटरों में आज इन चक्रों को खींचने के प्रोग्राम भी उपलब्ध हैं। मात्रजन्म के आँकड़े कम्प्यूटर में भर देने से वाँछित चक्र उपलब्ध किए जा सकते हैं। मैंने स्वयं इन चक्रों को खींचने के लिए एक कम्प्यूटर प्रोग्राम विकसित किया है।

जिन विकसित देशों में इन गुप्त चक्रों का प्रयोग होता है उनकी मान्यता है कि अनेक ऐसे वर्कशापों, यातायात कार्यालयों आदि, जहाँ जोखिम वाले कार्य किए जाते हैं, में इन चक्रों के अपनाने से दुर्घटनाओं में न्यूनता आई है।

सन् १९७१ के एक सर्वेक्षण के अनुसार ऐसा भी दावा किया गया है कि इन गुप्त चक्रों के अपनाने से ८० प्रतिशत तक यातायात सम्बन्धी दुर्घटनाओं पर रोक लगी है। जोखिम भरे कार्य करने वाले कर्मचारियों को गुप्त चक्रों की सहायता से इनकी अशुभ तिथियों की पहले से ही गणना कर ली जाती है। फलस्वरूप उन तिथियों में विशेष सुरक्षा के उपाय अपनाकर वह अशुभ घटनाओं से बच सकते हैं। दूसरे शब्दों में

कह सकते हैं कि यह गुप्त चक्र एक इंजन अथवा मोटर चालक आदि के लिए किसी दुर्घटना के घटित होने के पूर्व किसी आपदा, आपत्ति और संकट में संकेत देने में सहायक सिद्ध होते हैं।

अब यह चालक की निपुणता पर निर्भर करता है कि वह इन संकेतों से सावधान होकर घटित होने वाली दुर्घटनाओं से अपनी जान बचा ले अथवा इन्हें अनदेखा करके अपनी जान जोखिम में डाल ले।

हमारे भौतिक शरीर के चारों ओर प्रवाहित होने वाली अदृश्य और विलक्षण गुणों वाली तरंगों के परिणामस्वरूप यह गुप्त चक्र बनते हैं। योग सिद्धान्त में ऐसी मान्यता है कि यह अदृश्य तरंगों, जिन्हें विद्युत चुम्बकीय तरंगों (इलैक्ट्रोमैग्नेटिक फोर्सिस) भी कहते हैं, हमारी नाड़ी और विभिन्न १६ चक्रों में प्रवाहित होती रहती हैं। प्रवाहित होने वाली यह तरंगें भौतिक शरीर के चारों ओर भी दिखाई देती हैं जिसे आभामण्डल (औरा) कहते हैं। इस आभामण्डल का क्रिलियोन फोटोग्राफी द्वारा अब चित्र लेना भी सम्भव हो गया है।

विभिन्न चक्रों में प्रवाहित होने वाली तरंगों में से तीन ऐसी हैं जो निरन्तर एक ताल में रहती हैं, इस कारण से ही इन तरंगों, चक्रों अथवा वक्रों को 'बायोरिदेमिक साइकिल' कहते हैं। इन चक्रों के नाम हैं— भौतिक चक्र, भावनात्मक चक्र और बौद्धिक चक्र।

बर्लिन के डॉ. विल्हेम फिलएस और विएना के डॉ. हरमन स्वाबोदा ने लगभग १९वीं शताब्दी के प्रारम्भ में भावनात्मक तथा भौतिक चक्रों की खोज की थी। उन्होंने इस बात का पता लगाया था कि दोनों चक्र क्रमशः २८ और २३ दिन के अन्तराल से बच्चे के जन्म लेने के दिन से उसकी अन्तिम साँस तक निरन्तर और नियमित रूप से घटित होते रहते हैं।

कुछ समय पश्चात् आस्ट्रेलिया के वैज्ञानिक एल्फ्रेड ने एक तीसरे बौद्धिक चक्र की खोज की। अपने अनुसन्धान के अन्तर्गत उन्होंने पाया

कि यह चक्र भी उक्त दोनों चक्रों की भाँति जीवनपर्यन्त घटित होता रहता है, परन्तु इसका अन्तराल दोनों से भिन्न ३३ दिन का है अर्थात् ३३ दिन बाद पुनः इस चक्र की पुनरावृत्ति होती है।

यदि इन चक्रों को दिनों के पैमाने में अंकित करें तो यह सर्पिल, लहरदार अथवा कहें कि वक्रतामय आकार के दिखाई देंगे। तीनों चक्र विभिन्न आवृत्तियों से एक साथ चलते रहते हैं। इन्हें एक ही अक्ष पर अंकित किया जा सकता है। परन्तु सुविधा और सरलता से समझ आ जाने के लिए इन्हें यहाँ तीन अलग-अलग अक्षों पर अंकित किया जा रहा है।

इन चक्रों को थोड़े से जोड़ घटाने के गणितीय ज्ञान के आधार पर सरलता से बनाया जा सकता है। एक सज्जन के गुप्त चक्र का उदाहरण यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसके बाद आप भी यह अपने लिए स्वयं बनाकर दुर्भाग्य को चुनौती दे सकते हैं।

जिस काल के लिए हमें गुप्त चक्र बनाने होते हैं सर्वप्रथम उनके लिए व्यक्ति की जन्म तिथि से वाँछित तिथि तक के कुल दिनों की आवश्यकता पड़ती है। उक्त सज्जन का जन्म २१ अगस्त, १९६० को हुआ था। १ अक्टूबर, १९९० के लिए उनके गुप्त चक्र बनाए गए थे। अपनी सुविधा के अनुकूल कैसे भी आप इन दो तिथियों के मध्य दिनों की गणना कर सकते हैं। जिस तरह मैंने गणना की है, वह आपकी सुगतमा के लिए विस्तार से लिख रहा हूँ—

जन्म तिथि—२१ अगस्त, १९६०

वाँछित तिथि—१ अक्टूबर, १९९०

२१ अगस्त, १९६० से २० अगस्त तक

के दिन $९० - ६० = ३० \times ३६५$

= १०९५०

लौद के वर्ष $३० + ४$

= ७

२१ अगस्त से ३१ अगस्त तक (१९९० में) दिन

= ११

| | | |
|---------------------|---|-------|
| सितम्बर माह के दिन | = | ३० |
| १ अक्टूबर का १ दिन | = | १ |
| कुल दिनों की संख्या | = | १०९९९ |

इस प्रकार जन्म तिथि से १ अक्टूबर, १९९० तक कुल दिनों की संख्या १०९९९ आ गई। यहाँ तक पाठकों को सम्भवतः कोई भी शंका नहीं रही होगी। पाठक कृपया ध्यान दें कि दिनों की गणना बिल्कुल शुद्ध होना आवश्यक है। अन्यथा चक्र भी त्रुटिपूर्ण बनेगा।

जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि भौतिक, भावात्मक और बौद्धिक चक्रों की अवधि क्रमशः २३, २८ और ३३ दिन सुनिश्चित हैं। इस सिद्धान्त से तीनों चक्र निम्न प्रकार बनेंगे।

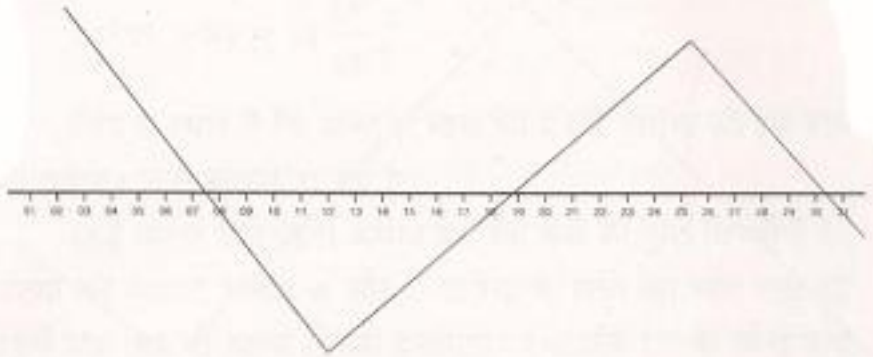
कुल दिनों की संख्या को यदि २३ से भाग दे दें तो हमें पता चल जाएगा कि भौतिक चक्र के कितने दिन पूर्ण हो चुके हैं और कितने शेष हैं।

$$१०९९९ \div २३ = ४७८ \frac{५}{२३}$$

अर्थात् दूसरे शब्दों में कहें कि भौतिक चक्र के ४७८ चक्र पूरे हो चुके हैं और ४७९वें चक्र के ५वें दिन में वह चक्र चल रहा है। भौतिक चक्र समय पैमाने पर किस प्रकार लहराकर चलेगा। यह चित्र से पूर्णतया स्पष्ट है।

चित्र से स्पष्ट है कि भौतिक पक्ष का चक्र अक्टूबर मास की १९वीं तारीख से प्रारम्भ होगा। यदि स्पष्ट न हुआ हो तो पाठक इस प्रकार समझें। अक्टूबर की ५वीं तारीख को भौतिक चक्र का ४७९वाँ चक्र था जो अपना पूरा सर्किल ५ से गिनने पर इस चक्र के निर्धारित २३ दिनों में १९ तारीख से प्रारम्भ होगा। यहाँ से अगले माह नवम्बर में किसी तारीख को यह २३ दिनों का एक चक्र पुनः पूरा करेगा। यह ४८०वाँ चक्र होगा। इसी प्रकार यह चक्राकार गति से आगे बढ़ता रहेगा। एक पूरे चक्र में

अक्टूबर १९९० का भौतिक चक्र Physical Curve For October 1990



भौतिक, भावात्मक और बौद्धिक पक्ष के चक्र मुख्य अक्ष को तीन बार काटते हैं। जिन तिथियों को यह चक्र काटते हैं उन्हें जोखिम वाले अर्थात् संकटपूर्ण दिन कहते हैं।

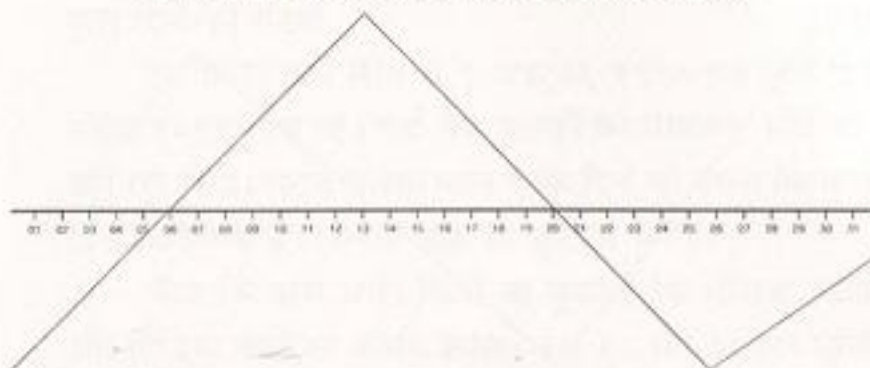
चक्र अपनी प्रारम्भिक स्थिति से तथा निर्धारित दिनों की संख्या के अनुरूप एक सम्पूर्ण चक्र में एक बार अक्ष के ऊपर तक जाकर पुनः उतना ही नीचे आता है। यह अधिकतम ऊँचाई और गहराई सम्पूर्ण चक्र की एक चौथाई होती है।

भौतिक पक्ष के चक्र में हमारा चक्र अक्टूबर मास की १९ तारीख से प्रारम्भ हुआ था। इससे पहले वाला चक्र भौतिक पक्ष के दिनों के अनुरूप ठीक २३ दिन पूर्व सितम्बर माह से प्रारम्भ हुआ होगा।

इस चक्र का मध्य बिन्दु, जैसा कि चित्र से स्पष्ट है, अक्टूबर की ७ और ८ तारीख के मध्य आता है। यहाँ से चक्र के अधो और ऊर्ध्व बिन्दु क्रमशः १३ और १४ तारीखों और २४ तथा २५ तारीखों के मध्य है। चक्र के अपने परिपथ पर चलने के मध्य जोखिम तथा उच्चतम और निम्नतम बिन्दुओं को काटते हुए बढ़ते इन चक्रों का ज्ञान पाठकों को स्पष्ट हो गया होगा। दो अन्य भावात्मक और बौद्धिक चक्रों की चर्चा से

अक्टूबर १९९० का भावात्मक चक्र

Emotional Curve For October 1990



वक्रों को अंकित करना पूर्णतया स्पष्ट हो जाएगा।

चित्र में इन सज्जन की भावात्मक प्रवृत्ति को दर्शाया गया है।

भावात्मक चक्र काल २८ दिनों का माना गया है। अक्टूबर माह तक कुछ दिनों की संख्या १०९९९ को यदि २८ से भाग दे दिया जाये तो वाँछित तिथि तक इस वक्र के पूरे हुए दिनों की कुल संख्या और विशेष रूप से यह ज्ञात हो जायेगा कि वर्तमान वक्र अपने कौन से दिन में भ्रमण कर रहा है अथवा कहें कि यह वर्तमान वक्र किस तिथि को पूरा हो जायेगा ?

$$१०९९९ \div २८ = ३९२ \frac{२३}{२८}$$

अर्थात् भावात्मक वक्र के ३९२वें चक्र पूरे हो चुके थे और ३९३वें चक्र के २३वें दिन में यह चक्र चल रहा था। इस प्रकार अक्टूबर मास की ६ तारीख से प्रारम्भ होकर नवम्बर की ३ तारीख का यह २८ दिन का एक पूरा चक्र पूरा कर लेगा। ६, २० तथा नवम्बर की ३ तारीख जोखिम भरे दिन होंगे। १३ तारीख को वक्र का उच्चतम और २७ तारीख को वक्र का निम्नतम दिन होगा।

बौद्धिक चक्र अन्तिम करने के लिए कुल दिनों की संख्या को इस चक्र के निर्धारित दिनों की संख्या, ३३ से भाग करना पड़ेगा।

$$१०९९९ \div ३३ = ३३ \frac{१०}{३३}$$

चित्र से स्पष्ट है कि अक्टूबर मास की २४वीं तारीख को इस चक्र का वर्तमान चक्र प्रारम्भ हो रहा है।

साढ़े सोलह दिन पहले अथवा कहें कि चक्र की कुल दिनमानों की संख्या का आधार अर्थात् ७ और ८ तारीख के मध्य का भाग चल रहे ३३वें चक्र का भी आधा हिस्सा दर्शाएगा। १५ और १६ के बीच तथा नवम्बर मास की पहली तारीखों को यह चक्र क्रमशः अपने निम्न और उच्चतम बिन्दुओं पर होगा। अक्टूबर माह में ७ और ८ तारीखों के बीच का भाग तथा २४वीं तारीख जोखिम भरी होगी। पाठक इस बात का ध्यान रखें कि किसी भी माह में इन चक्रों की जोखिम पूर्ण तिथियाँ ३ से अधिक नहीं हो सकतीं। इसी प्रकार उच्चतम और निम्नतम तारीखों की संख्या किसी माह में एक-एक ही होगी।

अक्टूबर १९९० का बौद्धिक चक्र

Intellectual Curve For October 1990



इन चक्रों को अंकित करने के लिए निम्न सारणी अति उपयोगी सिद्ध होगी। वांछित तारीखों तक पहुँचने के लिए चक्रों की निर्धारित संख्याओं के चौथाई भाग जोड़ते चले जाएँ। एक बार किसी मास विशेष के लिये इन चक्रों की गणना कर ली जाये फिर अनन्त तक इन संख्याओं की सहायता से चक्रों को बढ़ाना सरल हो जायेगा।

दिनों की संख्या

| चक्र | उच्च | जोखिमपूर्ण | निम्न | जोखिमपूर्ण |
|----------|------|------------|-------|------------|
| भौतिक | ५.७५ | ११.५० | १७.२५ | २३.०० |
| भावात्मक | ७.०० | १४.०० | २१.०० | २८.०० |
| बौद्धिक | ८.२५ | १६.५० | २४.७५ | ३३.०० |

एक बार इन चक्रों को शुद्धता से अपनी जन्मतिथि के अनुरूप अंकित कर लें फिर तो आगे आने वाले किसी भी समय तक इन्हें सुगमता से अंकित किया जा सकता है। गुप्त चक्रों का दूसरा पहलू आता है फलादेश का अर्थात् किस प्रकार इनकी सहायता से अपने लिये शुभ और अशुभ दिनों की गणना कर सकते हैं।

चक्र अपने निश्चित परिपथ पर एक बार पहले मुख्य अक्ष के ऊपर जाते हैं फिर अपने निर्धारित दिनों की संख्या के आधे भाग अक्ष के नीचे भ्रमण करते हैं। अक्ष के ऊपर वाले भाग को धनात्मक क्षेत्र और नीचे वाले को ऋणात्मक क्षेत्र कहते हैं। इसे इस प्रकार समझिये कि एक पूरे चक्र में यह चक्र आधे धनात्मक और आधे ऋणात्मक क्षेत्र में भ्रमण करने वाले होते हैं।

भौतिक चक्र के प्रारम्भ होने से उसके उच्चतम बिन्दु अर्थात् ११.५वें दिन तक व्यक्ति स्वयं को अत्यधिक चेतन, सतर्क, प्रसन्न और वातावरण से पूर्णतया समझौता करने वाला पाता है। प्रारम्भ से बढ़ते-बढ़ते यह स्थिति ११.५वें दिन अपनी चरमसीमा पर होती है। चित्र में

यह स्थिति १९ अक्टूबर से प्रारम्भ होकर २४ और २५ तारीखों के मध्य तक उच्चतम स्थिति तक पहुँची होती है। २५ तारीख से ३० और ३१ तारीखों के मध्य तक शनैः शनैः उपरोक्त बातों का निरन्तर ह्रास होता जाता है। अक्ष को काटने वाले इस समय तक यह स्थिति ह्रास के अपने चरमबिन्दु तक पहुँच चुकी होती है। इस कारण से ही बिन्दु को जोखिम वाला कहा गया है सतर्कता की कमी होने वाले इस दिन विशेष को कोई भी जोखिम पूर्ण कार्य नहीं करना चाहिए।

जो व्यक्ति कोई गाड़ी अथवा अन्य मशीन आदि चलाने का कार्य करते हैं उन्हें इन दिनों में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। सांख्यिकी आंकड़ों के आधार पर यदि दुर्घटनाओं की गणना की जाए तो हम पाएँगे कि अधिकांश हानियाँ व्यक्तियों को इस जोखिम वाले समय में आई है। भौतिक पक्ष के लिए ३१ तारीख से आगामी आधा समय भी विशेष सावधानी वाला होता है।

इन ऋणात्मक दिनों में हमारे निर्णय लेने की क्षमता क्षीण हो जाती है। हम अपने कार्य के प्रति शीघ्र ही थककर उदासीन होना प्रारम्भ कर देते हैं।

६ अक्टूबर से भावात्मक चक्र आरम्भ होता है। ठीक भौतिक चक्र की तरह इसका आधा भाग अर्थात् १४ दिन धनात्मक और आधा ऋणात्मक क्षेत्र में पड़ते हैं। १३ तारीख भावात्मक पहलू का चरमोच्च बिन्दु है। इस समय व्यक्ति भावात्मक रूप से सर्वधिक सबल होता है। ६ तारीख से १२ तक व्यक्ति तुलनात्मक रूप से अधिक क्रियात्मक सिद्ध होता है।

उच्चतम बिन्दु से अगली तारीखें क्रमशः भावात्मक रूप से दुर्बल और खिन्न बनाती चली जाती हैं। चौदह दिन बाद व्यक्ति अत्यधिक अवसन्न और प्रकोपकारी होता है। उदाहरण में यह तारीख अक्टूबर माह की २५ तारीख आती है। भावात्मक चक्र के ऋणात्मक दिनों में व्यक्ति ऊबकर नितान्त एकान्तवासी जीवन जीना अधिक पसन्द करने लगता है।

जोखिम वाले दिन से धनात्मक पहलू प्रारम्भ होने वाले दिन से पुनः वैसी ही स्थिति लौट आती है जैसी कि चक्र प्रारम्भ होने के समय थी।

बौद्धिक चक्र के अनुकूल व्यक्ति का आचरण इस उदाहरण में अक्टूबर माह की २४ तारीख से प्रारम्भ होना दिखाया गया है। बौद्धिक चक्र के धनात्मक दिनों में व्यक्ति अधिक चेतन और चुस्त रहता है। उसकी सोचने की क्षमता प्रबल हो जाती है। विषय के प्रति वह सरलता से आसक्त होकर ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

व्यक्ति का यह बहुत ही सृजनात्मक पहलू होता है। वक्र के प्रारम्भ होने से चौथाई भाग अर्थात् उच्चतम बिन्दु तक व्यक्ति की मानसिकता उत्तरोत्तर कुछ-न-कुछ करने की ललक से चेतन बनी रहती है। उच्चतम बिन्दु से व्यक्ति की इस सृजनात्मक मानसिकता में उत्तरोत्तर हास प्रारम्भ हो जाता है, जो वक्र के आधे में अपनी उच्चता खो चुका होता है। यहाँ व्यक्ति सुस्त और अपने निर्णय लेने में धीरे-धीरे आलसी हो जाता है।

ऋणात्मक दिनों में व्यक्ति की मानसिकता क्षमता धीमी रहती है। वह किसी भी समस्या का समाधान उतनी शीघ्रता से नहीं खोज पाता जितना कि वह धनात्मक दिनों में कर लेता है। इस पहलू में कार्यों में त्रुटियाँ होने की सम्भावनाएँ भी बढ़ जाती हैं। जोखिम वाले दिनों में तो व्यक्ति के विचार और सोचने समझने की क्षमता न्यूनतम हो जाती है। उसके विचार और सोचने समझने की क्षमता न्यूनतम हो जाती है। उसके विचार उसे स्वयं को भी स्पष्ट नहीं होते।

वह अधिक समय तक बौद्धिक कार्य नहीं कर पाता। उसका मन एकाग्र नहीं होता और उसे जोखिम वाला दिन विक्षिप्त सी अवस्था में व्यतीत करना पड़ता है। उदाहरण में बौद्धिक वक्र अक्टूबर माह की २४ तारीख से प्रारम्भ हुआ है। पहली नवम्बर को बौद्धिक स्थिति उच्चतम दिखाई गयी है। ७ और ८ के मध्य तथा २४ तारीखें इस उदाहरण में

जोखिम भरे दिन आते हैं।

तीनों वक्रों से शुभ और अशुभ दिनों की गणना का सिद्धान्त एक मोटरगाड़ी से पूर्णतया स्पष्ट हो जाएगा। पाठक एक ऐसी गाड़ी की कल्पना करें जो तेल, हवा और पानी से पूर्णतया लैस होकर अपनी यात्रा के लिए तैयार हुई है। गाड़ी यात्रा के लिए एकदम ताजा है, स्पष्ट है कि इस समय इसकी कार्यक्षमता अपने उच्चतम स्तर की होगी।

यदि वक्र को वास्तव में एक ढलवा मार्ग मान लें और कल्पना करें कि मोटर उस पर चलनी प्रारम्भ हो गयी है तो वक्र के उच्चतम बिन्दु तक पहुँचने के लिए उसे अपनी अधिकतम शक्ति का हास करना पड़ेगा। यह शक्ति संचित शक्ति होगी। उच्चतम बिन्दु पर पहुँचते-पहुँचते मोटर की अधिकतम गति होगी। यदि यहाँ से मान लें कि ड्राइवर एक्सीलेटर से पाँव हटा देता है तो गाड़ी अपनी क्षमता (मोमेंटम) से भी कुछ देर चलती जाएगी। जोखिम वाले बिन्दु तक पहुँचते-पहुँचते गाड़ी की समस्त शक्ति का हास हो चुका होगा।

नई शक्ति पुनः संचित करने में अथवा कहें कि पुनः प्रारम्भ वाली स्थिति में पहुँचने में उसे निरन्तर एक्सीलेटर दबाए रखना पड़ेगा। स्पष्ट है कि निरन्तर उसकी कार्यक्षमता का हास होता चला जाएगा। जोखिम वाले बिन्दु तक पहुँचते-पहुँचते वह पुनः नई शक्ति संचित कर लेगी और यहाँ से एक शक्ति-स्फूर्ति के साथ उसकी यात्रा का नया चरण प्रारम्भ हो जाएगा।

ठीक ऐसी ही स्थिति मनुष्य की होगी जो मैं पहले स्पष्ट कर ही चुका हूँ। इस विषय पर मैंने शोध करके अपने स्वयं के कुछ तथ्य जोड़े हैं। व्यक्ति अपने जीवन के महत्वपूर्ण क्रियाकलाप यदि इनके अनुसार करता रहे तो दुर्भाग्य को वह दूर कर सकता है।

सौभाग्य के लिए सर्वप्रथम ऐसे दिन चुन लें जिन दिनों में तीनों वक्रों के उच्चतम बिन्दु वाली तारीखें एक ही हों। ध्यान रखें ऐसी

सौभाग्यशाली तारीखें जीवन में बहुत ही कम आती हैं इसलिए इन्हें अनदेखा नहीं कर देना चाहिए। वक्र के उच्चतम बिन्दु वाली तारीखें आप अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर स्वयं भी चुन सकते हैं। देखने में यह कार्य एक बार को कठिन अवश्य प्रतीत होगा।

परन्तु आपने यदि यह शुभ तारीखें प्राप्त कर लीं तो आपके लिए वह वरदान भी सिद्ध हो सकती हैं। मैंने उच्चतम बिन्दु वाली तारीख से क्रमशः १, २, और ३ कम तथा १, २ और ३ अधिक वाली तारीखें। माना यह तारीखें अ+, ब+ और स+ आती हैं। तब भावात्मक पक्ष के लिए इनकी गणना इस प्रकार से होगी—

$$\text{अ} + = \text{उच्चतम तारीख} \pm १ \text{ अर्थात् } १३ + १ = १४$$

$$\text{ब} + = \text{उच्चतम तारीख} \pm २ \text{ अर्थात् } १३ + २ = १५$$

$$\text{स} + = \text{उच्चतम तारीख} \pm ३ \text{ अर्थात् } १३ + ३ = १६$$

दूसरी बार ऋणात्मक चिह्न लेने पर

$$\text{अ} + = १३ - १ = १२$$

$$\text{ब} + = १३ - २ = ११$$

$$\text{स} + = १३ - ३ = १०$$

इस प्रकार उच्चतम वक्र की एक के स्थान पर ३ शुभ तारीखें निकल आईं—१२ और १४, ११ और १५ तथा १० और १६ ठीक इसी प्रकार अन्य दोनों भौतिक और बौद्धिक वक्रों से भी छह-छह तारीखें निकाल लें। यदि कुछ ऐसी तारीखें भी हैं। जो तीनों वक्रों में आई हैं तो उन्हें अलग से कहीं नोट कर लें।

इसी प्रकार तीनों वक्रों की ऋणात्मक तारीखें भी गणना कर लें। भावात्मक वक्र में यहाँ चर्मोच्च बिन्दु २७ तारीख को आता है। माना यह तारीखें क्रमशः अ-, ब-, और स- हैं। तब इनकी गणना निम्न प्रकार से होगी।

$$\text{अ-} = २७ + १ = २८ \text{ और } २७ - १ = २६$$

ब- = २७ + २ = २९ और २७ - २ = २५

स- = २७ + ३ = ३० और २७ - ३ = २४

यह छह तारीखें हुईं—२४, २५, २६, २८, २९ और ३०।

जोखिमपूर्ण इन तारीखों को भी नोट कर लें। शुभ और अशुभ तारीखों को पुस्तक के अध्याय 'शुभ और अशुभ तारीखों' की सारिणी में तुलना करें। यदि शुभ तारीखें दोनों स्थानों पर किसी कार्य मास विशेष में एक ही आती हैं तो सौभाग्य की सीमा द्विगुणित हो जाएगी।

इसके विपरीत यदि जोखिम भरी तारीखों अथवा ऋणात्मक पहलू वाली तारीखों वाली सारणी में भी हों तो इनका प्रभाव बिल्कुल विपरीत समझें। इन दिनों में विशेष सावधानी बरतें। शुभ कार्यों को जहाँ तक हो सके स्थगित करें ऐसे समय में करने का प्रयास करें जहाँ दोनों शुभ स्थानों पर किन्हीं तारीखों की आवृत्ति हुई हो। दुर्भाग्य से तीनों वक्रों के मुख्य अक्ष पर कटान बिन्दु वाली जोखिम की एक ही तारीखें हों तो इन दिनों महत्वपूर्ण कार्य का विचार बिल्कुल ही छोड़ दें और यदि यह तारीखें अशुभ तिथियों की सारणी में भी आ रही हों तब तो प्रभु ही ऐसे में सहायता करें।

“विषम परिस्थितियाँ दुर्भाग्य को जन्म देती हैं।”

— देवीदयाल जी

मायावी वर्ग

मायावी वर्ग अंकों और शब्दों की एक वर्गाकार व्यवस्था है। इसे मैट्रिक्स कहते हैं। अंक अथवा शब्दों को विभिन्न कोष्ठों में इस व्यवस्था से रखा जाता है जिससे कि पंक्ति (रॉ) और स्तम्भ (कॉलम्स) में उनकी संख्या समान रहे। मायावी वर्गों में पंक्ति और स्तम्भ के अंकों का योग दायें, बायें, ऊपर, नीचे अथवा विकर्ण (डायगोनल) दिशा में एक ही अंक होता है।

प्रारम्भ में इन वर्गों को धार्मिक चिह्न के रूप में प्रयोग किया जाता रहा। बाद में धीरे-धीरे इनके चमत्कारी विलक्षण गुणों का पता चला और इन्हें रक्षा कवच, शकुन-परीक्षण, शकुन विचार, रमल, अगम ज्ञान, भविष्यवाणी, पेशीनगाई (डिवीनेशन), वास्तु, फेंगशुई आदि के लिए प्रयोग किया जाने लगा। मायावी वर्गों का मूल स्थान कौन सा था अथवा इनका प्रयोग कब और कैसे प्रारम्भ हुआ यह बताना बहुत ही कठिन है। परन्तु यह सत्य है कि गणितीय गुणों के कारण ही इन्हें मायावी माना जाने लगा।

पश्चिमी देशों में अंकों के स्थान पर अक्षरों से निर्मित वर्ग भी देखे गये हैं। अक्षरोंसे निर्मित सर्वप्रचलित और प्रभावकारी एक वर्ग सेटोर मायावी वर्ग मिलता है। इस वर्ग में बनने वाले अन्य नाम हैं—एरिपो,

टीनेट, ओपरा और रोटस।

ईसा से १ शताब्दी पश्चात पोपे के खण्डहरों में इस मायावी वर्ग के उदाहरण मिले थे। १९वीं और २०वीं शताब्दी के मध्य तक यूरोप और यूनाइटेड स्टेट्स में इसे विभिन्न बीमारियों से रक्षा के लिए, चोरी, आग से बचाव, आर्थिक पहलू को सुदृढ़ करने के लिए और अनेकों अन्य प्राकृतिक आपदाओं से रक्षा हेतु व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता रहा। इस मायावी वर्ग का प्रारूप (चित्र) यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। किस भी धातु पर इसे उभरा हुआ (एम्बोस) खुदवाकर अंगूठी, लाकेट अथवा रखने वाले यन्त्र के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| S | A | T | O | R |
| A | R | E | P | O |
| T | E | N | E | T |
| O | P | E | R | A |
| R | O | T | A | S |

अक्षरों से बने इन वर्गों की उपलब्ध संख्या बहुत ही कम है। प्रारम्भ में यहूदी और अरब लोग इन वर्गों का खूब प्रयोग करते थे। इन वर्गों में वह अपने देवी-देवताओं के पवित्र नाम अंकित करके प्रयोग में लाया करते थे।

चीन में ईसा से ४ शताब्दी पूर्व मायावी वर्गों के प्रमाण मिले हैं। तीन के वर्ग वाले इन प्राकृतिक वर्गों को वह लो-शू कहते थे। उनका विश्वास था कि शासक यू द्वारा यह वर्ग आविष्कार किए गये थे। इन वर्गों

को वह चीन देश का ही रूप मानते थे और इनसे समस्त विश्व को निहित कहते थे। इन वर्गों का मध्य भाग उनके लिए शासक स्वरूप था। इन वर्गों की परिकल्पनाओं को इनके चमत्कारी विलक्षण गुणों के कारण उन्होंने इन्हें देव स्थान, बलि स्थान और अन्य धर्म स्थानों में प्रयोग प्रारम्भ किया। वि-शू नामक चीनी साहित्य में इन वर्गों के चमत्कारी विलक्षण गुणों का वर्णन मिलता है।

आज अधिकांशतः इन वर्गों में १ से लेकर ९ तक के अंकों का प्रयोग चलन में है। शून्य को मायावी वर्गों में अल्पतम स्थान ही दिया गया है।

अंकों में अनोखी और असीम शक्ति निहित है। अंकों को प्रत्यक्ष रूप से देखने से वह साधारण अंक ही प्रतीत होते हैं परन्तु यदि अंकों का धैर्यपूर्वक विश्लेषण किया जाये तो कुछ न कुछ अजूबा हमें इनमें अवश्य छिपा हुआ आभास होने लगेगा। अंक विशेष का अनेक व्यक्तियों पर प्रभाव आपने भी कभी-न-कभी अनुभव किया होगा। अनेकों ऐसे उदाहरण देखने को मिल जायेंगे कि अंक जीवन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में उनके जीवन को निरन्तर प्रभाव देते रहे हैं अथवा कहें कि किसी-न-किसी अंक विशेष का उनके जीवन में निरन्तर प्रभाव बना रहा है।

उदाहरण के रूप में हम अंक ९ को लेते हैं। यह अंक प्राथमिक अंकों में सर्वोच्च स्थान पर आता है और अध्यात्म का द्योतक है। इसलिए इसे पवित्र माना गया है। अनेक पौराणिक प्रसंग ९ अंक से जुड़े हुए हैं। दुर्गा के नौ रूप, ग्रहों की संख्या ९, नवरात्र के दिनों की संख्या ९ है। हमारे १८ पुराण, १८ उपपुराण, १८ स्मृतियाँ और १०८ उपनिषद हैं। इन सबका प्राथमिक अंक भी ९ आता है। (१८ = १ + ८ = ९)।

खगोल शास्त्रियों के मतानुसार नक्षत्रों की कुल संख्या २७ है। प्रत्येक नक्षत्र के ४-४ चरणानुसार कुल संख्या (२७ × ४ = १०८) भी १०८ (१०८ = १ + ० + ८ = ९) आती है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से १०८ बार मन्त्र जप का विशेष प्रभाव माना गया है। यह संख्या ९ के अनुरूप ही क्यों चुनी गई। ऐसा क्यों नहीं हुआ कि उस निश्चित संख्या का योग (प्राथमिक अंक) १ से लेकर ८ तक कुछ अन्य ही होता? इस बात की पुष्टि का भी बहुत ही सुन्दर चित्रण मिलता है। प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति एक घण्टे में ९०० श्वास लेता है। इस दर से १२ घण्टे में यह संख्या १०,८०० और २४ घण्टे अर्थात् एक दिन में २१,६०० होती है इन तब संख्याओं का योग ९ ही आता है। उपांशु जप से नियमानुसार नक्षत्रों के चरणानुसार अखिल ब्रह्माण्ड अर्थात् पूर्णता को प्राप्त करने के लिए १०८ बार मन्त्र जप करना बताया गया है। इससे निरन्तर प्रति श्वास १२ घण्टे अर्थात् १०,८०० जन करने का पुण्य मिलता है।

उक्त चर्चा अध्याय की विषय वस्तु से पृथक अवश्य है परन्तु इस चर्चा में अंकों का जो महत्व छिपा हुआ है, उसके ज्ञान के बिना विषय में विश्वास उत्पन्न होना कठिन है, इस लिए विशेष रूप से यह विवरण यहाँ दिया गया है।

९ अंक का अर्थ है पूर्णता। प्रत्येक मानव जीवन की पूर्णता अध्यात्म में ही निहित है। मुस्लिम धर्म में प्रचलित सर्वाधिक महत्वपूर्ण और पवित्र अंक ७८६ से आप अवश्य ही परिचित होंगे।

यह अंक बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम का प्रतीक माना गया है। इसका अर्थ है—शुरु अल्लाह के नाम से जो निहायत रहम करने वाला और फायदेमन्द है इसका अंकमान भी ९ है।

उल्लेखनीय है इसका मायावी गणित। सम्भवतः इस पर किसी की दृष्टि नहीं पहुँची होगी आप गहनता से पढ़कर यह मनन करिये। ९ अंक को १ से लेकर ९ तक के अंकों से गुणा करके उनका योग करने पर प्राथमिक अंक पुनः ९ आता है।

$$७८६ \times १ = ७८६ = ७ + ८ + ६ = २१ = २ + १ = ३$$

को वह चीन देश का ही रूप मानते थे और इनसे समस्त विश्व को निहित कहते थे। इन वर्गों का मध्य भाग उनके लिए शासक स्वरूप था। इन वर्गों की परिकल्पनाओं को इनके चमत्कारी विलक्षण गुणों के कारण उन्होंने इन्हें देव स्थान, बलि स्थान और अन्य धर्म स्थानों में प्रयोग प्रारम्भ किया। वि-शू नामक चीनी साहित्य में इन वर्गों के चमत्कारी विलक्षण गुणों का वर्णन मिलता है।

आज अधिकांशतः इन वर्गों में १ से लेकर ९ तक के अंकों का प्रयोग चलन में है। शून्य को मायावी वर्गों में अल्पतम स्थान ही दिया गया है।

अंकों में अनोखी और असीम शक्ति निहित है। अंकों को प्रत्यक्ष रूप से देखने से वह साधारण अंक ही प्रतीत होते हैं परन्तु यदि अंकों का धैर्यपूर्वक विश्लेषण किया जाये तो कुछ न कुछ अजूबा हमें इनमें अवश्य छिपा हुआ आभास होने लगेगा। अंक विशेष का अनेक व्यक्तियों पर प्रभाव आपने भी कभी-न-कभी अनुभव किया होगा। अनेकों ऐसे उदाहरण देखने को मिल जायेंगे कि अंक जीवन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में उनके जीवन को निरन्तर प्रभाव देते रहे हैं अथवा कहें कि किसी-न-किसी अंक विशेष का उनके जीवन में निरन्तर प्रभाव बना रहा है।

उदाहरण के रूप में हम अंक ९ को लेते हैं। यह अंक प्राथमिक अंकों में सर्वोच्च स्थान पर आता है और अध्यात्म का द्योतक है। इसलिए इसे पवित्र माना गया है। अनेक पौराणिक प्रसंग ९ अंक से जुड़े हुए हैं। दुर्गा के नौ रूप, ग्रहों की संख्या ९, नवरात्र के दिनों की संख्या ९ है। हमारे १८ पुराण, १८ उपपुराण, १८ स्मृतियाँ और १०८ उपनिषद हैं। इन सबका प्राथमिक अंक भी ९ आता है। (१८ = १ + ८ = ९)।

खगोल शास्त्रियों के मतानुसार नक्षत्रों की कुल संख्या २७ है। प्रत्येक नक्षत्र के ४-४ चरणानुसार कुल संख्या (२७ × ४ = १०८) भी १०८ (१०८ = १ + ० + ८ = ९) आती है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से १०८ बार मन्त्र जप का विशेष प्रभाव माना गया है। यह संख्या ९ के अनुरूप ही क्यों चुनी गई। ऐसा क्यों नहीं हुआ कि उस निश्चित संख्या का योग (प्राथमिक अंक) १ से लेकर ८ तक कुछ अन्य ही होता? इस बात की पुष्टि का भी बहुत ही सुन्दर चित्रण मिलता है। प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति एक घण्टे में ९०० श्वास लेता है। इस दर से १२ घण्टे में यह संख्या १०,८०० और २४ घण्टे अर्थात् एक दिन में २१,६०० होती है इन तब संख्याओं का योग ९ ही आता है। उपांशु जप से नियामानुसार नक्षत्रों के चरणानुसार अखिल ब्रह्माण्ड अर्थात् पूर्णता को प्राप्त करने के लिए १०८ बार मन्त्र जप करना बताया गया है। इससे निरन्तर प्रति श्वास १२ घण्टे अर्थात् १०,८०० जन करने का पुण्य मिलता है।

उक्त चर्चा अध्याय की विषय वस्तु से पृथक अवश्य है परन्तु इस चर्चा में अंकों का जो महत्व छिपा हुआ है, उसके ज्ञान के बिना विषय में विश्वास उत्पन्न होना कठिन है, इस लिए विशेष रूप से यह विवरण यहाँ दिया गया है।

९ अंक का अर्थ है पूर्णता। प्रत्येक मानव जीवन की पूर्णता अध्यात्म में ही निहित है। मुस्लिम धर्म में प्रचलित सर्वाधिक महत्वपूर्ण और पवित्र अंक ७८६ से आप अवश्य ही परिचित होंगे।

यह अंक बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम का प्रतीक माना गया है। इसका अर्थ है—शुरु अल्लाह के नाम से जो निहायत रहम करने वाला और फायदेमन्द है इसका अंकमान भी ९ है।

उल्लेखनीय है इसका मायावी गणित। सम्भवतः इस पर किसी की दृष्टि नहीं पहुँची होगी आप गहनता से पढ़कर यह मनन करिये। ९ अंक को १ से लेकर ९ तक के अंकों से गुणा करके उनका योग करने पर प्राथमिक अंक पुनः ९ आता है।

$$७८६ \times १ = ७८६ = ७ + ८ + ६ = २१ = २ + १ = ३$$

$$७८६ \times २ = १५७२ = ६$$

$$७८६ \times ३ = २३५८ = ९$$

$$७८६ \times ४ = ३१४४ = ३$$

$$७८६ \times ५ = ३९३० = ६$$

$$७८६ \times ६ = ४७१६ = ९$$

$$७८६ \times ७ = ५५०२ = ३$$

$$७८६ \times ८ = ६२८८ = ६$$

$$७८६ \times ९ = ७०७४ = ९$$

योग करने पर—

$$३ + ६ + ९ + ३ + ६ + ९ + ३ + ६ + ९ = ५४ = ९$$

कहीं से कैसे भी चलें ९ अर्थात् पूर्णता या कहें अध्यात्म पर ही राह समाप्त होती है।

ऐस अनेक उदाहरणों से अन्य अंकों के भी मायावी गणित उपलब्ध करवाए जा सकते हैं। परन्तु यह प्रस्तुति हमारा मूल उद्देश्य नहीं है।

अंकों के विभिन्न संयोग रत्नों की भाँति इन अंकों से बने मायावी वर्गों से अद्भूत सूक्ष्म व अति सूक्ष्म स्पन्दन अपने विभिन्न गुण धर्मों के अनुरूप व्यक्ति के शरीर में अपना प्रभाव छोड़ते हैं।

यह सम्पूर्ण प्रक्रिया कि रत्नों की भाँति इन मायावी अंकों से बने यन्त्र आदि मनुष्य को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं, सूक्ष्मवाद द्वारा ही समझी जा सकती है। स्थूलवाद इस वैज्ञानिक प्रक्रिया का सम्भवतः कोई सन्तुष्ट उत्तर दे पाए शरीर में इन मायावी वर्गों के अपने-अपने गुणों के अनुरूप व्याप्त चेतना कुछ संकेत विकिरणों को सूक्ष्म स्तर पर ग्रहण करती है और तदनुसार शरीर में परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगते हैं। इस प्रक्रिया में जो भी परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं वह संकेत-विकिरणों की तरह अदृश्य न होकर इन्द्रियजनक स्थूल होते हैं।

सार-संक्षेप यह है कि रत्नों की भाँति मायावी वर्गों से जो सूक्ष्म

तरंगे प्रभावित होती हैं वह चेतना प्रधान है। इस विषय को अन्य विज्ञानों की भाँति किसी प्रयोगशाला में नहीं आँका जा सकता। जहाँ विज्ञान की समझ की सीमा समाप्त होती है, समझिए वहाँ से इस मायावी विद्या का श्रीगणेश होता है।

मायावी वर्गों से लाभ प्राप्त करने के लिए इन वर्गों से बनी अंगूठियों को मैंने बहुत ही प्रभावशाली पाया है। इनके पीछे क्या वैज्ञानिक आधार है, यह अंगूठियाँ कैसे कार्य करती हैं, अब तक अनबूझा है। अंकों का ईश्वरीय सत्ता के साथ सम्बन्ध, इन की पीड़ा पहुँचाने वाले ग्रह और नक्षत्रों के मध्य एक चमत्कारी रूप से कार्य करने की प्रक्रिया, मनुष्य को एक दैविक शक्ति प्रदान करती हैं।

इस अध्याय में इन तथ्यों के अनुरूप मैंने कुछ अपने स्वयं के अध्ययन के आधार पर प्रामाणिक परिणाम निकाले हैं।

प्रत्येक मानव शरीर में इन्द्र धनुषीय रंगों के समान एक प्रभामण्डल (ओरा) निरन्तर प्रभावित होता रहता है। इस प्रभामण्डल का आभास अतीन्द्रिय शक्तियों की सहायता से तो होता ही है योग द्वारा भी इनका आभास किया जा सकता है। आज के वैज्ञानिक युग में 'क्रिलियोन फोटोग्राफी' की सहायता से मानव शरीर के चारों ओर उपस्थित प्रभामण्डल का विश्लेषात्मक अध्ययन सुगमता से किया जा सकता है। इसकी सहायता से ही इस बात का पता चला है कि हाथ की तर्जनी ऊँगली में नीले रंग का प्रभामण्डल प्रवाहित होता रहता है। गुरु (जुपीटर) ग्रह से इसीलिए इस ऊँगली का सम्बन्ध माना जाता है और इस कारण से ही गुरु ग्रह से सम्बन्धित रत्न पुखराज को भी इसी ऊँगली में पहनने की सलाह दी जाती है। मध्यमा ऊँगली के नीले अथवा बैंगनी वर्ण के प्रभामण्डल के कारण इसे शनि ग्रह का वास माना गया है और इस ग्रह से सम्बन्धित रत्न नीलम को इस ऊँगली में धारण करवाया जाता है। अनामिका में (अंगूठी) रक्त वर्ण और कनिष्ठका में (छोटी ऊँगली) हरे प्रभामण्डल के कारण

इन ग्रहों अर्थात् सूर्य और बुद्ध से सम्बन्धित रत्न क्रमशः माणिक और पन्ना पहनने का प्रचलन है। विषय की इतनी सूक्ष्मता में जाने का प्रयास कम लेखकों ने ही किया है। रत्नों के विस्तृत वैज्ञानिक विवरण के लिए पढ़ें मेरी पुस्तक 'स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न'। इस पुस्तक में मैंने इन्दौर के डॉ. क्रान्तीश शिवहरे के साथ मिलकर पी.आई.पी. चित्रों द्वारा यह दर्शाया है कि कोई रत्न, विग्रह, यंत्र आदि कैसे चैतन्य हो जाता है।

रत्न उपलब्ध कराना परिश्रम पूर्ण और मूल्यवान है। प्रत्येक व्यक्ति सम्भवतः इन्हें सुगमता से प्राप्त न कर पाये। उनके लिए विशेष रूप से मायावी वर्गों से निर्मित यह अंगूठियाँ सुगम एवं सुलभ सिद्ध होंगी। दुर्भाग्य दूर करने के लिए सर्वप्रथम अपनी जन्म तिथि का प्राथमिक अंक बना लें। यथा—

२५ नवम्बर, १९७३

इसके सारे अंकों को जोड़ने पर—

२५ + ११ + १९७३

२ + ५ + १ + १ + १ + ९ + ७ + ३ = २९

२९ को पनुः जोड़ने पर—

२९ + २ + ३ = ११

११ को एक बार और जोड़ा—

११ = १ + १ = २

इस प्रकार २५ नवम्बर, १९७३ को जन्मे किसी व्यक्ति का प्राथमिक अंक २ आ गया। प्राथमिक अंक को एक बार और स्पष्ट कर लें। किसी अंक को जब तक जोड़ते चले जायें जब तक कि प्राप्तांक इकाई न रहे जाये। इस इकाई अंक को ही प्राथमिक अंक कहते हैं।

इन प्राथमिक अंकों की संख्या १ से लेकर ९ अंक तक हो सकती है। शून्य को यहाँ अपने प्रयोग में स्थान नहीं दिया गया है। एक से लेकर

नौ तक का प्रत्येक अंक आकाशमण्डल के किसी-न-किसी ग्रह का द्योतक है। अंक १ का स्वामी ग्रह सूर्य माना गया है। ठीक इसी प्रकार २ का ग्रह चन्द्रमा, ३ का नेपच्यून, ८ का शनि और ९ अंक का मंगल स्वामी ग्रह माना गया है।

व्यक्ति की जन्म तिथि के प्राथमिक अंक के अनुरूप इन ग्रहों के अलग-अलग ९ मायावी वर्ग बनाए गये हैं। अपनी जन्म तिथि के प्राथमिक अंक के अनुरूप सम्बन्धित ग्रह के लिए बनायी गयी मायावी वर्ग की अंगूठी का विवरण सर्वप्रथम इस पुस्तक के माध्यम से प्रकाश में लाया जा रहा है।

अनेक व्यक्तियों को अपनी जन्मतिथि पता नहीं होती है। ऐसी स्थिति में अपने नाम का अंक निकाल कर उसके अनुरूप इन अंगूठियों को प्रयोग किया जा सकता है। नामांक निकालने के लिए एक सारणी की आवश्यकता पड़ेगी, उसका विवरण इस प्रकार है।

| अक्षर | सम्बन्धित अंक |
|---------------|---------------|
| A, I, J, Q, Y | १ |
| B, K, R | २ |
| C, G, L, S | ३ |
| D, M, T | ४ |
| E, H, N, X | ५ |
| U, V, W | ६ |
| O, Z | ७ |
| F, P | ८ |

अंग्रेजी का प्रत्येक अक्षर एक-एक अंक का सूचक है। इन्हीं की सहायता से नामांक निकालना सरल प्रतीत होने लगेगा।

माना रनित किशोर नाम के व्यक्ति को अपनी जन्म तिथि का पता नहीं है और उन्हें मायावी वर्ग की अंगूठी प्रयोग करने के लिए अपना

नामांक निकालना है। यहाँ हम नाम अक्षरों के स्थान पर उनकी सीध में रखे अंक रखकर उनका योग जब तक करते रहेंगे, जब तक कि हमें प्राथमिक अंक न मिल जाये।

R २

A १

N ५

I १

T ४

K २

I १

S ३

H ५

O ७

R २

E ५

१३२५

$१३ + २५ = १ + ३ + २ + ५ = ११ = १ + २ = ३$
रनित किशोर का नामांक इस प्रकार ३ आ गया। यहाँ जन्म तिथि की अनुपस्थिति में अंक दो के अनुरूप चन्द्रमा ग्रह का मायावी वर्ग प्रयोग किया जाएगा।

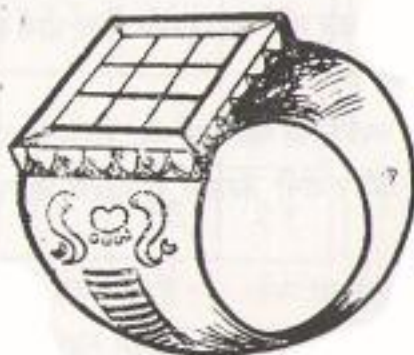
सौभाग्य से जन्म तिथि का प्राथमिक अंक और नामांक यदि एक ही अंक है तो दुर्भाग्य व्यक्ति का द्वार खटखटाएगा ही नहीं। व्यक्ति की जन्म तिथि तो सुनिश्चित है, उसमें कोई भी परिवर्तन सम्भव नहीं। हाँ व्यक्ति के नाम में अक्षरों के कुछ फेर-बदल से जन्म तिथि के अनुरूप नामांक बनाया जा सकता है। दुर्भाग्य दूर करने का यह एक अनुभूत उपाय है। इस विषय का विस्तृत विवरण यहाँ सम्भव नहीं है। जिज्ञासु पाठक विषय से सम्बन्धित मेरी पुस्तक 'अंकों से चुनिए बच्चों के भाग्यशाली नाम' पढ़कर लाभ उठा सकते हैं।

अंक १ का स्वामी ग्रह सूर्य है। १ अंक में जन्मे अथवा १ नामांक वाले व्यक्ति सूर्य का मायावी वर्ग पहनें।

सूर्य यन्त्र

| | | |
|---|---|---|
| ८ | १ | ६ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | ९ | २ |

सूर्य के तीन नक्षत्रों कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में सूर्य के मायावी वर्ग की अंगूठी किसी सुनार से सोने में बनवा लें। सुविधा के लिए अंगूठी की आकृति चित्र में दर्शाई गई हैं। ठीक ऐसी ही अंगूठियाँ अन्य अंकों के लिए भी बननी हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखना है कि अंगूठी इन तीन में से किसी एक के नक्षत्र काल में ही बनवायी जाये। नक्षत्र के लिए किसी भी पंचांग अथवा योग्य ज्योतिषी की सहायता ली जा सकती है। यन्त्र इस प्रकार बनवाना है जिससे कि उसका सीधी ओर वाला भाग उभरा हुआ बने। उभरे यन्त्र को प्राप्त करने के लिए निर्देशित धातु की चादर पर एक ओर से उल्टी आकृति बनाई जाएगी। यह आकृति ठीक किसी दर्पण में बनने वाली उल्टी प्रतिबिम्ब की भाँति होगी। इस प्रकार चादर के दूसरी ओर यन्त्र स्वतः उभरा हुआ अंकित हो जाएगा। अंगूठी की नाप दायें हाथ की अनामिका उँगली की लेनी है।



अनामिका में यह अंगूठी सूर्य के उक्त नक्षत्रों में से किसी एक में धारण करनी है। यदि यह इन नक्षत्रों के साथ-साथ सूर्य की होरा में पहन ली जाये तो प्रभाव द्विगुणित हो जायेगा। धारण करने से एक दिन पूर्व अंगूठी को कच्चे दूध, गंगाजल, शहद, घी और तुलसी मिश्रित थोड़े से मिश्रण में रखकर पवित्र कर लें। इस जल से उक्त समय में निकाल कर धारण कर लें।

अंक २ का स्वामी ग्रह चन्द्रमा है। इससे सम्बन्धित धातु चाँदी है। अंक २ वाले व्यक्ति चन्द्रमा का मायावी वर्ग चित्र ५ चाँदी की चादर में बनवाकर उसकी अंगूठी बनवायें।

चन्द्र यन्त्र

| | | | |
|---|----|---|---|
| ७ | २ | ९ | |
| ८ | ६ | ४ | → |
| ३ | १० | ५ | → |

पहले की भाँति अंगूठी बनवाने के लिए चन्द्रमा के तीन नक्षत्रों रोहिणी, हस्त और श्रवण में से किसी को चुन लीजिये। जब अंगूठी बन जाए तो इसे पहले की तरह पवित्र करके चन्द्रमा के किसी नक्षत्र और चन्द्रमा की होरा में धारा कर लीजिए। इसके लिए दायें हाथ की कनिष्ठिका ऊँगली उपयोग करनी है।

अंक ३ वाले व्यक्तियों को शुरु का मायावी वर्ग सोने में अंकित करवाकर दायें हाथ की तर्जनी ऊँगली में धारण करना है।

गुरु यन्त्र

| | | |
|----|----|----|
| १० | ५ | १२ |
| ११ | ९ | ७ |
| ६ | १३ | ८ |

गुरु की मायावी वर्ग वाली अंगूठी गुरु के तीन नक्षत्रों पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वाभाद्रपद में से किसी एक नक्षत्र के काल में बनवानी है और इसको धारण करने के लिए उक्त नक्षत्रों में से गुरु की किसी भी होरा का समय चुनना है।

अंक ४ वाले व्यक्ति यूरेनस ग्रह से सम्बन्धित अंगूठी टिन धातु में बनवायें।

अंगूठी बनवाने के लिए सूर्य के तीन नक्षत्रों में से ही किसी एक नक्षत्र काल को चुनना है और धारण करने के लिए भी सूर्य की ही होरा चुननी है। यहाँ पर अंगूठी अनामिका के लिए न बनकर कनिष्ठिका ऊँगली के लिए बनेगी।

यूरेनस यन्त्र

| | | |
|----|----|----|
| १३ | ८ | १५ |
| १४ | १२ | १० |
| ९ | १६ | ११ |

अंक ५ का स्वामी ग्रह बुध है। ५ अंक वाले व्यक्तियों को दायें हाथ की कनिष्ठिका में पीतल धातु में बुध के मायावी वर्ग की अंगूठी

धारण करनी चाहिए।

बुध यन्त्र

| | | |
|----|----|----|
| ९ | ४ | ११ |
| १० | ८ | ६ |
| ५ | १२ | ७ |

बुध ग्रह के तीन नक्षत्र हैं—आश्लेषा, जयेष्ठा और रेवती।

अंक ६ वाले व्यक्ति शुक्र ग्रह से सम्बन्धित मायावी वर्ग की अंगूठी धारण करें।

शुक्र यन्त्र

| | | |
|----|----|----|
| ११ | ६ | १३ |
| १२ | १० | ८ |
| १४ | ७ | ९ |

शुक्र ग्रह के तीन नक्षत्रों, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा काल में यह अंगूठी बनवानी चाहिए। धारण करने के लिए उक्त नक्षत्रों में शुक्र की होरा चुन लें।

७ अंक का स्वामी ग्रह नेपच्यून है। अंक ७ का मायावी वर्ग ठाक चन्द्रमा के नक्षत्रों और होराओं के अनुसार प्रयोग करना है। यह अंगूठी अनामिका उँगली में भी धारण की जा सकती है।

नेपच्यून यन्त्र

| | | |
|----|----|----|
| १४ | ९ | १६ |
| १५ | १३ | ११ |
| १० | १७ | १२ |

८ अंक वाले व्यक्तियों को शनि के मायावी वर्ग वाली अंगूठी धारण करना श्रेष्ठ सिद्ध होता है।

शनि यन्त्र

| | | |
|----|----|----|
| १२ | ७ | १४ |
| १३ | ११ | ९ |
| ८ | १५ | १० |

यह अंगूठी जस्ते अथवा लोहे में शनि के नक्षत्रों पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद में बनवानी चाहिए। इसको दायें हाथ की मध्यमा ऊँगली में शनि की होरा में पवित्र करके धारण किया जाता है।

९ अंक वाले व्यक्तियों को इसके स्वामी ग्रह मंगल का मायावी वर्ग में प्रयोग करना चाहिए।

मंगल यन्त्र

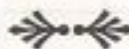
| | | |
|---|----|----|
| ८ | ३ | १० |
| ९ | ७ | ५ |
| ४ | ११ | ६ |

मंगल के नक्षत्रों मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा में से किसी एक में तांबे की अंगूठी दाएँ हाथ की अनामिका ऊँगली की नाप की बनवानी चाहिए। धारण करने के लिए मंगल के किसी नक्षत्र के साथ मंगल की ही होरा चुनना चाहिए।

मायावी वर्गों की अंगूठियाँ बनवाना सम्भवतः सर्वसुलभ न हो पाए अथवा समयाभाव में सब क्रियाकलाप सम्भव न हो। ऐसी स्थिति में मैंने इसका एक विकल्प ढूँढा है। आप भी इस प्रयोग से दुर्भाग्य को दूर भगा सकते हैं।

सर्वप्रथम पूर्व की भाँति अपना जन्मांक अथवा नामांक गणना कर लें। जिस मायावी वर्ग की रचना करनी है वह तथा उससे सम्बन्धित नक्षत्र और होराकाल देख लें। इस होराकाल में ही आपको भोजपत्र पर, लाल चन्दन, अष्टगन्ध और केसर मिश्रित रंग और चमेली की कलम से सम्बन्धित वर्ग बनाना है। वर्ग बनाते समय पवित्रता, मनोहर वातावरण और प्रसन्नचित्त प्रवृत्ति होना अनिवार्य है। धूप-दीप, नैवेद्य अपनी सुविधा और श्रद्धानुसार प्रयोग करें तो और भी शुभ है। यन्त्र निर्माणकाल में निरन्तर मौन रखकर अपने इष्ट देव का ध्यान मात्र करते रहें। मन में निरन्तर यह धारणा जाग्रत करते रहें कि यह यन्त्र आपके दुर्भाग्य को दूर करने में पूर्णतया सक्षम है। यहाँ आपका अटूट विश्वास अवश्य ही कार्य करेगा।

यन्त्र बन जाने पर उस होराकाल में ही घर के किसी पवित्र स्थान में इसे पूरब अथवा पश्चिम की ओर इसका मुँह करके स्थापित कर दें। नित्य यन्त्र को यथा श्रद्धा धूप-दीप दिखाकर पूजा अर्चना करें। किसी भी महत्वपूर्ण कार्य के लिए घर छोड़ने से पूर्व इस यन्त्र के दर्शन करके श्री गणेश करें, प्रभु निश्चित रूप से आपको सौभाग्यशाली बनाएँगे।



“आज की उपलब्धियाँ ही हमारे दुर्भाग्य का कारण बन रही हैं।”

— गोपाल राजू

रत्नों से दूर करें दुर्भाग्य

आपकी राशि मेष है। इसका स्वामी ग्रह मंगल कुण्डली के अष्टम भाव में पड़कर अनिष्ट करवा रहा है। दूसरे मेष राशि पर शनि की साढ़े साती चल रही है। आप मंगलवार को सवा पाँच रत्ती का मूंगा धारण करें। आपके बच्चे की सिंह राशि है। यह मस्तिष्क को उग्र बना रही है। पढ़ाई से मन भागेगा। घर वालों की सुनेगा नहीं। रविवार को पौने ३ रत्ती का माणिक बच्चे को धारण करवाइए। इसका विचलित मन शान्त होगा, पढ़ाई में एकाग्रता बढ़ जाएगी।

यह अथवा इनसे मिलते-जुलते रत्नों की रंग-बिरंगी अंगूठियाँ किसी को पहने देखकर अथवा उसके अन्य बाह्य आडम्बर और आर्कषण जैसे वेश-भूषा, बाल, लम्बा-सा तिलक, गले में रुद्राक्ष आदि की दो चार मालाएँ आदि से आप सहज ही उससे प्रभावित होकर अपने अनुरूप रत्न पूछ बैठते हैं? वह आपका नाम पूछकर आँखें बन्द कर ऊँगलियों में गिनती करके आपके अनुरूप एक रत्न का नाम बता देता है। आपका एकदम से दूसरा जिज्ञासा भरा प्रश्न होता है रत्न के भार को लेकर।

वह महाशय भी झट से कोई औने-पौने अथवा सवाए भार को रत्ती में बता देते हैं। आप उसकी इस गणना से प्रभावित भी होते हैं कि उसने सम्भवतः जल्दी से कोई गणितीय गणना करके आपके अनुरूप भार

रत्तियों में बता दिया। आप बौद्धिकता से सोचें कि आपके लिए रत्न का क्या उचित चुनाव हुआ है? क्या कोई व्यक्ति जो ज्योतिष, अंक शास्त्र अथवा अन्य गुह्य ज्ञान आदि से सर्वथा अनभिज्ञ है, आपके लिए उचित रत्न की गणना कर सकता है? ऐसी ही श्रेणी में आने वाले अनेक सुनार, रत्न विक्रेता अथवा अन्य आपको ठगने के अलावा और कुछ नहीं कर रहे।

रत्न पहनने से पहले आप निम्न बातों को ध्यान पूर्वक पढ़ें और मनन करें।

आपके लिए रत्न पहना आवश्यक है भी अथवा नहीं। बिना कारण मजमे वालों की तरह रत्न, माला आदि से अपनी वेशभूषा बदलने का कुछ औचित्य है भी?

आप जो रत्न पहन रहे हैं, क्या उनका वास्तव में उचित चयन हुआ है? क्या कोई अनपढ़ पण्डित, रत्न विक्रेता अथवा सुनार यह जटिल कार्य कर सकता है कि आपके अनुकूल रत्न की गणना कर दें?

रत्न धारण करने के पीछे उसके डेढ़, ढाई अथवा औने-पौने रत्ती भार का क्या महत्व है? मैं ३० वर्ष के गूढ़ अध्ययन और अनुभव के बाद आज तक रत्नों के इस भार की परिकल्पना को नहीं जान पाया। वास्तव में इसका कोई महत्त्व है ही नहीं। यह मात्र व्यवसायिकता है। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि इस भार के पीछे कोई ठोस आधार है ही नहीं और न ही समस्त विश्व में इस तर्क का कोई सन्तोषजनक उत्तर ही कोई दे पाएगा। यह बात आधारहीन है। व्यक्ति सवा पाँच रत्ती, ढाई रत्ती, पौने ३ रत्ती, साढ़े ७ रत्ती अथवा ऐसे ही अन्य भार के रत्न मांगते समय यह स्वयं क्यों नहीं सोचते कि क्या वास्तव में उन्हें इन भारों के रत्न मिल भी जाएँगे? जैसे सुनार अथवा रत्न विक्रेता आपके लिये इन औने-पौने भार के रत्न लिए हुए बिल्कुल तैयार ही बैठा है। जैसे यह रत्न आपकी माँग के अनुरूप भार के ही तरहवा कर मँगाए गए हैं। अधिकांश रत्न

विक्रेता आपकी मांग के अनुसार ही कोई न कोई आस-पास के भार वाला रत्न आपको पकड़ा देगा। आपके पास कोई मापदण्ड है?

एक अन्य आम प्रश्न प्रत्येक अबोध पाठक के मन में उठता है कि रत्न व्यक्ति पर कार्य करते भी हैं अथवा यह मात्र कपोल कल्पना और अन्धविश्वास ही है। इस प्रश्न को लेकर वर्षों तक मेरे मन में भी उथल-पुथल तथा शंका रही है। मैं व्यावहारिक हूँ, इसलिए किसी भी तर्क से पहले उसका प्रायोगिक अथवा वैज्ञानिक पक्ष पहले टटोल कर देख लेता हूँ।

मानसिक संत्रास, विभिन्न बीमारियों तथा जीवन की अनेक समस्याओं जैसे आर्थिक, वैवाहिक, न्यायिक, व्यापारी, नौकरी अथवा बच्चों से सम्बन्धित आदि से लड़ने के लिए विश्व स्तर पर आज अनेक ज्योतिषी हस्तरेखाविद्, तान्त्रिक, वैज्ञानिक आदि प्रयत्नशील हैं। इन सबका समाधान पाने के लिए विगत ३० वर्षों से मैं भी प्रयत्नशील हूँ। अथक प्रयासों के बाद तथा अनेक भुक्तभोगियों पर सफलतम परीक्षण करने के बाद मैंने भी विभिन्न रत्नों के संयोग बनाए है। इनमें ज्योतिष जगत की सर्वाधिक चर्चित पुस्तक 'लाल किताब' के अनुभव टोटके सम्मिलित करके इनको प्रयोग में लाने के लिए नक्षत्रों तथा विभिन्न होराओं की सहायता से उन्हें प्रयोग करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण क्षण चुने हैं। मेरा यह शोधपूर्ण कार्य सर्वथा मौलिक है।

विश्व में कहीं भी किसी रत्न को सर्वाधिक प्रभावशाली बनाने का यह प्रयोग मेरा अपना है। इस बात की मेरी चुनौती है कि रत्न को जागृत करने की यह विधि आज तक किसी ने भी नहीं अपनाई है। इन सबसे ऊपर अन्ततः मैंने इसमें पूजा-पाठ के कुछ सरलतम प्रयोग जोड़कर ऐसा प्रयास किया है कि रत्न व्यक्ति पर प्रभावी सिद्ध हो सकें।

बायोकेमिक चिकित्सा में शरीर के कुछ लवणों की क्षति पूर्ति के लिए उस लवण विशेष की एक निश्चित मात्रा रोगी को दी जाती है।

शरीर की उस लवण से जब आपूर्ति हो जाती है तो शरीर स्वस्थ होने लगता है। आदिकाल में धातुओं के गहने तथा कुछ जड़ी-बूटियाँ इस उद्देश्य को लेकर भी पहनी जाती थीं कि वह शरीर में होने वाली खनिज लवणों की क्षति पूर्ति करें। ताँबा, जस्ता, सोना, पीतल आदि धातुओं के गहने इस बात का ठोस प्रमाण हैं।

जल चिकित्सा में रोग के अनुसार रंग-बिरंगी बोतलों में पानी भरकर सूर्य के प्रकाश में एक निश्चित समय तक रखकर उसमें उपचार के गुण पैदा किए जाते हैं। जिस रंग का जल में समावेश करना होता है, उसी रंग की बोतल में पानी भरा जाता है। सूर्य के इन्द्रधनुषीय अन्य रंग बोतल द्वारा त्याग दिए जाते हैं और बोतल के रंग वाली सूर्य की किरण के गुण जल में समाहित हो जाते हैं।

ठीक इसी प्रकार रत्नों के कार्य करने का भी सिद्धान्त है। रत्न कैसे कार्य करते हैं, यह बात एक सरल घरेलू प्रयोग से स्पष्ट हो जायेगी। मान लीजिए आप अपने सामने टेबल लैम्प रखकर कोई पुस्तक पढ़ रहे हैं। एक क्षण के लिए पुस्तक तथा स्वयं को आप स्थिर मान लें। हाँ, लैम्प को आप इच्छानुसार आगे-पीछे अथवा किसी भी दिशा में खिसका सकते हैं। सामने रखे लैम्प की स्थिति से पढ़ने में निश्चय ही आपको कठिनाई आएगी। थोड़ी देर पढ़ भी लें तो आँखें कम समय में ही थकने लगेंगी।

यदि लैम्प को धीरे-धीरे आप किताब के पीछे ले जायें, तो क्रमशः पुस्तक पढ़ने में आपको सुविधा दिखलाई देगी। किताब वही है, लैम्प को केवल एक सुखद प्रकाश देने वाली स्थिति में रख दिया। थोड़ा प्रयास और करें तो लैम्प की आप एक ऐसी स्थिति ढूँढ़ लेंगे जहाँ से किताब पर प्रकाश पढ़ने पर आपको सर्वाधिक सुखद प्रकाश के कारण सन्तोष मिलने लगे और आँखों में आप न्यूनतम थकान अनुभव करने लगे।

रत्न भी इस सर्वाधिक सन्तोष वाली स्थिति में व्यक्ति को पहुँचाने की क्षमता रखते हैं। व्यक्ति के जीवन पर सूर्य अथवा अन्य ग्रहों के पड़ने

वाले दुष्प्रभाव को रत्न कम कर सकते हैं। ग्रह और मनुष्य के मध्य रत्न एक प्रिज्म अथवा लेंस के रूप में कार्य करते हैं। इच्छित ग्रह रश्मियों को यह शरीर में एक स्थान पर केन्द्रित कर देते हैं जहाँ से शरीर के रोमछिद्रों द्वारा वह शरीर में प्रविष्ट हो जाती हैं।

यह रश्मियाँ जैसा प्रभाव जल में छोड़ती हैं, वैसे ही यह सीधे व्यक्ति के शरीर में कार्य करती हैं। अन्य रंग की किरणें अर्थात् ऊर्जा रश्मि रत्न द्वारा ग्रहण न किये जाने के कारण निष्प्रभाव हो जाती हैं। रत्न व्यक्ति पर प्रभाव डालते हैं। इसका कोई विकल्प नहीं है।

रत्नों का वैज्ञानिक आधार है। पदार्थ से हुई रचना वाले शरीर पर उसकी चेतना का प्रभुत्व होता है। जब रत्न शरीर के संवेदनशील भाग पर स्पर्श करते हैं तब तन और मन दोनों पर सूक्ष्म तरंगे प्रवाहित होती हैं। यह ऐसा अदृश्य प्रभाव है जिसे अन्य वैज्ञानिक विषयों की तरह प्रयोगशाला में नापा-तोला नहीं जा सकता। इसका मुख्य कारण यह है कि सूक्ष्म और अदृश्य चेतना विज्ञान का क्षेत्र बिल्कुल अलग विषय है।

विज्ञान की बौद्धिकता, प्रयोग अथवा कार्य क्षेत्र की सीमा जहाँ समाप्त हो जाती है, समझिए वहाँ से अदृश्य चेतना विज्ञान की सीमा प्रारम्भ होती है। इस सीमा के बाद का अध्ययन 'इंडक्टिव मैथड' के अन्तर्गत आता है। यह सब गुह्य विद्या का विषय है।

विज्ञान निरन्तर गुह्य विद्याओं के अध्ययन कार्य में लगा हुआ है। फोटो लेने की एक क्रिलियोन विधि विकसित की गई है। इस फोटोग्राफी से शरीर के चारों ओर निरन्तर बहने वाले 'ओरा' अर्थात् व्यक्ति के आभामण्डल तक का चित्र खींचने में सफलता प्राप्त की गई है। 'ईथर' और अर्थात् आभामण्डल का ज्ञान बिरले योगी अथवा किसी सच्चे अतीन्द्रिय दृष्टा को ही होता है। आप आश्चर्य करेंगे कि इसका ज्ञान अबोध पशु-पक्षियों को प्राकृतिक रूप से होता है। एक गाय रक्षक और एक कसाई में एकदम से भेद कर लेती है। यह भेद ज्ञान उनके शरीर के

चारों ओर बहने वाले आभामण्डल द्वारा ही होता है।

एक अन्य चिन्तन का प्रश्न है कि रत्नों को शरीर में कहाँ धारण किया जाये। शरीर का सबसे संवेदनशील भाग कौन सा है, जहाँ रत्न सर्वाधिक प्रभावशाली परिणाम दें? यही बात रत्न धारण के लिए हाथों की दसों उँगलियों के विषय में है। कौन सा रत्न किस उँगली में धारण करें? यह भी एक गूढ़ विषय है, जिसका उत्तर रत्न विज्ञान का कोई दक्ष पण्डित, जिसका वर्तमान ज्योतिष और रत्न विज्ञान में गहन अध्ययन है, वही दे पायेगा।

हमारे शरीर का रिसीवर अर्थात् तरंगे ग्रहण करने वाला सबसे संवेदनशील स्थान दोनों भौहों के बीच भृकुटी है। यह ज्ञान विरलों को ही होगा। आप दैनिक जीवन में देखते होंगे कि किसी अनसुलझी समस्या का समाधान पाने के लिए व्यक्ति अपनी भृकुटी को चुटकी से सहलाने लगता है। यह सब प्राकृतिक है, व्यक्ति को इसका पता कुछ नहीं है। इसका पता लगाना सम्भव भी नहीं है क्योंकि इसके अध्ययन की न तो सुविधायें उपलब्ध हैं और न ही कोई इस दिशा में प्रयत्नशील होना चाहता है।

रत्न यदि अग्र मस्तक के इस भाग पर छूते रहें तो यह सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध होंगे। परन्तु व्यवहारिक दृष्टिकोण से यह सम्भव नहीं हैं। देखने में भी यहाँ लटका हुआ रत्न भद्दा लगेगा। पहले राजा-महाराजाओं के मुकुट में आगे रत्न जड़े होते थे जो अग्र मस्तक को स्पर्श करते थे। इसके बाद जो प्रभावशाली भाग हैं, वह हैं—सीना, गला, बाजू आदि। परन्तु यहाँ भी रत्न धारण करना सुविधाजनक नहीं लगता। सबसे सुविधाजनक स्थान है व्यक्ति की उँगलियाँ। यहाँ पहने हुए रत्न सुन्दरता की दृष्टि से भी प्रयोग किए जा रहे हैं।

किस उँगली में कौन सा रत्न धारण किया जाए इसका एक वैज्ञानिक कारण है। इसका पता 'क्रिलियोन फोटोग्राफी' के प्रयोग से चला है।

प्रत्येक व्यक्ति की उँगलियों के अग्रभाग से निरन्तर प्रभामण्डल प्रवाहित होते देखे गए हैं। व्यक्ति की तर्जनी उँगली से नीला, मध्यमा से बैंगनी, अनामिका से लाल और कनिष्ठिका से निरन्तर हरा वर्ण प्रवाहित होता रहता है। विभिन्न ग्रहों के वर्णों के अनुरूप उँगलियों में इन ग्रहों का प्रभुत्व अथवा स्थान निर्धारित किया गया है। इसीलिए ही यह निर्धारित है कि किस उँगली में कौन-सा रत्न धारण किया जाए। पुखराज के लिए तर्जनी उँगली निर्धारित की गई है।

इसी प्रकार मध्यमा में नीलम, अनामिका में माणिक्य और मूँगा, कनिष्ठिका में पन्ना आदि रत्नों को पहनने का विधान निश्चित किया गया है। रत्नों के व्यक्ति पर कार्य करने की प्रक्रिया को स्थूलवाद से समझना असम्भव है। इसे केवल सूक्ष्मवाद द्वारा ही जाना जा सकता है। हमारे शरीर के अंगों में अज्ञात चेतना का प्रवाह होता है। अंगों में व्याप्त चेतना रत्नों के अपने प्राकृतिक गुणों के कारण कुछ संकेत विकिरणों को निरन्तर ग्रहण करती रहती है। इन विकिरण तरंगों से व्यक्ति का तन और मन प्रभावित होता है।

रत्नों के विषय में प्रचलित पौराणिक किंवदंतियों को लेकर मैं पाठकों को भ्रमित नहीं करूँगा। वाराहमिहिर के अनुसार बलि दैत्य और दधीचि की हड्डियों से विभिन्न रत्नों की उत्पत्ति हुई है। जब बलि की हड्डियाँ इधर-उधर बिखर कर गिरीं तो उस प्रदेश में इन्द्रधनुष को चकाचौंध कर देने वाले विचित्र हीरे उत्पन्न हुए। जहाँ-जहाँ उसके दाँत गिरे वहाँ मोती पैदा हो गए। उसके रक्त से पद्मराग, माणिक्य आदि बन गए।

शिवजी द्वारा पार्वती जी को रत्नों के रहस्य इस प्रकार बताए गए कि स्वर्गलोक में चार रत्न चिन्तामणि, कौस्तुभमणि, रुद्रमणि और स्यमन्तक मणि की उत्पत्ति हुई। पाताललोक में काला, हरा, सफेद, गुलाबी आदि नौ रंगों के रत्नों की उत्पत्ति हुई आदि-आदि।

पाठक इन बे-सिर पैर की बातों को किसी अन्य रत्नों की पुस्तकों से पढ़कर स्वयं चिन्तन मनन करें। रत्नों में कोई भूत-प्रेत अथवा देव आदि नहीं बैठे होते जो आपके लिए झट अनुकूल कार्य करवा दें। ऐसा सोचना अन्धविश्वास है।

रत्न पूर्णतया विभिन्न रसायनों के एकत्रित होने से प्राकृतिक रूप से अन्य खनिजों की तरह अरबों-खरबों वर्षों में बनते हैं। रत्नों के बनने की प्रक्रिया वैज्ञानिक है। पौराणिक दंत कथाएँ मानना अपरिपक्व मानसिकता की द्योतक है। ऐसी मानसिकता वाले पण्डितों और प्रयोग कर्त्ताओं के कारण ही आज यह विषय अंधविश्वास, उपहास और तिरस्कार की भावना से देखा जाने लगा है।

रत्न पृथ्वी पर सबसे पुरानी ठोस वस्तु हैं। पृथ्वी पर जब मानव जीवन की कल्पना भी नहीं थी तब से ही रत्नों का अस्तित्व था। यदि अप्राकृतिक रूप से अणुओं को एक स्थान पर ऐसे ढूँस-ढूँस कर भर दिया जाए जहाँ वह चारों ओर डाँवा-डोल हो सकें तो रत्न निर्मित किया जा सकता है। सॉलिड स्टेट इलेक्ट्रॉनिकी सिरिकोम और जर्मेनियम में, जो शुद्धरूप से विद्युत का कुचालक है, दस लाख अणुओं के पीछे एक अणु दूसरे विशेष तत्व को मिला देने पर भी विद्युत धारा के अर्द्धचालक बन जाते हैं अर्थात् इनमें एक ही दिशा में करंट प्रवाहित हो सकता है। विपरीत दिशा में करंट बहना सम्भव नहीं है।

इस एक सिद्धान्त ने, जिसमें दस लाख अणु के पीछे सूक्ष्म से सूक्ष्म एक अणु दूसरे तत्व को मिलाया जाता है, पूरे इलेक्ट्रॉनिकी क्षेत्र में नई क्रान्ति ला दी है। यह समस्त प्रक्रिया सूक्ष्म स्तर पर ही सम्भव है यह परिकल्पना ही सूक्ष्मवाद के अस्तित्व और महत्व को बल प्रदान कर रही है।

रत्नों में ढूँस-ढूँस कर भरे हुए अणुओं के कारण निरन्तर तीव्र कम्पन होता है। प्रभाव से यह रेडियो प्रसारण की तरह प्रत्येक पल अच्छे

और बुरे प्रभाव प्रसारित करते रहते हैं। रंगों के प्रभाव से रत्न शरीर के रंग प्रभाव में सन्तुलन स्थापित किए रहते हैं। शरीर में अनुकूल अथवा कहें कि किसी रंग विशेष की कमी वाले रंग को शरीर में इनके द्वारा समाहित किया जाता है।

इस प्रक्रिया से शरीर, प्रयोग किए गए रत्न और दुष्प्रभाव देने वाले ग्रह के रंग स्पन्दनों में सामंजस्य स्थापित होने लगता है। धीरे-धीरे उस ग्रह का प्रतिकूल प्रभाव घटने लगता है और साधारण जन की भाषा में हम इस अनुरूप परिणाम को रत्नों द्वारा चमत्कार की संज्ञा देने लगते हैं।

साधारण काँच भी रंग-बिरंगे होते हैं। परन्तु उनमें प्राकृतिक रत्नों जैसा गुण नहीं होता। रंगों को अपने अन्दर समाहित करने का गुण उनमें भी होता है परन्तु नगण्य। इसलिए साधारण काँच से बनी हुई बोटलों द्वारा की गई रत्न चिकित्सा की गति बहुत ही धीमी होती है। यह गुण जब ही उत्तम होता है जब रत्न में कठोरता और उचित घनत्व का उपयुक्त गुण विद्यमान हो।

एक अध्याय में रत्नों का वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत करना असम्भव है। फिर भी यहाँ संक्षिप्त विवरण इसलिए प्रस्तुत किया गया है कि पाठक रत्नों के प्रति फैले अन्धविश्वास को समझकर इनसे लाभ उठा सकें। अपने अनुरूप रत्नों को चुनने की सर्व प्रचलित विधियाँ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। एक बात स्पष्ट कर दूँ कि यह बहुत ही सामान्य हैं और अपूर्ण हैं। रत्न विज्ञान इतने मात्र में ही सीमित नहीं है। विस्तृत और वैज्ञानिक विवरण के लिए पाठक मेरी पुस्तक 'स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न' पढ़ सकते हैं। इसमें मैंने उन नई विधियों का भी वर्णन किया है जिनसे आप अपने रत्नों को स्वयं ही चुनकर सर्वाधिक प्रभावशाली बना सकते हैं।

नीचे व्यक्ति की नाम राशियाँ दी जा रही हैं। नाम के प्रथम अक्षर की रेखा में जो राशि अंकित है, वही नाम राशि कहलाती है। उसी रेखा

में सम्बन्धित भाग्यशाली रत्न भी अंकित है। उन्हें प्रयोग करके भाग्यशाली बना जा सकता है।

| नाम का प्रथम अक्षर | राशि | स्वामी | राशि पर लगने वाले रत्न / उपरत्न |
|-------------------------------------|---------|----------|---|
| चू, चे, चो, ला, ली, ले, लो, लू, आ | मेघ | मंगल | मूँगा, गोमेदक, संगसितारा, गारनेट, लाल अक्रीक |
| ई, ऊ, ए, ओ, ब, वी, बू, बे, बो | वृष | शुक्र | हीरा, मोती, रूबिक, मून स्टोन, सफेद अक्रीक |
| का, की, कू, के, को, घ, ड, छ, हा | मिथुन | बुध | पन्ना, मरगज, फिरोजा, तुरमली, हरा अक्रीक |
| ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो | कर्क | चन्द्र | मोती, मून स्टोन, सफेद पुखराज, सफेद मूँगा, सफेद अक्रीक |
| मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे | सिंह | सूर्य | माणिक, गारनेट, गोमेदक, संगसितारा, लाल अक्रीक |
| टो, पा, पो, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो | कन्या | बुध | पन्ना, मरगज, तुरमुली, फीरोजा, हरा अक्रीक |
| रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते | तुला | शुक्र | हीरा, ओपल, सफेद पुखराज, सफेद मुँगा, सफेद अक्रीक |
| तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू | वृश्चिक | मंगल | मूँगा, मानक स्टार, संगसितारा, गोमेदक, कलेजिया अक्रीक |
| ये, यो, भू, भा, फा, टा, धा, भी, भे | धनु | बृहस्पति | पुखराज, सुनेला, टाइगर, पीला गोमेदक, पीला अक्रीक |

| | | | |
|------------------------------------|-------|----------|---|
| भो, जा, जी, खी, खु, खे, गा, गी | मकर | शनि | नीलम, लाजवर्त, काला स्टार, नीला अक्रीक |
| गु, गे, गो, सा, सी, सु, सो, से, दा | कुम्भ | शनि | नीलम, नीली, काला स्टार, गनमेटल, काला अक्रीक |
| दौ, दू, दे, दो, थ, झ, ज, चा, ची | मीन | वृहस्पति | पुखराज, सुनेला, टाइगर, धुनेला, पीला अक्रीक |

भारतीय ज्योतिष पद्धति में व्यक्ति की जन्म राशि को अर्थात् जहाँ जन्म के समय चन्द्रमा स्थित था, महत्त्व दिया गया है। यदि आपको अपनी जन्म राशि ठीक-ठीक पता है तो आप इसी के सामने दिया हुआ रत्न धारण करें। आपको यदि अपने जन्म का महीना याद है तो आप निम्न सारणी से भी अपना भाग्यशाली रत्न चुन सकते हैं।

| महीना | रत्न |
|-------------|--------------------|
| १. जनवरी | माणिक्य और गार्नेट |
| २. फरवरी | तांमड़ा |
| ३. मार्च | बेरुज |
| ४. अप्रैल | हीरा |
| ५. मई | पन्ना |
| ६. जून | मोती |
| ७. जुलाई | माणिक्य |
| ८. अगस्त | ज्वरजद |
| ९. सितम्बर | पुखराज |
| १०. अक्टूबर | ओपल |
| ११. नवम्बर | पुखराज |
| १२. दिसम्बर | फ़िरोज़ा |

एक प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक से मैंने कुछ ऐसे रत्न देखे हैं जो राशि से सम्बन्धित ग्रह के अनुसार पहनाए जाते हैं। यहाँ मैं ग्रहों से सम्बन्धित धातु भी लिख रहा हूँ। यदि रत्न अपने अनुकूल धातु की अंगूठी में भी पहने जाएँ तो प्रभाव बढ़ जाता है।

| ग्रह | रत्न | पुराणानुसार रत्न | ग्रह से सम्बन्धित धातु |
|-----------|----------|---------------------|---------------------------|
| १. सूर्य | माणिक्य | लहसुनिया | स्वर्ण |
| २. चन्द्र | मोती | नीलम | चाँदी |
| ३. मंगल | मूँगा | माणिक्य | स्वर्ण |
| ४. बुध | पन्ना | पुखराज | स्वर्ण, कांसा |
| ५. गुरु | पुखराज | मोती | चाँदी |
| ६. शुक्र | हीरा | हीरा | चाँदी |
| ७. शनि | नीलम | नीलम | लोहा |
| ८. राहु | गोमेद | गोमेद | पंचधातु |
| ९. केतु | लहसुनिया | पन्ना | पंचधातु |

अंगूठी में रत्न जड़ने वाला भाग खोखला होना चाहिए, जिससे कि रत्न इस प्रकार जड़े जाएँ कि वह निरन्तर उंगली को छूता रहे। रत्न को एक बार जागृत कर पहनने के बाद यथासम्भव यह प्रयास रहे कि न अकारण वह उतारा जाए और न ही उसे किसी को छुआया जाए।

रत्न के उचित चुनाव के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि उसे किस दिन, समय और विधि द्वारा पहना जाए। इसका विस्तृत वर्णन भी मैंने अपनी पुस्तक 'स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न' में किया है। रत्न सम्बन्धी कोई निर्णय लेने के लिए अथवा अपनी प्रभावहीन हुई किसी भी रत्न की अंगूठी को प्रभावशाली बनाने के लिए मुझसे सम्पर्क किया जा सकता है।

अनेक व्यक्ति ऐसे भी होंगे जो आर्थिक कठिनाई के कारण महंगे

रत्न नहीं जुटा पाते हैं, उनके लिए विकल्प है कि वह रत्नों के स्थान पर अपनी जन्म अथवा राशि के स्वामी ग्रह के अनुरूप कुछ जड़ विशेष भी प्रयोग कर सकते हैं। इन जड़ों का प्रभाव धीमा अवश्य हो सकता है। परन्तु ऐसा नहीं है कि यह निष्प्रभाव रहें। यह आवश्यक है कि इन्हें मेरी खोज की हुई विधि अनुसार जल्दी-जल्दी जागृत करके पुनः धारण करना पड़ेगा।

| ग्रह | जड़ |
|-----------|-------------------|
| १. सूर्य | बेल |
| २. चन्द्र | खिनी |
| ३. मंगल | अनन्तमूल |
| ४. बुध | बीधारा |
| ५. गुरु | धारंगी या केला |
| ६. शुक्र | सरपोंखा |
| ७. शनि | बिच्छू या चिरचिटा |
| ८. राहु | सफेद चन्दन |
| ९. केतु | अशगल |

वास्तविक जीवन और प्रकृति से हम दूर भाग रहे हैं यही
हमारे दुर्भाग्य का कारण है।

— गोपाल राजू

वास्तु ज्योतिष में विभिन्न रंग

अपने दुर्भाग्य को दूर करने के लिए शकुन, अन्धविश्वास आदि जैसी बातों से अलग अनेक गुह्य विद्याओं का सहारा लेना मनुष्य की प्रवृत्ति है। इसके लिए उत्तर भारत के प्राचीन ग्रन्थों समरांगण सूत्रधार, विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र तथा दक्षिण भारत के ग्रन्थ मानसार आदि के अनुसार एक विद्या 'वास्तु ज्योतिष' का प्रादुर्भाव हुआ। ज्योतिष के नियमों से अलग इनमें भवन निर्माण के लिए भूमि, मिट्टी परीक्षण, मुख्य द्वार की स्थापना आदि के लिए वास्तु ज्योतिष नियमों का पालन करने पर बल दिया गया है। इनके साथ-साथ सम्पूर्ण भवन निर्माण में कुछेक अंक शास्त्रीय गणनाएँ भी करवायी जाती रही हैं जो आयुधि सूत्र (Ayadi Formulas) कहलाती हैं। दो-ढाई दशकों से ज्योतिषीय विवेचन तथा नियम विशेष रूप से प्रतिपादित हुए जो कि मुख्यतः चार हैं—

१. वास्तु पुरुष (Vastu Purusha),
२. दिक्पाल (Dikpalakas),
३. ग्रह व्यवस्था (Planetary System) तथा
४. अंक शास्त्र (Numerology)

इस अध्याय में ग्रह व्यवस्था के अन्तर्गत विभिन्न रंगों का संक्षिप्त

विवरण दिया जा रहा है। प्रत्येक ग्रह का अपना एक रंग विशेष है जो विशेष दिशा तथा जीव के प्रत्येक अंग पर नियन्त्रण रखता है। पेशे से वैज्ञानिक होने के कारण रंगों के इस प्रभाव का सम्बन्ध मैंने भवन सामग्री तथा वास्तु नियमों से स्थापित किया है। अपने प्रयोगों में मैंने यह सब प्रभावशाली भी पाए हैं। मैंने अनुभव किया कि जब भी व्यक्ति के आभामण्डल से इनका सन्तुलन बिगड़ा है, दुर्भाग्य ने किसी-न-किसी रूप में जन्म लिया है।

सूर्य में सात रंग हैं। परन्तु वास्तव में तथा कुछेक वास्तु शास्त्री भी छह रंगों के अस्तित्व को मानते हैं—श्वेत, लाल, पीला, हरा, नीला तथा काला। वस्तुतः सात रंग अथवा नौ रंग इन छह रंगों के मेल-मिलाप का ही परिणाम हैं। सुनकर आश्चर्य होगा कि रंगों के मेल-मिलाप से दस लाख रंग बनाए जा सकते हैं। परन्तु इनमें से हम केवल तीन सौ अठहत्तर रंग ही देख पाते हैं। अपने दैनिक जीवन में नवरस तथा नवरंगों का अनोखा सम्बन्ध हम देखते हैं। यह हमारे मनोभाव के द्योतक हैं। विडम्बना यही है कि रंगों के इन संयोगों का अपने जीवन में हम ठीक-ठीक ताल-मेल नहीं बैठा पाते। इसीलिए दुर्भाग्य को निमन्त्रण देते हैं। कभी अनुभव करें विभिन्न रस यदि अपने अनुरूप रंग के साथ हैं तो आप कितना सुखद अनुभव करते हैं—

| | |
|------------------------|-----------|
| १. शृंगार (Erotica) | श्याम रंग |
| २. हास्य (Laughter) | श्वेत |
| ३. करुणा (Pathatic) | मटमैला |
| ४. रुद्र (Furious) | लाल |
| ५. वीर (Heroic) | लाल, नीला |
| ६. वीभत्स (Repulsive) | नीला |
| ७. दैवी (Supernatural) | पीला |
| ८. प्रेम (Love) | गुलाबी |

९. दया (Emotion) भगवा

रंगों में तथा रंगों से लयबद्धता (Harmony) बनाकर वास्तुजनित दोषों को दूर करना ही योग्य वास्तुविद् की पहचान है। रस के समान विभिन्न दिशा-विदिशा में भी रंगों का आधिपत्य है तदनुसार योगदान और प्रभाव है। घर में पुताई अथवा डिस्टैम्पर दिशा अनुसार करवाने से वास्तु के अनुरूप सुप्रभाव मिलते हैं—

भवन के पूरब का भाग सफेद रंग का रखें।

भवन के पश्चिम का भाग नीले रंग का रखें।

भवन के उत्तर का भाग हरे रंग का रखें।

भवन के दक्षिण का भाग लाल, गुलाबी रहे।

भवन के दक्षिण-पूरब के भाग को मटमैला करवाएँ।

भवन के दक्षिण-पश्चिम के भाग का हरा रंग रखें।

भवन के उत्तर-पूरब के भाग का पीला रंग कराएँ तथा

भवन के उत्तर-पश्चिम के भाग का सफेद रंग रखें।

जन्म पत्रिका में विभिन्न ग्रहों के सापेक्षिक बल के अनुसार, विभिन्न रंगों के गुणधर्म तथा उनकी अनुकूलता के अनुरूप तथा दिशा, भवन सामग्री का ध्यान यदि निर्माण से पूर्व रखा जाए तो सकारात्मक प्रमाण निश्चित रूप से प्राप्त होते हैं। यह एक प्रकार है। ऐसे अनेक विकल्प हैं और सम्भवतः अन्य भी हो सकते हैं, जिन्हें खोजना तदनुसार जीवन में प्रयोग करना मैं पाठकों के अपने बुद्धि-विवेक पर छोड़ता हूँ।

| ग्रह | कमरा | रंग | शरीर का अंग | दिशा | भवन-सामग्री |
|--------|-------------------------|----------|-------------|-------------------|-------------|
| सूर्य | ड्राइंग रूम | रक्त-पीत | चेहरा | उत्तर | पत्थर |
| चन्द्र | बाथरूम | श्वेत | आँख | दक्षिण- पश्चिम | लकड़ी |
| मंगल | किचन तथा डाइनिंग रूम | रक्त | पेट | दक्षिण | ईट |
| बुध | कॉमन हाल | हरा | मस्तिष्क | उत्तर | प्लास्टर |

| | | | | | |
|-------|-----------------|----------------|---------------------------------------|------------------|-----------|
| गुरु | पूजा, लाइब्रेरी | सुनहरा-पीत | सिर | उत्तर-पूरब | मीटार |
| शुक्र | बैठ रूम | श्वेत अथवा हरा | दिल | पूरब | कंक्रीट |
| शनि | स्टोर रूम | नीला | आंत | पश्चिम | स्टील |
| राहु | फ्रंट डोर | मटमैला | मुँह | दक्षिण-पश्चिम | वायरिंग |
| केतु | बैक डोर | मिला-जुला | मल-मूत्र पसीना निकलने के अंग | उत्तर- पश्चिम | प्लम्बिंग |

यादु करें, एक समय था जब रंग-बिरंगे काँच का प्रयोग भवन के खिड़की, रोशनदान, दरवाजे आदि में भवन सामग्री के रूप में किया जाता था। इसका उद्देश्य अलंकरण तो था ही यह भवन को ग्रहों के रंगों के सापेक्ष घर को निरन्तर सकारात्मक ऊर्जा भी प्रदान करता था।

फेंगशुई के अनुसार भवन में दिशा तथा विभिन्न तत्वों के अनुरूप यदि रंग करवाया जाए तो सौभाग्यशाली सिद्ध होता। नीचे सारणी के रूप में एक सामान्य सा नियम दे रहा हूँ। इनके अनुसार भवन रंगवाकर भी आप दुर्भाग्य को दूर कर सकते हैं।

| क्षेत्र | तत्व | सर्वश्रेष्ठ रंग | अच्छा रंग | बुरा रंग |
|---------------|--------|-----------------|--------------|--------------|
| उत्तर-पूर्व | पृथ्वी | पीला, मटमैला | लाल, नारंगी | हरा |
| उत्तर | जल | नीला, काला | सफेद, रुपहला | पीला, मटमैला |
| उत्तर-पश्चिम | धातु | सफेद, रुपहला | पीला, मटमैला | लाल, नारंगी |
| पश्चिम | धातु | सफेद, स्लेटी | पीला, मटमैला | लाल, नारंगी |
| दक्षिण-पश्चिम | पृथ्वी | पीला, मटमैला | लाल, नारंगी | हरा |
| दक्षिण | अग्नि | लाल, नारंगी | हरा | नीला, काला |
| दक्षिण-पूर्व | काष्ठ | हल्का हरा | नीला, काला | सफेद, रुपहला |
| पूर्व | काष्ठ | हरा | नीला, काला | सफेद, रुपहला |
| मध्य | पृथ्वी | पीला, मटमैला | लाल, नारंगी | हरा |

आन्तरिक ग्रह सज्जा में परदे, फर्नीचर, खिड़की दरवाजे के रंगों

का भी महत्वपूर्ण स्थान है। वैसे तो रंगों के चुनाव में प्रमुखता व्यक्तिगत चुनाव की ही रहती है तथापि रंगों की प्राथमिक जानकारी के बाद सुधि पाठकों को इस विषय के ज्ञान तथा लाभ प्राप्ति की कुछ सुविधा अवश्य हो जाएगी।

विभिन्न रंगों से वास्तु स्थिति तथा प्रभाव को भ्रामक भी बनाया जाता है। यथा छोटी छत को रंग के प्रभाव से बड़ा दिखाना, बड़ी दीवार को छोटा अथवा छोटी दीवार को तुलनात्मक रूप से क्रमशः अधिक दूर दिखाया जा सकता है। यह भ्रामक प्रभाव मात्र रंगों के हल्के-गाढ़े मिश्रणों के प्रयोग से उत्पन्न किया जाता है। इसी क्रम में वातावरण को मनचाहा ठण्डा अथवा गरम भी बनाया जा सकता है। रंगों में स्वतः ही गरम तथा ठण्डे का गुण समाहित होता है। हरे, नीले, बैंगनी अथवा इनसे मिलते-जुलते रंगों से ठण्डा तथा लाल, पीले अथवा अन्य रंगों के मिश्रण से गरम-सा भ्रामक प्रभाव वास्तुविद् द्वारा उत्पन्न किया जा सकता है। जहाँ उत्तर दिशा की ओर के कमरे दक्षिण दिशा की तुलना में ठण्डे होते हैं वहाँ रंगों के यह भ्रामक प्रभाव बहुत सफल सिद्ध होते हैं।

वास्तु शास्त्र की मान्यता है कि यदि आन्तरिक सज्जा हेतु प्रयुक्त रंगों के विभिन्न संयोग व्यक्ति विशेष से जब तारतम्य जोड़ लेते हैं तो सौभाग्य तथा सुख-समृद्धि सुनिश्चित है। घर में रंगों का चयन किस कमरे में कौन सा करें, इसका संक्षिप्त सार भी पाठकों के लाभार्थ लिख रहा हूँ?

भवन का प्रवेश द्वारा वाला भाग सफेद, हल्का नीला अथवा हरा होना बहुत शुभ है। किसी भी दशा में यह भाग काले अथवा मटमैले रंग का नहीं होना चाहिए।

रसोई घर के लिए वैसे तो सफेद रंग सर्वश्रेष्ठ है तथापि हल्के रंगों का चयन भी उपयुक्त है। यहाँ लाल रंग का प्रयोग सर्वथा वर्जित है।

नव-विवाहित जोड़े के कमरे का रंग हल्का पीलापन लिए सफेद

होने से दोनों में परस्पर प्रेम-स्नेह पनपता है। घर का वातावरण सुखद रहता है।

बच्चों के कमरे में गुलाबी अथवा क्रीम कलर सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ के परदे, फर्नीचर आदि सफेद रखने से बच्चों की एकाग्रता में वृद्धि होती है। यहाँ लाल तथा काला रंग प्रयोग नहीं करना चाहिए। हाँ फर्नीचर का कुछ भाग अवश्य काला रखवाया जा सकता है। यहाँ रहने वाले बच्चे शैतानी छोड़ देते हैं।

खाने के कमरे का हरा अथवा नीला रंग पाचन क्रिया में बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

पूजा गृह सफेद अथवा हल्का पीलापन लिए हुए रखवाना बहुत शुभ है।

भवन में विभिन्न रंगों का सर्वाधिक प्रभाव मनःस्थिति को प्रभावित करता इसलिए कमरों में रंगाई के समय रंगों के प्रभाव का विशेष ध्यान रखना चाहिए—

- ❖ नीला रंग सात्विकता तथा शक्ति का प्रतीक है। यह व्यक्ति को सतोगुणी प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ हरा रंग काम के प्रति आसक्ति दर्शाता है। यह सक्रियता तथा गतिशीलता का प्रतीक है।
- ❖ पीला रंग विदूषक है। यह गुदगुदाने वाला गुण रखता है। यह रंग चिन्ता तथा वैमनस्य से दूर रखता है।
- ❖ जामुनी रंग अपरिपक्व मानसिकता का प्रतीक है।
- ❖ कलथई रंग इन्द्रियलिप्सा तथा असंयमित जीवन की द्योतक है।
- ❖ भूरा रंग तटस्थ बनाता है।
- ❖ काला रंग विरोधाभास का कारक है।
- ❖ सफेद रंग शान्ति तथा स्वच्छता का प्रतीक है।

- ❖ लाल रंग एकाग्रता देता है। इस रंग का सांस्कृतिक महत्व है। यह सौभाग्य का सूचक है।
- ❖ जो व्यक्ति काला रंग पसन्द करते हैं वह निपेधात्मक चिंतक होते हैं।

वस्तुतः यह अधिकारपूर्वक कहा जा सकता है जैसे हमारे विचार होंगे वैसा ही रंग हम पसन्द करेंगे। परन्तु यदि रंगों के अनुरूप व्यक्ति को वातावरण मिलता रहे तो विचारधारा रंगों के गुणों के अनुरूप भी की जा सकती है। इस क्षेत्र में विश्वव्यापी शोध हो रहे हैं।

ब्रह्माण्ड के सात लोकों की तरह मनुष्य के शरीर में भी सात तत्व कार्यरत हैं—फिजिकल, मेण्टल, एस्ट्रल, बौद्धिक, निर्वाणिक, परा-निर्वाणिक तथा महापरा निर्वाणिक। सात रंगों के प्रकम्पन सात पदार्थों—ठोस, द्रव, गैस तथा पदार्थ की चार अवस्थाएँ 'ईथर' के ही हैं। वास्तव में इन्हीं से ही ग्रह-नक्षत्रों का निर्माण हुआ और इन्हीं से ही मनुष्य की मनःस्थिति, मनोभाव आदि का संचालन हुआ। सूर्य के सात रंगों की तरह अन्य ग्रहों के रंग का अपना-अपना प्रभाव है जिसे वास्तुविद् भवन निर्माण के समय अनुकूल बनाने का उपक्रम करता है। वास्तव में कितना सफल हो रहा है वह, यह अलग विषय है।

विभिन्न रंगों के गुण-धर्म-प्रभाव का सबसे अच्छा उपयोग रोग द्वारा जनित दुर्भाग्य दूर करने के लिए वैकल्पिक चिकित्सा में किया जा रहा है। रंगों का सम्बन्ध भावना से है और बीमारी के बारे में कहा गया है कि यह मस्तिष्क में उत्पन्न होती है और शरीर में पलती है अर्थात् बीमारी मूलतः भावना प्रधान है। रंगों का सीधा प्रभाव हमारे पंचकोषों एवं षट्चक्रों के रंगों पर भी पड़ता है। जो हमारे समस्त शरीर-तन्त्र के संचालक हैं। रंगों के प्रभावी गुण के कारण ही रंग चिकित्सा का चलन हुआ। इस चिकित्सा में शारीरिक तथा मानसिक रुग्णता दूर करने का उपक्रम साधन रंग ही है। रत्न के पीछे प्रभाव का मूल कारण रंग ही है।

इसीलिए विभिन्न रोगों के निदान में रत्नों का महत्वपूर्ण स्थान है। विज्ञान भी मान रहा है कि अल्ट्रा वायलेंट किरण (पराबैंगनी) मन, मस्तिष्क तथा शरीर के हारमोन्स तथा एंजाइम्स को प्रभावित करने का गुण रखती हैं। यह जीवनशक्ति को बढ़ाने में अत्यन्त उपयोगी है।

वास्तु ज्योतिष में ग्रहों तथा विभिन्न रंगों के तारतम्य हो जोड़ने पर बल दिया गया है क्योंकि इनमें हुआ असन्तुलन ही बीमारियों का मूल कारण है।

वैसे तो रंग तथा विभिन्न बीमारियों पर उनका तरह-तरह से उपयोग 'फोटो मेडिसन' के अन्तर्गत आज सर्वविदित है। परन्तु इनमें भी सबसे अधिक चर्चित, सर्वसुलभ तथा सस्ता वास्तु शास्त्र के अन्तर्गत रंगों का चुनाव करना ही है। कुछ बीमारियों के लिए लाभदायक रंग लिख रहा हूँ। इनका प्रयोग रंगाई-पुताई के साथ-साथ अपने नित्य प्रयोग होनेवाले कपड़ों आदि में भी कर सकते हैं ताकि अधिक से अधिक इन रंगों का समावेश आपके भवन तथा शरीर पर हो सके और आप दुर्भाग्य को दूर भगा सके—

- ❖ बैंगनी रंग का प्रभाव सीधा दमे और अनिद्रा के रोगी पर पड़ता है। अर्थराइटिस, गाउट्स, ओडिमा तथा प्रत्येक प्रकार के दर्द में यह सहायक है। जहाँ मच्छरों का अधिक प्रकोप होता है वहाँ बैंगनी रंग सहायक है। इसका सीधा प्रभाव शरीर में पोटेशियम की न्यूनता को दूर करता है।
- ❖ शरीर में शिथिलता-नपुसंकता के लिए सिंदूरी रंग गुणकारी है।
- ❖ शरीर में त्वचा सम्बन्धी रोगों में नीला अथवा फिरोजी रंग अच्छा कार्य करता है।
- ❖ जो बच्चे पढ़ाई से जी चुराते हैं अथवा अल्प बुद्धि के होते हैं उनके कमरे लाल अथवा गुलाबी रंग के करवाएँ उनकी एकाग्रता

- बढ़ेगी तथा शैतानी कम होगी।
- ❖ पीला रंग हृदय संस्थान तथा स्नायु तन्त्र को नियन्त्रण करता है। तनाव, उन्माद, उदासी, मानसिकता दुर्बलता तथा अम्ल पित्त जनित रोगों में भी सहायक है। मस्तिष्क को सक्रिय करने का इस रंग में विलक्षण गुण है। इसलिए विद्यार्थी तथा बौद्धिक वर्ग के लोगों के कमरे पीले रंग के रखवाया करें।
 - ❖ हरा रंग दृष्टिवर्धक है। उन्माद को दूर कर यह मानसिक शान्ति प्रदान करता है। घाव को भरने में यह जादू सा असर करता है परन्तु ऊतकों और पिट्यूटरी ग्रन्थि पर इस रंग का प्रभाव विपरीत भी हो सकता है।
 - ❖ पेट से सम्बन्धित बीमारी के रोगी आसमानी रंग को जीवन में उतारें।
 - ❖ नारंगी रंग तिल्ली, फेफड़ों तथा नाड़ियों पर प्रभाव डालकर उन्हें सक्रिय बनाता है। यह रंग रक्तचाप को भी नियन्त्रित करता है।
 - ❖ लाल रंग भूख बढ़ाता है। सर्दी, जुकाम, रक्तचाप तथा गले के रोगों में भी यह रंग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
 - ❖ पक्षाघात वाले रोगियों को सफेद पुते कमरे में रखने तथा अधिकाधिक सफेद परिधान प्रयोग करवाने से चमत्कारिक रूप से लाभ मिलता है।

आज विश्वव्यापी स्तर पर स्वीकार कर लिया गया है कि रंगों में 'ईथर' की प्राणतत्व की ऐसी अनेकानेक सूक्ष्म शक्तियाँ सन्निहित हैं जिनका उपयोग कर हम स्वास्थ्य लाभ तो कर ही सकते हैं, अनन्त अन्य शक्तियों के स्वामी भी बन सकते हैं। आवश्यकता केवल रंग-वर्ण भेद को ठीक-ठीक समझने की है, उनके समायोजन की विधि-व्यवस्था जानने की है और उन्हें अपने जीवन में उतारने की है।

"एक विशिष्ट समय में मनुष्य की सत्कर्म अथवा दुष्कर्म में होने वाली असफलता उसका दुर्भाग्य है।"

— गोपाल राजू

दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय

अर्थात्

तान्त्रिक प्रयोगों द्वारा दूर करें दुर्भाग्य

तन्त्र पर लिखते समय मैंने अनवरत यह प्रयास किया है कि वह केवल किताबी विषय न बनकर सर्वसाधारण के लिए दुर्भाग्य दूर करने का कारण बने। जिन पाठकों ने मेरी पूर्व प्रकाशित पुस्तक 'सरलतम धनदायक तान्त्रिक प्रयोग' पढ़ी होगी उन्होंने यह अवश्य अनुभव किया होगा कि पदार्थ तन्त्र पर आधारित सरल प्रयोग जितने छोटे हैं उतने ही प्रभावशाली भी हैं। दूसरे वह आम उपलब्ध जटिलतम, भूत-प्रेत, हड्डी वाले, घिनौने, तामसिक, अनर्थ करने वाले तथा अप्रायोगिक तन्त्र से सर्वथा अलग सरलतम, सात्विक तथा पूर्णतया प्रयोगानुकूल हैं। वर्ण, भेद, आयु, स्थान और लिंग आदि का उनको करने में कहीं भी बन्धन नहीं है।

धरती के कण-कण में प्रभु प्रदत्त अनुकम्पा निहित है। जिसने भी इन्हें पहचान कर उपयोग किया है, उसे प्रकृति ने बहुमूल्य उपहार प्रदान किए हैं। धनदायक तान्त्रिक प्रयोगों की भाँति, इस पुस्तक में भी मैंने उन पदार्थों को सरलतम रूप में प्रयोग किया है, जिनके विलक्षण गुणों से

- अधिकांश लोग वंचित रह गए हैं। अनेक पदार्थों पर विभिन्न तान्त्रिक प्रयोगों की सत्यता के प्रमाण एकत्रित करने के बाद ही मैंने इस पुस्तक का श्रीगणेश किया है। अपने तान्त्रिक प्रयोगों से लाभ प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की चर्चा करके मैं व्यर्थ का श्रेय प्राप्त नहीं करना चाहता। मेरा मूल उद्देश्य आपके सौभाग्य में निहित है। आप को मेरे प्रयोगों से यदि लाभ प्राप्त हो सके, तब ही मैं अपने प्रयास को सार्थक मानूँगा।

मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र पर मैंने अनेक ग्रन्थ अध्ययन किए। कई पीर-फकीर, साधुओं, सिद्ध महात्माओं तथा तान्त्रिकों से मिलकर उनके अनेक अनुभव एकत्र किए। इन सबमें कुछ अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर अनेक संशोधन किए। देखने में छोटे तथा सरल लगने वाले इन प्रयोगों के पीछे असीमशक्ति निहित है। अनुभव में आए ऐसे ही कुछ सरलतम प्रयोग पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ। समस्त प्रयोग दुर्भाग्य दूर करने में सक्षम हैं। एक बात यहाँ स्पष्ट कर दें कि इन प्रयोगों से अनर्थ की लेशमात्र भी सम्भावना नहीं है। संयम और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ इन्हें अपनाकर स्वयं इनकी सत्यता की परख कर लीजिए।

आइए, श्रीगणेश कीजिए, अपने में विश्वास पैदा करिए फिर देखिए सहायता के लिए प्रभु सदैव आपके साथ हैं। जिन पाठकों को अन्य प्रयोग जानने की अभिलाषा है वह मेरी पदार्थ तंत्र की अन्य पुस्तकें अवश्य पढ़ें।

प्रयोग-१

दीपावली में लगभग प्रत्येक हिन्दू परिवारों में लक्ष्मी-गणेश जी की मूर्ति रखने की प्रथा है। यह लोग अपनी-अपनी सामर्थ्य और श्रद्धानुसार दोनों देवी-देवताओं की पूजा अर्चना अवश्य करते हैं। ऐसा विश्वास प्रचलित है कि इस क्रिया-कलाप से लक्ष्मी प्रसन्न होकर उस घर में स्थाई रूप से वास करती हैं। जो भी मान्यता हो। मैं तो इस बात में

विश्वास करता हूँ कि लक्ष्मी कृपा के लिए व्यक्ति के प्रारब्ध की भूमिका सर्वोपरि है। दूसरे नम्बर पर व्यक्ति का अपना कर्म और फिर अन्य क्रिया कलाप आते हैं।

देवी-देवताओं में गणेश जी की पूजा-अर्चना सबसे पहले की जाती है। उन्हें सर्व विघ्ननाशक कहा गया है। दुर्भाग्य को दूर करने के लिए इसीलिए पहला प्रयोग मैंने गणेश जी का ही लिया है।

दीवाली अथवा उससे पहले गणेशजी की एक ऐसी प्रतिमा अथवा मूर्ति घर ले आएँ जिसमें उनकी सूंड उनके दाएँ हाथ की ओर मुड़ी हो। इस मूर्ति अथवा प्रतिमा को दीवाली की पूजा से पहले अपने घर के मुख्य द्वारा पर इस प्रकार टाँग दें जिससे कि उसका मुँह घर के अंदर की ओर रहे। इसके सामने श्रीयन्त्र अथवा कुबेर यन्त्र रखें। यदि यन्त्र सुलभ न हो पाए तो एक लक्ष्मी जी की प्रतिमा ही टाँग दें।

नित्य गणेश जी की प्रतिमा पर दूब घास धोकर चढ़ाएँ। पुरानी दूब को नई चढ़ाने के बाद घर से बाहर छोड़ दें। इसी प्रकार यदि सम्भव हो सके तो लक्ष्मी जी के यन्त्र पर लाल रंग के पुष्प नित्य चढ़ा-दिया करें। दूब और पुष्प चढ़ाते समय जैसी भी श्रद्धा भाव से पूजा-अर्चना बन पड़े कर लिया करें। पूरी तरह दीन होकर गणेश जी के नेत्रों में त्राटक करके निम्नलिखित स्तुति कम से कम एक बार अवश्य पढ़ा करें। पंक्तियाँ पढ़ने की संख्या जो प्रथम बार हो वही नित्य रहनी चाहिए।

निरन्तर यह भावना बनाए रखें कि दुर्भाग्य का आपके परिवार से धीरे-धीरे पलायन हो रहा है और सौभाग्य का उसकी जगह आगमन प्रारम्भ हो रहा है। इस सरलतम छोटे से परन्तु उतने ही प्रभावशाली प्रयोग से आप कुछ ही समय में अनुभव करने लगेंगे कि प्रभु की कृपा आप तथा आपके समस्त परिवार पर होनी प्रारम्भ हो गई है। यह भी निरन्तर विश्वास बनाए रखें कि एक बार प्राप्त हुई प्रभु की कृपा सर्वदा स्थाई होती है।

वारह नामों से गणपति जी की स्तुति

प्रणम्य शिरसा देवं, गौरीपुत्रं विनायकम्।
 भक्तावासं स्मरेन्नित्यं आयुष्कामार्थं सिद्धये॥
 प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
 तृतीयं कृष्णापिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥
 लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
 सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टकम्॥
 नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकं।
 एकादशं गणपतिं, द्वादशं तु गजाननम्॥
 द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।
 न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो॥
 विद्यार्थी लभते विद्यां, धनार्थी लभते धनम्।
 पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्॥
 जपेद् गणपति स्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलम् लभेत्।
 संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥
 अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
 तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः॥

प्रयोग-२

इस प्रयोग के लिए भी किसी ऐसी नदी अथवा तालाब की आवश्यकता होगी जहाँ पर मछलियाँ उपलब्ध हों। यह प्रयोग बहुत ही प्रभावशाली है। इसे स्त्रियाँ और बच्चे भी कर सकते हैं। परन्तु जब स्त्रियाँ माह के चार-पाँच दिनों में शुद्ध न हों तब यह प्रयोग न करें। यदि आपको अपना जन्म नक्षत्र पता है तब आप यह प्रयोग उस नक्षत्र में ही पूरा करें। यदि न पता हो तब यह किसी पूर्णिमा को भी किया जा सकता है।

प्रातः नहा-धोकर शुद्ध हो जाएँ। अपनी जननी माता का ध्यान करके पूरब दिशा की ओर मुँह करके बैठ जाएँ। अच्छा हो यदि माता जी की कोई फोटो अपने सामने रख लें जिससे कि निरन्तर उनका ध्यान बना रहे।

प्रयोग के लिए जो सामग्री आवश्यक है, वह है भोजपत्र के २ × २ इंच के वर्गाकार १०८ टुकड़े। अच्छा हो कुछ टुकड़े अधिक काटकर रख लें। यदि कुछ बनाते समय बेकार हो जाएँ तो उनके स्थान पर प्रयोग करने के लिए, लाल चन्दन के घोल की स्याही और लिखने के लिए मोरपंखी की कलम, धूप-दीप अपनी सुविधानुसार भी ले लें तो और अच्छा है।

अब भोजपत्रों पर अपना जन्मांग अर्थात् लग्न नौ ग्रहों सहित ली हुई स्याही और कलम से १०८ बार अंकित कर लें। यदि किसी को अपनी लग्न पता नहीं है तो वह मुझसे भी बनवा सकते हैं। १०८ लिखे हुए भोजपत्रों में से कोई से भी १०१ भोजपत्र निकालकर आटे में लपेटकर उनकी छोटी-छोटी १०१ गोलियाँ बना लें। गोलियों का आकार इतना रखें कि उन्हें मछलियाँ सरलता से खा सकें। इन गोलियों को अब अपने साथ नदी अथवा तालाब के किनारे ले जाएँ। लिखे हुए अन्य बचे ७ भोजपत्र भी अपने साथ रख लें। आटे की गोलियाँ एक-एक करके मछलियों को खिलाते रहें। अपनी जननी माँ का निरन्तर ध्यान मन में बनाए रखें। प्रभु से यह प्रार्थना करते रहें कि आपके समस्त कष्ट जो प्रारम्भ के कारण आप अब तक भोग रहे थे, आज से नए जीवन के प्रारम्भ होने के बाद समाप्त हो जाएँ। मन में निरन्तर ऐसी धारणा भी बनाए रखें कि अबसे आपका नया दुर्भाग्यरहित जीवन प्रारम्भ हो रहा है। आटे की बत्ताई हुई सब गोलियाँ नदी में छोड़कर घर लौट आएँ, जिन सात लिखे भोजपत्र की आपने गोलियाँ नहीं की थीं और उन्हें अपने साथ ले गए थे अब उन्हें साथ रखे रहें। इन सात भोजपत्रों को घर में कहीं भी

सुरक्षित रख लें। यह घर के चारों ओर मिट्टी में कहीं पवित्र स्थान पर दबाए भी जा सकते हैं। केवल इतना ध्यान रखना है कि एक स्थान पर एक ही भोजपत्र दबे।

इसी प्रकार इन्हें घर में रखते समय भी देख लें कि यह अलग-अलग जगह रखे जा रहे हैं। एक बार पुनः स्पष्ट कर दूँ कि घर में यह अलमारी, बक्स, किताब, पूजा का स्थान, रसोई, तुलसी के पौधे के नीचे, किसी मेज की दराज आदि कहीं भी, जहाँ यह सुरक्षित रहें और इन्हें कोई निकालकर नष्ट न करे दे, रखे जा सकते हैं। एक बार इस प्रयोग को करने के बाद इसको बिल्कुल भूल जाएँ। बहुत आवश्यक होने पर यह प्रयोग किसी भी गुरुवार को प्रातः सात-आठ बजे से पहले-पहले भी किया जा सकता है। आटे की गोलियाँ और भोजपत्र पर लग्न लिखने का कार्य आप एक दिन पहले भी कर सकते हैं।

अनेक लोग ऐसे भी होंगे जिन्हें न तो अपनी जन्म लग्न का पता होगा और न ही अपने जन्म समय के विवरण का, अर्थात् वह किस तिथि और समय में पैदा हुए थे। ऐसे लोग अपनी जन्म लग्न के स्थान पर यहाँ बना हुआ यंत्र भी भोजपत्र पर अंकित कर सकते हैं। अन्य बातें पूर्ववत् ही अनुसरण करनी हैं।

| | | |
|-------|------|----|
| | ॐ | |
| ८ | १ | ६ |
| वि | ऐँ | डा |
| ३ | ५ | ७ |
| क्लों | मुं | यै |
| ४ | ९ | २ |
| चा | च्चे | ही |

प्रयोग-3

प्रत्येक व्यक्ति का निवास और उसका दायरा ज्ञान अर्जित करवाने में सहायक उसका सर्वप्रथम गुरु होता है। उस दायरे में उसकी जननी माँ से लेकर, मित्र, नौकर यहाँ तक कि घर का पशु-पक्षी तक उसका ज्ञान अथवा मार्गदर्शक हो सकता है। व्यक्ति के अपने स्वयं के संस्कार तो होते ही हैं, वह अपने उस दायरे से भी बहुत कुछ सीखता है। उस दायरे से कोई कितना ग्रहण कर ले यह उसकी बौद्धिकता, संस्कार और लगन पर निर्भर करता है।

मैंने अपने पारिवारिक दायरे से बहुत कुछ सीखा है। माता जी श्रीमती देवकी देवी से मुझे पूजा-पाठ बचपन से ही जैसे विरासत में मिले। पिताजी स्व. श्री फतेहचन्द सक्सेना से, जो कि प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी होने के बाद भी सादगी संयम और सन्तई की मूर्ति थे, मुझे समाज में सादगी से रहकर भी अपनी प्रतिष्ठा बनाने की प्रेरणा मिली।

छोटे भाई राकेश से, जो कि वन अधिकारी है, मुझे निडरता और कर्मठता की प्रेरणा मिली। कहने का उद्देश्य यह है कि अपने पारिवारिक दायरे से प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ ग्रहण अवश्य करे। अब यह उसकी बौद्धिकता पर निर्भर है कि किस क्रिया-कलाप को उसके गुण के आधार पर अपनाएँ कि उसका दुर्भाग्य प्रभावित हो।

अपने पिताजी स्व. श्री फतेह चन्द सक्सेना के व्यस्त जीवन होने के बाद भी उनकी पूजा-संध्या के लिए समय निकलने से मैं बहुत प्रभावित था। उनकी प्रेरणा स्वरूप अनुभव में आए एक प्रयोग को पाठकों के लाभार्थ लिख रहा हूँ।

प्रातः सोकर उठने से लेकर रात्रि शयन तक परब्रह्म परमेश्वर का ध्यान निरन्तर बनाएँ रखें। मन में यही धारणा बनी रहे कि अच्छा अथवा बुरा जैसा भी घटित हो रहा, प्रभु की कृपा का ही परिणाम है और प्रभु

सदैव शुभ करेंगे। प्रातः उठते समय स्वर विज्ञान का प्रयोग अवश्य करें। उसका विवरण मैं अलग से स्पष्ट कर चुका हूँ। प्रातः अपने हाथ की लकीरों को देखते हुए निम्नलिखित दोहा पाँच बार पढ़कर अपने चेहरे पर हाथ फिराएँ। उसके बाद जो भी नियम अपनाना हो, श्रद्धा से अपना लें। यह दोहा मुझे पिताजी की एक पुरानी डायरी में से मिला था।

ओ३म् नमो भगवते रघुनन्दाय रक्षोघ्न विशदाय मधुर।
प्रसन्न वदनायमित तेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः ओ३म्॥

अर्थात् ब्रह्मवाचक ओ३म् सहित भगवान रघुनन्दन श्रीराम की जो रक्षा करने वाले तथा पापों का नाश करने वाले अत्यन्त बलशाली, मधुर तथा प्रसन्न मुख वाले, अत्यन्त तेज तथा बल वाले हैं। मैं ओ३म् सहित प्रणाम करता हूँ।

प्रयोग-४

साँप की अखण्डित केचुली, मोर का पंख और हरिद्रा अर्थात् हल्दी यह तीनों पदार्थ सौभाग्य को बढ़ाने वाले हैं। इस प्रयोग में बन्धन केवल इतना है कि यह तीनों क्रय करके न लाई गई हों और न ही इन्हें विशेष रूप से लेने जाना है। यह तीनों पदार्थ केवल उस स्थिति में ही प्रभावकारी सिद्ध होंगे जब यह कहीं भी आते जाते समय अकस्मात् मिल जाएँ। मोर का पंख तो ऐसे स्थानों पर सुगमता से पड़ा मिल जाता है जहाँ मोर रहते हैं। हल्दी कहीं खेत से प्राप्त हो सकती है। किसी के घर आप कभी बैठे हों और वहाँ हल्दी सुखाई जा रही हो तो आप उसमें से एक गाँठ माँगकर अथवा ऐसे ही उठाकर घर ला सकते हैं। साँप की केंचुली मिलना थोड़ा-सा कठिन कार्य है और वह भी अखण्डित। इसका प्रबन्ध भी आप अपने स्वयं के तरीके से कर सकते हैं।

जब भी सौभाग्य से यह तीनों पदार्थ अपने घर में आ जाएँ तो इन्हें किसी स्वच्छ से लाल रंग के कपड़े में लपेटकर सुरक्षित रख लें। दशहरा

से ठीक नौ दिन पहले यह पदार्थ कपड़े को खोलकर धूप में रख दें। अच्छी तरह धूप लगाने के बाद इसे फिर उस कपड़े को अंगारे के ऊपर एक बताशा, दो फूलदार लौंग देसी घी डुबाकर तथा कपूर को जलाकर उसके उठते सुगंधित धुएँ के ऊपर रखे रहें।

यह ध्यान रखें कि कपड़ा कहीं जल न जाए। इसके बाद किसी मिट्टी के छोटे से दिए में दो हरी अर्थात् छोटी इलायची, दो अन्य फूलदार और शुद्ध घी में डुबाई हुई लौंग, एक चुटकी सिन्दूर तथा कपूर को जलाकर उसकी भस्मी बना लें। यह भस्म अर्थात् भभूत एक कागज में पुड़िया बाँधकर रख लें।

दूसरे दिन फिर यही क्रिया प्रारम्भ से दोहराएँ अर्थात् कपड़े को खोलकर सर्वप्रथम तीनों पदार्थों को धूप दिखाएँ, फिर उक्त प्रकार की सामग्री की धूनी करके उसके ऊपर यह पदार्थ रख लें और पहले की तरह ही तीनों पदार्थों को मिट्टी के दिए में भस्म करके दूसरी पुड़िया बनाकर रख लें। पूरे ९ दिन (दशहरे का दिन अन्तिम पड़ेगा) यह प्रयोग दोहरते रहें। अन्तिम दिन की भस्म की हुई उक्त तीनों वस्तुओं को पुड़िया बनाकर कपड़े में ही रख लें। इस प्रकार अब कपड़े में पहली तीनों वस्तुओं सहित चार वस्तुएँ हो जाएँगी।

अन्तिम दिन जैसी भी पूजा-अर्चना श्रद्धाभाव से बन पड़े कर लें और यह लाल कपड़े वाली पोटली अपने घर में कहीं भी सुरक्षित रख लें। एक बार रखने के बाद फिर उसे अगले दशहरे से ठीक ९ दिन पहले तक खोलना नहीं है। अगले दशहरे से पहले यही प्रक्रिया पुनः दोहराकर पोटली फिर यथा स्थान रख दें। दिए में भस्म की हुई भस्मी की आठ पुड़िया अब आपको मिल जाएँगी। इन्हें इसी दिन घर के चारों ओर तथा चारों कोनों में दबा दें। केवल भस्मी ही दबानी है। इस प्रयोग से आपकी हर विपदा से प्रभु रक्षा करेंगे।

प्रयोग-५

किसी रोग अथवा किसी के द्वारा कुछ कर दिए जाने के परिणामस्वरूप यदि घर में दुर्भाग्य घुस आया हो, तो निम्न प्रयोग करें। यदि प्रभावित व्यक्ति करने की स्थिति में है तब तो वही यह प्रयोग करे, अन्यथा सम्बन्धित व्यक्ति के माता-पिता अथवा उसके खून से सम्बन्धित कोई भी सज्जन यह प्रयोग कर सकते हैं। यदि इनमें से कोई भी व्यक्ति प्रयोग करने के लिए उपलब्ध न हो तब यह प्रयोग किसी ऐसे व्यक्ति से करवा लें जिस पर उसकी पूर्ण आस्था हो कि वह पूर्ण विश्वास के साथ यह सब कर देगा।

यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। परन्तु अच्छा है यदि शुक्ल पक्ष के किसी रविवार से प्रारम्भ किया जाए। रविवार को सूर्य अस्त होने के बाद देर रात्रि तक कभी भी गुड़ के मीठे चावल बनाएँ। इन्हें एक पत्ते पर परोस लें। चावलों की मात्रा अपनी सुविधानुसार कुछ भी ली जा सकती है। अब एक चार बत्ती वाला आटे का दीया बनाकर उसमें सरसों का तेल डालकर जला लें। सब सामान को थाली में रखकर सम्बन्धित व्यक्ति के सिर के ऊपर से सात बार अर्थात् आरती की तरह घुमा दें। यह चावल वाला पत्ता और दीया अब निःशब्द रहकर किसी ऐसे स्थान पर रख आएँ जहाँ चार रास्ते मिलते हों। यदि कोई व्यक्ति यह प्रयोग कर रहा है तो वह स्वयं ही अपने ऊपर से यह दीया सात बार घुमा लें। प्रत्येक बार "ओ३म बं बटुकाय नमः" का उच्चारण करना है।

ठीक रविवार की तरह की गई समस्त प्रक्रिया सप्ताह के अन्य छः दिनों में भी करनी है। अन्तर केवल प्रत्येक दिन में ली जाने वाली खाद्य सामग्री का है। उसका विवरण यहाँ स्पष्ट कर देता हूँ। सोमवार को दूध की खीर लेनी है। मंगलवार को पुनः गुड़ के चावल और बुधवार को मूँग की दाल की खिचड़ी प्रयोग करनी है। गुरुवार को मीठे और पीला रंग

मिश्रित चावल रखने हैं। शुक्रवार को मीठे चावल की खीर और अन्त में शनिवार को उड़द की दाल की खिचड़ी प्रयोग करनी है।

इस प्रकार रविवार से प्रारम्भ करके शनिवार को ७वें दिन यह प्रयोग सम्पन्न होगा। इस प्रयोग को करते समय यह ध्यान रखना है कि रविवार से शनिवार तक निरन्तर एक ही क्रम में प्रयोग सम्पन्न हो। यदि बीच में किसी दिन प्रयोग छूट जाए तो वह खण्डित माना जाएगा और इस स्थिति में प्रयोग नए सिरे से पुनः किसी अन्य रविवार से प्रारम्भ किया जाएगा। जब भी प्रयोग कर रहे हों तो घर अथवा बाहर का कोई व्यक्ति टोके नहीं और सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि घर में जिस समय कोई महिला अथवा लड़की माहवारी के दिनों में हो तो यह प्रयोग कदापि न करें।

प्रयोग के अन्तिम दिन अर्थात् शनिवार को सम्बन्धित व्यक्ति से मन्दिर में प्रसाद चढ़वा दें यदि वह उठने के लायक न हो तो न हो तो उससे पैसे छुवाकर घर को कोई अन्य सदस्य यह कार्य कर दे।

प्रयोग-६

पाठकों के लाभार्थ एक ऐसा सरल प्रयोग लिख रहा हूँ जो पति-पत्नी के मध्य आपसी मन-मुटाव और तनाव को दूर करने में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रहा है। मैंने अनेक दम्पतियों पर इसका सफल प्रयोग देखा है। प्रारब्ध ही विपरीत हो तो अलग बात है अन्यथा मानसिक शान्ति दिलवाने के लिए इससे सरल और अनूठा प्रयोग अन्य नहीं हो सकता है।

यह प्रयोग होली अथवा दीवाली की रात्रि में किया जाता है। यदि बहुत ही आवश्यक हो जाए तो इसे किसी भी पूर्णिमा की रात्रि को अथवा गुरु-पुष्य या रवि-पुष्य योगों में भी किया जा सकता है। इच्छुक महिला का तन-मन से शुद्ध होना भी अनिवार्य है। महिला एक चुटकी सिंदूर, दो फूल, शुद्ध घी में तर की हुई लौंग, दो हरी अर्थात् छोटी इलायची तथा कपूर (एक टिकिया) क्रय कर लें। उसी दिन वह अपने पति की ठीक

लम्बाई के बराबर का कच्चा लाल रंग का सूत भी ले लें। यदि लाल रंग का उपलब्ध न हो तो सफेद रंग का लेकर उसे लाल रंग लें। यदि सुलभ हो तो सफेद रंग के धागे को अष्टगंध और लाल चन्दन मिश्रित जल में रंग लें।

अब एक मिट्टी के दीए में सब सामग्री को पति की लम्बाई वाले धागे सहित गरम करके राख कर लें। कपूर के कारण सब सामग्री शीघ्र ही भस्म हो जाएगी। इस भभूत को दीए में से एकत्र करके किसी स्वच्छ से कागज में पुड़िया बनाकर अपने पूजा के स्थान अथवा घर में कहीं अन्य पवित्र स्थान पर रख लें। नित्य प्रति नहा-धोकर अपनी अनामिका उंगली से ठीक भृकुटी के मध्य में इस भभूत का तिलक किया करें। तिलक भी एक विशेष प्रकार से लगाना है। पहले अनामिका उंगली की पोर में भभूत लगा लें।

अपनी गर्दन को इतना नीचे झुकाएँ कि ठोड़ी गर्दन से लगभग स्पर्श करने लगे। इस स्थिति में ही भभूत लगी उंगली का पोर भृकुटी पर लगाकर जोर से दबाव देते जाएँ और चेहरे को ऊपर की ओर उठाते जाएँ। जब आकाश की ओर आँखें हो जाएँ तो उन्हें बन्द करके ध्यान भृकुटी पर केन्द्रित कर लें। शरीर में रोमांच होने दें। आनन्द से भरकर रोंगटे खड़े कर लें। थोड़े से अभ्यास के बाद ही आप शान्ति अनुभव करने लगेंगी। आपको ब्रह्मआनन्द की अनुभूति होगी।

भभूत बनाने से लेकर अन्त तक ठीक यही प्रक्रिया पुरुष भी अपनाएँ। अन्तर केवल इतना है कि उन्हें धागा अपनी पत्नी की लम्बाई के बराबर का लेना है। दोनों की भभूत इस प्रकार अलग-अलग बनाई जाएगी।

प्रयोग-७

किसी भी रोग अथवा कैसी भी अस्वस्थता के कारण दुर्भाग्य पीछे

पड़ गया हो। दवा-दारु अथवा किसी भी प्रकार से किए जा रहे प्रयास प्रत्येक बार विफल हो रहे हों तो यह प्रयोग अपनाकर देखें। मेरे स्वयं के अनुभव में अनेक व्यक्ति ऐसे आए हैं जो दवा-दारु सेवन करके हताश हो गए थे और उन्होंने यह प्रयोग किया, दवा भी पूर्ववत् चलती रही परन्तु प्रयोग के बाद दवा ने उचित लाभ करना प्रारम्भ कर दिया और रोगी क्रमशः ठीक होता चला गया।

मेरे क्लाइंट एक वरिष्ठ डाक्टर का बेटा मानसिक तनाव से बीमार रहने लगा। लाख उपाय करने के बाद भी उसकी स्थिति में कोई भी सुधार नहीं हुआ। उन्होंने मेरे निर्देशानुसार प्रयास प्रारम्भ कर दिए। उनका लड़का आश्चर्यजनक रूप से स्वास्थ्य लाभ करने लगा। वह डॉक्टर रत्न, यन्त्र, मन्त्र आदि के विलक्षण, चमत्कारी गुणों को कभी भी स्वीकार नहीं करते थे। उन्होंने यह अवश्य स्वीकार किया कि जो-जो दवाइयाँ पिछले दो-तीन वर्षों से निष्फल हो रही थीं वह अकस्मात् प्रयोग करने के बाद अपना प्रभाव दिखाने लगीं। इसके बाद वह मौन हो गए।

प्रिय पाठकों, इस मौन के बाद ही तांत्रिक क्रियाओं का प्रारम्भ माना जाता है अर्थात् जहाँ व्यक्ति की सारी प्रक्रियाएँ, बुद्धि और यत्न जवाब दे जाते हैं, वहाँ से इन गुप्त बातों का ज्ञान प्रारम्भ होता है और उस अथाह ज्ञान के भंडार से बिरले ही मोती चुन पाते हैं। अपने 'सरलतम तांत्रिक प्रयोगों' में मैं ऐसे ही प्रभावशाली रत्न चुन-चुन कर लाया हूँ।

यदि इन प्रयोगों से लाभ प्राप्त कर व्यक्तियों की चर्चा प्रारम्भ कर दें तो एक अच्छी-खासी पुस्तक ही तैयार हो सकती है। विषय को आगे न बढ़ाते हुए उपयोगी प्रयोग कोई भी व्यक्ति, बच्चा अथवा स्त्री आदि बड़ी ही सरलता से कर सकता है।

किसी भी मंगलवार से यह प्रयोग प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रयोग के लिए एक विशेष प्रकार के दीए की आवश्यकता होती है, जो पहले से ही नित्य के प्रयोगों के लिए बनाकर रख लिए जाते हैं। यह विशेष दीए पाँच

अनाज के आटे से बनाकर तैयार होते हैं। वह अनाज हैं—गेहूँ, चावल, मूँग, उड़द और काले तिल।

यदि रोगी स्वयं इस योग्य है कि वह यह पूजा कर सकता है, तब तो बहुत ही अच्छा है। नहीं तो उसके लिए कोई अन्य भी प्रयोग कर सकता है। रोगी ठीक अपनी लम्बाई के बराबर सफेद रंग के कच्चे सूत का एक तार लेकर उसे रंग लें। इस सूत को पाँच बार मोड़कर एक बत्ती बनाए। दीए में रुई के स्थान पर यह बत्ती प्रयोग करनी है। दीए में सरसों का तेल प्रयोग करना है। तेल इतना डालना है जितनी देर तक बैठकर पूजा की जा सकती हो। इस प्रयोग में यह बात विशेषरूप से ध्यान रखनी है कि जब दीया बुझे, तब ही उठना है। इसलिए पहले से ही यह व्यवस्था रख ली जाए कि दीया उतने समय तक ही जलता रहे जितनी देर रोगी के बैठने की क्षमता है।

दिन अथवा रात किसी भी समय यह प्रयोग किया जा सकता है। प्रयोग का समय अपनी सुविधानुसार चुना जा सकता है। परन्तु यदि पूजा दिन में १२ बजे से पहले है तो पूजा कर्ता का मुँह पूरब दिशा की ओर और यदि इसके बाद का समय चुनना है तो मुँह पश्चिम की ओर करके प्रयोग करना है। जहाँ तक सम्भव हो सके एक समय की पाबन्दी रखें। अर्थात् यदि पहला प्रयोग आप सायंकाल ७ बजे से प्रारम्भ कर रहे हैं तो अन्य भी लगभग इस समय से ही प्रारम्भ किए जाएँ।

प्रयोग के लिए नित्य एक नया दीया, रोगी की लम्बाई के बराबर की नई बत्ती और तेल रखना है। पुराने प्रयोग में आए दीयों को कहीं नदी, तालाब अथवा किसी पेड़ आदि के नीचे प्रतिदिन अथवा एक साथ जमा करके अपनी सुविधानुसार छोड़ते रहें। जब लगे कि दीए समाप्त होने को हैं, तो नए दीए और बनाकर रख लें। यह प्रयोग ४० दिन का है। इस बीच एक दिन की भी नागा नहीं होनी चाहिए।

इस प्रयोग में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी कार्य की

इच्छापूर्ति के उद्देश्य से भी किया जा सकता है। उसके लिए प्रयोग में थोड़ा-सा परिवर्तन करना होता है। इच्छापूर्ति के लिए किए जा रहे प्रयोग में सरसों के तेल के स्थान पर मीठे तिल का प्रयोग किया जाता है।

प्रत्येक कार्य के अनुरूप बैठकर जपने वाले मन्त्र भी भिन्न हैं। उन मन्त्रों का वर्णन तथा उनकी जप संख्या यहाँ दे रहा हूँ। यदि निश्चित जप संख्या के बाद भी दीया जलता रहे तो उसके बुझने तक केवल 'सीताराम' जपते रहें।

पूजा स्थल पर थोड़ा-सा गंगाजल रख लिया करें। यदि सुलभ हो तो उसमें एक दो तुलसी की पत्ती भी डाल लिया करें। दीया बुझने के उपरान्त इस गंगाजल से आचमन करके बचा भाग अपने ऊपर तथा सारे घर में छिड़क देना चाहिए।

यदि दुष्ट प्रवृत्ति व्यक्तियों के कुकृत्यों के कारण कोई व्यक्ति उसका घर परिवार दुकान अथवा व्यापार आदि प्रभावित हो रहा हो। उसके लिए रामरक्षा स्तोत्र उक्त प्रकार से दीया जलाकर पाठ करना बहुत ही प्रभावी सिद्ध हुआ है। रामरक्षा स्तोत्र का विस्तृत विवरण मैं अपनी पुस्तक 'सरलतम धनदायक तांत्रिक प्रयोग' में लिख चुका हूँ। इच्छुक सज्जन उसमें से अथवा किसी भी अन्य माध्यम से यह स्तोत्र प्राप्त कर सकते हैं।

व्यापारी वर्ग में एक-दूसरे की सम्पन्नता देखकर ईर्ष्या-द्वेष उपजना, स्वार्थवश मारक प्रयोग करना अथवा करवाना प्रायः सम्भावित रहता है। पीड़ित व्यक्ति के लिए यह प्रयोग रामबाण सिद्ध होता है। असाध्य रोगों में व्यक्ति यदि नित्य यह प्रयोग करे तो उसको स्वास्थ्य लाभ होता है और उसका मनोबल बढ़ता है। अर्द्ध-विक्षिप्त मनोवृत्तियों अथवा किसी भी अन्य कारण से उत्पन्न हुए दुर्भाग्य को दूर करने में यह प्रयोग सर्वश्रेष्ठ है। यह उन भुक्त भोगियों की मान्यता है जिन्हें मेरे इस प्रयोग से आशातीत लाभ हुआ है अथवा हो रहा है।

सन्त तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' अथवा रामायण पूर्णरूप से मंत्रमय है। इसकी एक-एक चौपाई में मन्त्र शक्ति का रहस्य छुपा हुआ है। कलियुग में जहाँ गायत्री मन्त्र सहित अन्य मन्त्रों को भगवान् शंकर जी ने इस उद्देश्य से 'कील' दिया था, जिससे कि इन मन्त्रों की शक्ति का कोई दुरुपयोग न कर सके।

वहीं रामायण की चौपाइयों को भगवान् ने शक्ति भी प्रदान कर दी। इस शक्ति प्रभाव के कारण ही वह कलिकाल में भी कार्य करवाने में समर्थ बन गई। यहाँ कुछ मन्त्रों का वर्णन कर रहा हूँ। ऊपर के प्रयोग में अपने कार्यानुसार मन्त्र चुनकर जप प्रारम्भ करें।

विद्यार्थी के लिए

शारद दारु नारि सम स्वामी, राम सूत्रधर अन्तर्यामी।
जेहि पर कृपा करहि जन जानी कवि उर अजिर नचावहि बानी ॥

नौकरी पाने के लिए

विश्व भरन पोषण कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई ॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहि होई तात तुम्ह पाहीं ॥

सुखद यात्रा के लिए

प्रबिसि नगर कीजै सब काजा।
हृदय राखि कोसलपुर राजा ॥

न्यायालय सम्बन्धी कार्यों के लिए

पवन तनय बल पवन समाना।
बुद्धि विवेक विग्यान निधाना ॥

परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए

जेहि पर कृपा करहि जन जानी ।
कवि उर अजिर नचावहि बानी ॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँति ।
जासु कृपा नहि कृपा अघाति ॥

रोगी के लिए

निर्विकार परमात्मा, व्यापक कन कन माहिं ।
फिर विकार क्यों कर रहे, तब तो प्रभुता नाहिं ॥

सूर्य को अर्घ्य देने के लिए

तेन रूप रसधाम तुम, किरन माल अभिराम ।
तम हारी भगवान रवि, तुमको नित्य प्रणाम ॥

प्रत्येक मंगल के लिए

मंगल भवन अमंगल हारी ।
द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी ॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँति ।
जासु कृपा नहि कृपाँ अघाती ॥

प्रत्येक कामना सिद्धि और विपत्ति के लिए

कहई रीछपति सुनु हनुमाना ।
का चुप साधि रहेहु बलवाना ॥
पवन तनय बल पवन समाना ।
बुद्धि विवेक विग्यान निधाना ॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं ।
जो नहि होई तात तुम्ह पाहीं

★ दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय ★

दुर्भाग्य के लिए

मन्त्र महामनि विषय ब्याल के।
मेढत कठिन कुअंक भाल के॥

शत्रु से र्नेह के लिए

जाके सुमिरन ते रिपु नाशा।
नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा।

विषमताओं को जीतने के लिए

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई,
गोपद सिन्धु अनल सितलाई।
गरुण सुमेरु रेनु सम ताहि,
राम कृपा करि चितवहिं जाहि॥

प्रत्येक अमंगल अथवा दुर्घटना से रक्षा के लिए
कानन, भधर, वारि, बयारि, महाविष, ब्याधि, दवा अरि घेरे।
संकट कोटि जहाँ तुलसी हित, मातु-पिता, सुत-बन्धु न नेरे॥
राखहिं राम कृपालु तहां, हनुमान से सेवक हैं जेहि केरे।
नाक, रसातल, भूतल मह, रघुनायक एक सहायक मेरे॥

सास-बहु अथवा पति-पत्नी में र्नेह के लिए

बैरे न कर काहु संग कोई।
राम प्रताप विषमता खोई॥

पुत्र प्राप्ति के लिए

दुई सुत सुन्दर सीता जाय।
लवकुश वेद पुरानन गाए॥

★ दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय ★

घट की प्रार्थि के लिए

ऊचे हू को, नीचे हूँ को,
रंक हू को, रवहु को,
सहज, सुलभ आपनो सो घरु है।

विच्छेदन के लिए

जाके प्रिय न राम वैदेही,
तजिए ताहि कोटि वैरी सम जद्यपि परम सनेही।

संकट नाश के लिए

जो प्रभु दीन दयालु कहावा, आरत हरद बेद जसु गावा।
जपहि नामु जन आरत भारी, मिटहि कुसंकट होहिं सुखारी ॥

रोग नाश के लिए

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा ॥

मृत्यु भय के लिए

नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ॥

नजर उतारने के लिए

स्याम गौर सुन्दर दोड जोरी।
निरखहि छबि जननी तृन तोरी ॥

दरिद्रता दूर करने के लिए

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारि के ॥

दुर्भाग्य के लिए

मन्त्र महामनि विषय ब्याल के।
मेटत कठिन कुअंक भाल के॥

शत्रु से स्नेह के लिए

जाके सुमिरन ते रिपु नाशा।
नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा।

विषमताओं को जीतने के लिए

गरल सुधा रिपु करहिं मितार्ई,
गोपद सिन्धु अनल सितलाई।
गरुण सुमेरु रेनु सम ताहि,
राम कृपा करि चितवहिं जाहि॥

प्रत्येक अमंगल अथवा दुर्घटना से रक्षा के लिए
कानन, भधर, वारि, बयारि, महाविष, ब्याधि, दवा अरि घेरे।
संकट कोटि जहाँ तुलसी हित, मातु-पिता, सुत-बन्धु न नैरे॥
राखहिं राम कृपालु तहां, हनुमान से सेवक हैं जेहि केरे।
नाक, रसातल, भूतल मह, रघुनायक एक सहायक मेरे॥

सास-बहु अथवा पति-पत्नी में स्नेह के लिए

बैरे न कर काहु संग कोई।
राम प्रताप विषमता खोई॥

पुत्र प्राप्ति के लिए

दुई सुत सुन्दर सीता जाय।
लवकुश वेद पुरानन गाए॥

★ दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय ★

घर की प्राप्ति के लिए

ऊचे हूँ को, नीचे हूँ को,
रंक हूँ को, रवहुँ को,
सहज, सुलभ आपनो सो घरु है।

विच्छेदन के लिए

जाके प्रिय न राम वैदेही,
तजिए ताहि कोटि वैरी सम जद्यपि परम सनेही।

संकट नाश के लिए

जो प्रभु दीन दयालु कहावा, आरत हरद बेद जसु गावा।
जपहि नामु जन आरत भारी, मिटहि कुसंकट होहिं सुखारी॥

रोग नाश के लिए

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥

मृत्यु भय के लिए

नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट॥

नजर उतारने के लिए

स्याम गौर सुन्दर दोड जोरी।
निरखहि छबि जननी तृन तोरी॥

दरिद्रता दूर करने के लिए

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारि के॥

★ दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय ★

धन सुख प्राप्ति के लिए

जे सकाम नर सुनहिं ले गावहिं ।
सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहिं ॥
सुख दुर्लभ सुख करि जग माहीं ।
अंतकाल रघुपति पुर जाहीं ॥

ख्याति प्राप्ति के लिए

साधक नाम जपहि लय लाएँ ।
होहि सिद्धि अनिमादिक पाएँ ॥

हर प्रकार के सुख के लिए

सुनहि विमुक्त विरत अरु विषई ।
लहहि भगति गति संपति नई ॥

विवाह के लिए

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साज संवारि कै ।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुंवरि लई हंकारि कै ॥

विद्यार्थी के लिए

गुरु गृह गए पढ़न रघुराई ।
अल्पकाल सब विद्या पाई ॥

इन मन्त्रों के स्थान पर आप अपनी श्रद्धानुसार दुर्गा सप्तशती का भी कोई मन्त्र कार्यानुसार चुन सकते हैं। दुर्गा सप्तशती का प्रत्येक मन्त्र भी अपने में सिद्ध है। पाठकों के अपने जपने के लिए कुछ मन्त्र होंगे। ऐसे पाठक मेरे प्रयोग के साथ वह मन्त्र भी जप कर सकते हैं। कुछ भी करें, श्रद्धा-विश्वास उसके लिए परम आवश्यक है।

प्रयोग-८

किसी दुष्ट प्रकृति व्यक्ति के कारण आप परेशान हैं। कारोबार आदि में जैसे उसकी कुदृष्टि से कुठारघात हो गया है अथवा किसी भी अन्य कार्य में उसके क्रिया-कलापों से तनावग्रस्त रहते हैं तो निम्न प्रयोग करें। एक बार करने से यदि प्रभाव क्षीण दिखाई दे तो प्रयोग को दो-तीन बार पुनः दोहरा दें। प्रभु उसके कुचक्र से आपकी अवश्य ही रक्षा करेंगे।

किसी भी दिन से ऊषाकाल में यह प्रयोग किया जाता है। ऊषा काल में सूर्योदय से लगभग आधा घण्टा पहले का मान लें। इस बेला में बट अर्थात् बरगद के वृक्ष के नीचे यह प्रयोग करना है। थोड़ा सा कच्चा सूत खरीदकर पहले से रख लें। जिस दिन से यह प्रयोग प्रारम्भ करना है उस दिन एक सरसों के तेल का दीया, एक बताशा, कपूर और दो फूलदार लौंग कच्चे सूत के साथ उक्त पेड़ के नीचे ले जाएँ। पेड़ के चारों ओर सात बार कच्चा सूत लपेट दें। प्रत्येक चक्कर के बाद सम्बन्धित व्यक्ति का नाम लेते हुए प्रभु से प्रार्थना भी करते जाएँ कि उस व्यक्ति को सुबुद्धि आए और आपका पीछा छूट जाए। सात बार इसी प्रकार बोलते हुए परिक्रमा करने के बाद उस व्यक्ति का ध्यान करते हुए दीया जला दें। पास ही कपूर पर रखकर बताशा भी जला दें और उनके ऊपर ली हुई दोनों लौंग भी जलने को छोड़ दें।

जिस दिन यह प्रयोग करें उस दिन से सात दिनों तक यही क्रिया दोहराते रहें अर्थात् प्रत्येक दिन प्रातः ऊषाबेला में सात बार सूत लपेट दें, दीया जला दें, कपूर पर रखकर बताशा और लौंग की धूनी कर दें। मन में निरन्तर उस बीच प्रभु से माँगते रहें कि प्रभु उसे सद्बुद्धि दें और मेरा उससे पीछा छुड़वायें।

अब सातवें दिन प्रयोग के बाद सारा कच्चा सूत खोलकर अपने साथ घर ले आएँ। यदि सम्बन्धित व्यक्ति के बाएँ पैर की धूल मिल जाए तो एक चुटकी एकत्र कर लें। यदि यह सम्भव न हो तो उसका कोई

छाया चित्र प्राप्त कर लें। यदि यह भी सम्भव न हो तो केवल मन उस व्यक्ति पर केन्द्रित कर लें और बट वृक्ष से खोला हुआ कच्चा सूत जला कर राख कर दें। इसमें यदि उपलब्ध हो, उस व्यक्ति का फोटो अथवा धूल अथवा दोनों ही भस्म करने के लिए छोड़ दें। इस प्रकार बनी हुई राख को कहीं बहते पानी अथवा कुएँ आदि में डालकर बिना पीछे मुड़े घर लौट आएँ। जैसे आप किसी बहुत बड़ी समस्या से पिण्ड छुड़ाकर लौट रहे हों, ऐसी भावना बना लें।

कई बार किसी के पास कोई ऐसी गुमनाम चिट्ठी पहुँच जाती है जिससे कि उसकी शान्ति भंग हो जाती है। इस प्रयोग से इसमें भी आशातीत लाभ मिलता है। पूरा प्रयोग ऊपर की भाँति ही करना है। फोटो के स्थान पर उस व्यक्ति का काल्पनिक ध्यान करते हुए उसका पत्र जला दें।

प्रयोग-९

दुर्भाग्य दूर करने के लिए एक सरल प्रयोग लिख रहा हूँ। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है। अपनी सामर्थ्य के अनुसार दो-चार वर्ष में एक बार यह अवश्य कर लिया करें। दुर्भाग्य पास नहीं आएगा।

अपनी आयु वर्षों में निकल लें। इसके लिए लगभग आयु प्रर्याप्त है। माना आपकी आयु ३० अथवा ३१ वर्ष है। सदैव आयु की ऊपर वाली सीमा चुन लें। आयु कम न रह जाए। अब प्रातः निहारमुँह आयु की संख्या के बराबर जीवित मछलियाँ कहीं से क्रय करके ले आएँ और उन्हें कहीं बहते पानी अथवा तालाब में छोड़कर जीवनमुक्ति दान दें। इसी प्रकार ही अपनी आयु के बराबर अथवा अधिक किसी बहेलिए अर्थात् चिड़ीमार से उसके पिंजड़े में बन्द तोते, लाल मुनियाँ अथवा कोई अन्य पक्षी उससे क्रय करके मुक्त कर दें। यह बहुत ही पुण्य का कार्य है।

जीवन की यह छोटी-छोटी और साधारण सी लगने वाली बातें

सौभाग्य वृद्धि में निश्चित रूप से सहायक होती हैं। मेरे एक परिचित के बच्चे जीवित नहीं रहते थे। उन्होंने अपनी सामर्थ्य से अधिक अनेक यत्न करके देख लिए परन्तु सारे के सारे निष्फल रहे। अन्ततः मैंने उन्हें तथा उनकी पत्नी को मछलियों वाला प्रयोग करने की सलाह दी। प्रभु की उन पर कृपा हुई। अब उनके तीन पुत्र हैं।

ऐसे ही मेरे एक अन्य मित्र के साथ दुर्भाग्य पीछे लगा हुआ था। उनके पुत्र नहीं होता था। यदि हुआ भी तो वह साल छह महीने से अधिक जीवित नहीं रहता था। हाँ पुत्रियाँ होती थीं तो वह जीवित रह जाती थीं। प्रभु की विचित्र लीला थी। उन्होंने मछली वाला प्रयोग किया। इसके साथ ही साथ मैंने उन्हें सलाह दी कि वह मादा पशु-पक्षी दान करते रहें। इसके लिए सबसे प्रभावशाली दान मैंने किसी भी दुधारु पशु का अनुभव किया है। उन्होंने एक ब्याही बकरी तथा उसका बच्चा (बकरी) दान कर दी। एक चमत्कार हुआ अगले वर्ष ही उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।

दुधारु पशु का दान सौभाग्यवर्धक है। इन पशुओं में अपनी समर्थ्य के अनुसार आप बकरी, गाय, भैंस, कुत्ता, सुअर आदि कुछ भी ले सकते हैं। इस प्रयोग में यह बात विशेष रूप से ध्यान रखनी है कि एक तो दान निःस्वार्थ दें, दूसरे दान लेने वाला कोई सुपात्र ही हो। उसका मन निश्छल और लालच रहित हो और जो आपको हृदय से दीन होकर आशीर्वाद दे। अन्तात्मा से निकली हुई पुकार अवश्य ही पूर्ण होती है। यदि ऐसा न होता तो माता-पिता, गुरुजन अथवा किसी अन्य बड़े से आशीर्वाद लेने की प्रथा का लोप ही हो गया होता। पता नहीं किसके पुण्य कर्म किसको कहाँ लग जाएँ और सौभाग्यवर्धक सिद्ध हों।

मैं दान के लिए सुपात्र निम्न वर्ग के सर्वथा तिरस्कृत वर्ग को मानता हूँ। परन्तु वह वर्ग व्यवसायिक न हो। जैसे आजकल प्रायः भिखारी भीख के लिए दिखाई देते हैं। हाथ-पैर होते हुए भी वह कर्म

प्रधान नहीं होते। यह वर्ग काहिल है, सुपात्र नहीं। हिजड़ों अर्थात् नपुंसक व्यक्ति अथवा शारीरिक रूप से असहाय व्यक्ति को सुपात्र समझें। कोढ़ी समाज का सर्वाधिक तिरस्कृत व्यक्ति है, उसे दान दें। इस विषय को आगे बढ़ाना आधारहीन है। सुपात्र की खोज में बौद्धिक वर्ग पर ही छोड़ता हूँ। वही अपनाएँ जो आपका अन्तर्मन गवाही देता है। यह ध्यान रखें कि वह कभी भी आपको गुमराह नहीं करेगा। आवश्यकता केवल उसे ध्यान से सुनने की है।

प्रयोग-90

प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्वयं का शरीर अपने में सम्पूर्ण है। यह प्रकृति की विचित्रता का अनूठा नमूना है। शरीर से परे कुछ नहीं है। सब कुछ इसी में ही निहित है। इस शरीर से हम कोई भी, कैसा भी काम ले सकते हैं। यदि हमने शरीर में स्थित आत्मा को पहचान लिया तो समझिए हमने ब्रह्म को पहचान लिया। क्योंकि आत्मा ही ब्रह्म है, वही परम आत्मा है। आवश्यकता केवल उसे पहचानने की है। कहा भी है, “दिल के आइने में है तस्वीरे यार, जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली।” यह हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि हमें गर्दन झुकाकर देखने तक का समय नहीं है। मस्तिष्क कितना ही तनावपूर्ण हो एक सैकिंड को अपने मुँह की दरार थोड़ी सी बन्द ही बन्द चौड़ी करके देखिए चेहरा एकदम से तनावमुक्त हो जाएगा। दि विंची की विश्व प्रसिद्ध पेंटिंग ‘मोनालिसा’ की तरह सदैव चेहरा मुस्कुराता हुआ रखिए, उस पर तनाव अथवा शिकन मत आने दीजिए। हल्का सा अभ्यास है। आप पाएँगे कि आप प्रसन्न हैं। जो कुछ हो रहा है प्रभु की कृपा से अच्छा ही हो रहा है। फिर इसमें चिन्ता करने से तो समाधान नहीं हो जाएगा अथवा चेहरे को तनावग्रस्त बनाए रखेंगे तो कोई परिणाम नहीं निकलेगा।

आइए, आपको तनावमुक्त रहने का अनूठा प्रयोग बताता हूँ।

इससे पहले आपको यह पढ़ने अथवा सुनने का अवसर नहीं मिला होगा। आप स्वयं कहेंगे, “वास्तव में यह तो बहुत ही सरल है, हमने कभी ऐसा सोचा ही नहीं।” यह अभ्यास तन्त्र और अध्यात्म में प्रवेश करने का प्रथम द्वार है।

किसी ऐसे दर्पण के सामने खड़े जो जाइए जिसमें आपको अपना चेहरा स्पष्ट दिखाई देता हो। यह प्रयोग अपनी सुविधानुसार किसी समय भी कर सकते हैं। अच्छा होगा यदि आप यह रात्रिकाल में करें क्योंकि उस समय चित्त जल्दी एकाग्र हो जाता है। अब दर्पण में अपने चेहरे को निहारिए। इतनी देर तक देखते रहिए कि दर्पण में आपके चेहरे के अतिरिक्त कुछ भी न दिखाई दे। आँखें थकने लगे तो बन्द कर लें और हल्के से पलकें दबाकर गर्दन को थोड़ा सा ऊपर कर लें। दोनों हाथों से बन्द आँखों के ऊपर हल्का सा दबाव दें। इससे आँखों के आस-पास की मांसपेशियों को आराम मिलेगा। दर्पण पर त्राटक न करें अर्थात् बलात् आँखें न गड़ाए रहें। क्योंकि यह हठयोग होगा। मैं अपने प्रयोगों से हठ योग को जहाँ तक सम्भव होता है स्थान नहीं देता। सहज मार्ग अच्छा है अर्थात् जो स्वतः उत्पन्न हो, आन्तरिक प्रेरणा से ओत-प्रोत होकर क्रिया-कलाप होते रहें और सहजता से वांछित प्राप्तियाँ होती रहें।

इस प्रयोग में यह अभ्यास करना है कि आँखें बन्द होने पर भी आपको अपना ही चेहरा दिखाई देता रहे। अभ्यास के प्रथम चरणों में दर्पण के सामने जब आप आँखें बन्द कर लेंगे तो आपको सब कुछ अन्धकारमय ही दिखाई देगा—केवल काला-काला। आँखें बन्द होने पर जब आपको ऊषा की लाली-सा नारंगी रंग दिखाई देने लगे तब समझिए कि आपकी साधना पूरी होने लगी है। जब भी आँखें बन्द करें तब सूर्य की रश्मियों का ध्यान बनाए रखें। इसमें भी नारंगी रंग आने में सुविधा होगी।

सबसे अच्छी विधि यह है कि प्रातःकालीन अथवा संध्याकालीन

सूर्य को जबकि वह उदय अथवा अस्त होने की स्थिति में होता है, देखने का प्रयास करें। परन्तु यह सहज रूप से ही करना है, त्राटक नहीं करना। इससे अनर्थ ही पूर्ण आशंका है। जब इच्छा हो पलकें बन्द कर लें। आँखों को बन्द ही बन्द सूर्य की ओर ही रखे रहें। आपको नारंगी रंग का आभास होने लगेगा। धीरे-धीरे अभ्यास के बाद दिन अथवा रात किसी भी समय आँखें बन्द करते ही यह रंग दिखने लगेगा और इसके बाद दर्पण में अभ्यास करते-करते वह स्थिति आ जाएगी कि उस रंग में आपको केवल अपना ही चेहरा दिखाई देता रहेगा। भले ही आप आँखें बन्द करके रखें अथवा खोलकर।

यह बहुत ही सरल प्रयोग है। अधिक से अधिक एक माह के अन्दर आप इसके सिद्धहस्त हो जाएँगे। अब आते हैं इसके प्रायोगिक पहलू पर। जब भी आपकी मनोस्थिति ठीक न हो, आप तनावपूर्ण अनुभव कर रहे हों अथवा आपको लगने लगा हो कि दुर्भाग्य आपके ऊपर हावी होना चाह रहा है। इसके अतिरिक्त किसी भी दुविधा, विपरीतस्थिति अथवा दुर्भाग्य हावी होता प्रतीत होने लगे। सर्वप्रथम आप चेहरे को तनावमुक्त कर लें।

इसका सबसे सरल उपाय है कि चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान ले आएँ। आँखें बन्द करके नारंगी रंग सामने आने दें। सब कुछ भूलकर जैसे उसमें गहरे पैठ जाएँ। अब अपना चेहरा देखने लगे। आपको स्वतः ही सुमार्ग मिल जाएगा। तनावपूर्ण वातावरण स्वतः सुखद होने लगेगा और धीरे-धीरे विपरीत परिस्थिति आपके अनुकूल दिखती प्रतीत होने लगेगी। आप अनुभव करने लगेगे कि दुर्भाग्य दूर होकर सौभाग्य का आगमन प्रारम्भ हो रहा है।

निरन्तर इस प्रकार से दुर्भाग्य पर विजय होने के बाद आप आशावादी विचारधारा के धनी हो जाएँगे। निराशावादी स्थिति से इस प्रकार आपकी एक दिन पूर्ण रूप से विजय हो जाएगी। आपको लगने लगेगा कि समस्त

ब्रह्मांड में आपका चेहरा ही घूम रहा है। आप ही सर्वस्व में विद्यमान हैं। यही आत्मा और परमात्मा का मिलन है और इससे बड़ा सुख और सौभाग्य अन्य नहीं है।

प्रयोग-११

प्रायः सुनने को मिलता है कि किसी की दृष्टि से अथवा कुछ उल्टा-सीधा करवा देने से घर, दुकान, फैक्ट्री अथवा खेत आदि से सौभाग्य का पलायन हो गया है। वहाँ समृद्धि, वैभव, सम्पन्नता और उन्नति अपेक्षित तो रहती है परन्तु वास्तव में इन सबका आगमन नहीं होता। ऐसे भुक्तभोगियों के लिए एक सरल प्रयोग लिख रहा हूँ।

चित्रा नक्षत्र काल में पीपल और वट वृक्ष अर्थात् बरगद की चार-चार डंडियाँ तोड़ लें। इनको लम्बाई में अपने हाथ की चार उँगलियों के बराबर काट लें। इस नक्षत्र में ही चार उँगलियों के बराबर चार सफेद आक की जड़ भी खोदकर निकाल लें। तीनों वस्तुओं में सफेद आक ही दुर्लभ है। यदि कोई सज्जन बहुत ही आवश्यकता के समय इसे पाना ही चाहते हैं तो उन्हें मैं निःस्वार्थ उपलब्ध करवा दूँगा। वैसे आप केवल पीपल और वट वृक्ष की डंडियों से भी कार्य चला सकते हैं।

अब प्रत्येक डंडी में ढाई इंच की एक-एक कील ठोक दें। कील लगाने से पूर्व कीलों को गंगाजल से पवित्र कर लें। प्रयास यह रहे कि कील घुसाते समय वह डंडी में पूरी तरह से समा जाए उसे बेधकर इधर-उधर न निकल जाए। कील ऐसी लगी होनी चाहिए कि डंडी के बाहर देखने से उसके होने का पता न चले। जिस ओर कील का सिरा हो उस सिरे पर दो-चार दाने नागकेसर के रखकर ऊपर से लाल रंग का साफ कपड़ा बाँध दें।

इन दोनों लकड़ियों को अब अपने घर के चारों कोनों में इस प्रकार दबाना है कि कील का सिर ऊपर की ओर रहे। यदि आपने सफेद आक

की जड़ भी ली है तो वह भी खड़ी करके इन दोनों के साथ घर के चारों कोनों में दबा दें। इन तीनों के साथ लोहे का एक छोटा-सा त्रिशूल, चाँदी से बना छोटा-सा नाग और नागिन का जोड़ा, एक छेद वाला ताँबे का सिक्का (यदि यह न मिले तो ताँबे की चादर में से स्वयं काटकर उसमें छेद करके काम चला लें) तथा एक कौड़ी दबा दें।

ऊपर से देखने पर पता न चले कि वहाँ कुछ दबाया गया है। इनके ऊपर ईंट, सीमेंट आदि की चिनाई भी बाद में करवाई जा सकती है। एक बार यह सब दबाने के बाद उन्हें दुबारा देखने की आवश्यकता नहीं है। सब सामान एकत्र करने से लेकर दबाने का समय चित्रा नक्षत्र काल होना आवश्यक है।

यह सब दुकान, फैक्ट्री, खेत अथवा अन्य ठिकानों पर भी दबाए जा सकते हैं। उसके लिए आपको प्रति ठिकाने के अनुसार प्रत्येक वस्तु चार-चार के हिसाब से ही लेनी होगी।

प्रयोग-92

एक बहुत ही सरल प्रयोग लिख रहा हूँ। सौभाग्य की कामना रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री यह प्रयोग कर सकता है। प्रयोग शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करना है। वैसे इस प्रकार के प्रयोगों के लिए मैं प्रायः ऐसा दिन चुनता हूँ कि समाप्ति ठीक दीवाली अथवा होली के दिन हो जिससे कि अन्तिम क्रिया इन दिनों की पूजा के साथ ही सम्पन्न हो जाए। तन्त्र में इन दिनों का विशेष महत्त्व है।

यह मैं पाठकों की अपनी सुविधा पर छोड़ता हूँ कि वह किस समय से प्रारम्भ करें। सोमवार से लेकर रविवार तक यह प्रयोग कुल सात दिन का होता है। प्रत्येक दिन रात्रि को सोने से पूर्व कुछ सिक्के सिरहाने रखकर सोएँ और प्रातः वह किसी दरिद्र को अथवा सुपात्र को दान कर दें। इस दान का विवरण इस प्रकार है। यदि आप धन सम्पदा

आदि पक्ष को लेकर यह प्रयोग कर रहे हैं तो रात्रि को पैसे रखकर प्रातः यह दान कर दें।

स्वास्थ्य के लिए यदि यह प्रयोग किया जा रहा है तो प्रातः यह पैसे किसी ऐसे स्थान अथवा व्यक्ति को दान करें जो उनका उपयोग निःस्वार्थ किसी की चिकित्सा के लिए कर रहा हो। दाम्पत्य सुख के लिए करने वाले प्रयोग में इन पैसों से उस पूरे सप्ताह में किसी सुहागिन स्त्री को किसी दिन भोजन करवा दें। बच्चे की शिक्षा सम्बन्धी चिन्ता के लिए यह पैसा किसी असहाय विद्यार्थी की सहायता में लगा दें। विवाह न होने सम्बन्धी अड़चन के लिए इन पैसों से प्रातः गुड़ खरीद कर सातों दिन रोटी पर रखकर गाय को स्वयं खिला दें।

नपुंसकता दूर करने के लिए यह पैसे एक साथ जमा करके किसी भी दिन हिजड़े को दान करके उसी दुआएँ लें। कोढ़ी को किया गया दान न्याय सम्बन्धी कार्यों में शुभ सिद्ध होता है। अकारण जेल गए किसी व्यक्ति के लिए यह प्रयोग यदि उसके निकट खून के सम्बन्धी द्वारा करवा दिया जाए तो उसके लिए सौभाग्यशाली सिद्ध होता है। इन पैसों से एक कम्बल खरीद कर रख लें। सर्दों में किसी अमावस्या की ठिठुरती हुई रात्रि में यह चुपचाप किसी सोते हुए असहाय व्यक्ति के ऊपर डाल दें। नित्य प्रातः इन पैसों से गुड़ चना खरीद कर बन्दरों को खिला दें, चावल खरीद कर चिड़ियों को डाल दें अथवा बूरा-चीनी तथा आटा खरीद कर चींटियों के लिए डाल दिया करें। इन सबसे सौभाग्य में वृद्धि होती है।

अपने प्रयोग के लिए सोमवार को नाग और नागिन का एक जोड़ा चींटी देकर किसी सुनार से बनवा कर घर ले आएँ। अगले दिन अर्थात् मंगलवार को नौ छेद वाले ताँबे के सिक्के जमा कर लें। यदि यह सुलभ न हों तो स्वयं ही ताँबे की पतली शीट से यह काटकर बना लें। बुधवार को पाँच पीली कौड़ी जमा कर लें। गुरुवार को तीन पीतल के सिक्के

जमा कर लें। यदि यह उपलब्ध न हों तो ताँबे की तरह यह भी पीतल की शीट में से सिक्के के आकार के स्वयं काट कर बना लें। शुक्रवार को चाँदी की छोटी-छोटी तीन जोड़ी अर्थात् छह पादुकाएँ सुनार से बनवा लें। शनिवार के दिन लोहे के ८ छोटे-छोटे त्रिशूल बनवा कर जमा कर लें। अन्तिम दिन अर्थात् रविवार को एक स्वच्छ शीशी में एक चम्मच शहद लेकर बाकी में गंगाजल भर लें।

अब ऊपर जमा की हुई सब वस्तुएँ भी एक-एक करके शीशी में छोड़ दें और शीशी का ढक्कन अच्छी तरह से बन्द कर दें। सारा सामान इस आकार का रखें कि वह शीशी में सरलता से समा जाए। यदि आप सामान बड़ा ले रहे हैं तो उसी के अनुसार आपको शीशी भी बड़ी लेनी पड़ेगी। यह सब आपकी सुविधा पर ही छोड़ता हूँ कि वस्तुएँ किस आकार की जमा करें जिससे कि वह शीशी में अच्छी तरह समा जाएँ।

इस शीशी की श्रद्धाभाव से जैसे भी आप पूजा-अर्चना कर सकते हैं कर लें और इसे उठाकर घर, दुकान अथवा अन्य कहीं किसी पवित्र स्थान में रख लें। यह ऐसे ही रखी रहनी है। इसके बाद इसका कुछ भी नहीं करना है। यदि आप नया घर बनवा रहे हैं तो यह मुख्य द्वार के दायीं ओर जमीन में भी दबा सकते हैं। यदि मकान आपने बना बनाया खरीदा है तो यह मुख्य द्वार के बायीं ओर दबा दें। इस सरल प्रयोग के बाद से सौभाग्य का आरम्भ हो जाना मैं अनेक बार लोगों के अनुभव में देख चुका हूँ।

प्रयोग-93

नारियल की जाति का एक छोटा-सा फल आता है जिसे श्रीफल कहते हैं। यह सुगमता से उपलब्ध होने वाली वस्तु है। इसे बहुत ही समृद्धकारी, शुभ और पवित्र माना गया है। इस मंगलकारी फल का एक सरलतम तान्त्रिक प्रयोग लिख रहा हूँ।

किसी भी पूर्णिमा के दिन एक श्रीफल घर ले आएँ। इसी दिन पाँच पीली कौड़ी भी ले आएँ। दोनों को कच्चा दूध, गंगाजल तथा तुलसी मिश्रित जल से पवित्र कर लें। इसके बाद इनमें लाल चन्दन का तिलक लगाकर किसी साफ से डिब्बे में बन्द कर लें। इस डिब्बे की श्रद्धानुसार जैसी भी पूजा बन पड़े कर लें। अब श्रद्धाभाव से निम्नलिखित मन्त्र की एक माला अर्थात् १०८ बार जप करें।

यह मन्त्र एक माला प्रतिदिन के हिसाब से अमावस्या तक निरन्तर जपना है। अमावस्या से अगले दिन अर्थात् शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आगामी पूर्णिमा तक मन्त्र जाप एक माला से उतनी कम संख्या में जपे जितनी कि सरलता से आप नित्य जप कर सकते हैं। मान लीजिए आप मन्त्र १२ बार नित्य जपने का संकल्प लेते हैं तो १०८ से १२ कम अर्थात् ९६ बार मन्त्र जपें।

नित्य जप संख्या के बराबर जो संख्या निश्चित करके मन्त्र जपें उतनी बार हवन सामग्री से आहुति दे दें। जैसे यहाँ आप को ९६ जप तो ऐसे ही करने हैं तथा अगले १२ मन्त्र हवन सामग्री को बारह आहुतियाँ अग्नि को देकर मन्त्र जप करें। हवन सामग्री में काले तिल, बताशे, घी और कमलगट्टे अवश्य मिलाने हैं।

पूर्णिमा से पूर्णिमा तक एक माह में आपका प्रयोग पूर्ण हो जाएगा। अब इस डिब्बी को अपने घर में कहीं भी शुद्ध अथवा पूजा के स्थान पर लाल रंग के शुद्ध कपड़े में लपेटकर रख दें। नित्य उतनी संख्या में मन्त्र जप किया करें जितनी संख्या में आपने आहुति देना तय किया हो। इस प्रयोग से घर में सौभाग्य बना रहेगा।

जप मन्त्र

“ओं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः”।

प्रयोग-98

बच्चों को प्रायः बुरी नजर का प्रभाव हो जाता है। नजर भी अनेक प्रकार की होती है। नजर की तीव्रता का होना इस बात पर अधिक निर्भर करता है कि वह किस इन्सान की है। नजर ईर्ष्या से लगी है अथवा अधिक स्नेह से। परस्पर दुश्मनी के कारण प्रभाव पड़ा है अथवा अत्यधिक प्रगाढ़ सम्बन्धों से। नजर पुरुष द्वारा लगी अथवा स्त्री की नजर से दुष्प्रभाव पड़ा है। फूल-सी हल्की-फुल्की नजर है अथवा पत्थर फोड़।

कहने का अभिप्राय यह है कि नजर कैसी भी और किसी के भी द्वारा लगाई गई हो जीवन को प्रभावित अवश्य करती है। इसके प्रभाव से बच्चा, जवान अथवा बूढ़ा, स्त्री-पुरुष, घर के पशु-पक्षी, वनस्पति और यहाँ तक कि हमारे दायरे में दिखने वाली बेजान वस्तुएँ जैसे कि मकान, साईकिल, स्कूटर, कपड़े आदि तक अछूते नहीं रहते।

बुरी नजर से प्रभावित मैंने अपने जीवन में अनेक उदाहरण देखे हैं। अपने ही एक परिवार के सदस्य का उदाहरण देता हूँ। पाठक स्वयं अनुमान कर लेंगे कि नजर क्या होती है। वह सज्जन उत्तम स्वास्थ्य वाले तथा खूब खाने-पीने के प्रेमी थे। दूध, रबड़ी, मिठाई आदि उनकी कमजोरी थी। रात्रि सोने से पूर्व चाहे उन्हें खाना मिले अथवा न मिले आधा किलो दूध अवश्य ही चाहिए था। उन दिनों हम बदायूँ में थे। वह स्थान उस समय दूध, रबड़ी आदि के लिए बहुत प्रसिद्ध था। एक रात जब दोनों रात्रि में बाजार से दूध पीकर लौटे। घर पहुँचना था कि उन्हें उल्टियाँ शुरू हो गयीं। सुबह होते-होते वह बिल्कुल ही पस्त हो गए। डॉक्टर को दिखाया गया। डॉक्टर ने एक शब्द इन्फेक्शन कहकर उपचार प्रारम्भ कर दिया। उनके पेट में दर्द भी होने लगा था। दर्द भी ऐसा-वैसा नहीं, छटपटाने वाला था। उसके लिए उन्हें बैरालगन का इन्जेक्शन दिए गए। लगभग एक सप्ताह में वह कुछ सामान्य हुए।

परन्तु कुछ ऐसा हो गया कि उन्हें दूध पचना एकदम बन्द हो गया। दूध पिया नहीं कि उल्टी हुई। अन्ततः घर में बड़े बजुर्गों ने यह मान लिया कि उनकी सफेद खाने की वस्तु पर किसी पत्थर फोड़ नजर का प्रभाव है। दिन बीतते गए। वास्तव में नजर का ही प्रभाव था। एक नजर उतरवाने से वह कुछ सामान्य हो चले थे। उसने सलाह दी थी कि सफेद मीठी वस्तु किसी के सामने मत खाना-पीना।

अब वह रात्रि का दूध किसी के सामने नहीं पीते। यदि कभी ऐसा कर लिया तो उन्हें उल्टियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं। हार कर उन्हें दो-चार दिन दूध बन्द करना पड़ता है।

पता नहीं पाठक इस सबको क्या कहेंगे अथवा मेरी कहानी को किस रूप में ले रहे होंगे। परन्तु उन्हें इतना अवश्य कह दूँ कि वह प्रभु से प्रार्थना करें कि उनके साथ कभी कुछ ऐसा-वैसा घटित न हो जाए।

विषय को आगे न बढ़ाते हुए मैं एक सरलतम प्रयोग ऐसे ही भुक्त-भोगियों के लिए लिख रहा हूँ जो किसी-न-किसी कुदृष्टि के प्रभाव से पीड़ित हैं। बच्चों पर इस प्रयोग का शीघ्र और अनुकूल प्रभाव प्रायः अनुभव में आया है। वैसे तो यह प्रयोग आवश्यकतानुसार किसी भी दिन किया जा सकता है। परन्तु इसे यदि मंगलवार और शनिवार के दिन रात्रि के समय करें तो यह अधिक प्रभावकारी सिद्ध होगा। सामान्यतः इस प्रयोग का एक बार करना ही पर्याप्त है। परन्तु यदि प्रभाव अधिक है तो यह जिस दिन से प्रारम्भ करें उस दिन से पूरे ८ दिन तक निरन्तर दोहरा लें।

पीड़ित व्यक्ति की लम्बाई के बराबर दो काले रंग के धागे ले लें। एक लाल तथा एक काली डोरी लगभग सुतली के बराबर मोटी लेनी है। मोटाई इससे कम नहीं होनी चाहिए। अच्छा हो यदि दोनों रंग के पायजामे में डालने वाले नाड़े मिल जाएँ। दूसरे दो धागे आम मशीन में कपड़े

सिलने वाले धागे ले सकते हैं।

अब पीड़ित व्यक्ति को सामने बैठाकर अथवा लिटाकर दो मोटे धागों को सरसों के तेल में डुबाकर उसके ऊपर सात बार उतारकर सामने किसी तार पर एक सिरे से पिन द्वारा लटका दें। दूसरे लाल और पतले धागों को उसके पैर के दोनों अंगूठों में लपेट दें। यहाँ एक ध्यान रखें कि पुरुष की दाएँ अंगूठे में काला और बाएँ में लाल धागा लपेटना है और स्त्री के अंगूठों में इसके विपरीत अर्थात् दाएँ में लाल और बाएँ में काला धागा लपेटना है।

अब लटके हुए धागों के नीचे दो पानी के बर्तन रखकर दोनों में माचिस से आग लगा दें। पीड़ित व्यक्ति से कहें कि वह जलते हुए धागों को ओर जलकर उनका पानी में गिरना निरन्तर देखता रहे। जब लटके धागे पूरी तरह जल जाएँ और उनके अन्तिम अंश तक नीच रखे पानी में गिर जाएँ तो उस पानी को सुबह तक के लिए घर में कहीं उठाकर सुरक्षित रख दें।

पैर में बंधे धागे बंधे-बंधे ही व्यक्ति को सो जाने दें। प्रातः उठकर सर्वप्रथम अंगूठे के धागे खोलकर घर के बाहर स्थित पीपल अथवा बरगद के पेड़ के ऊपर छोड़ दें। यह मैं ऊपर लिख ही आया हूँ कि यदि एक बार प्रयोग से लाभ न दिखाई दे तो उसे पूरे ८ दिन तक लगातार करते रहें।

प्रयोग-१५

धनदायक तान्त्रिक प्रयोग' पुस्तक का एक प्रयोग यहाँ दोहरा रहा हूँ। इसके मुझे बहुत ही अनुकूल प्रभाव मिल रहे हैं। अनेक लोगों के प्रायः ऐसे पत्र प्राप्त हो रहे हैं, जिन्हें इस प्रयोग से आशातीत लाभ हो रहा है।

जिन लोगों को किसी ग्रह के दुष्परिणाम स्वरूप अशान्ति बनी

रहती है। रातों को नींद उड़ जाती है। असामान्य स्वप्न सारी रात सोने नहीं देते, उनके लिए चित्त की शान्ति के साथ-साथ यह प्रयोग धन सम्बन्धी अनेक समस्याओं का भी स्वतः ही समाधान करवा देता है।

किसी भी रविवार को सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य यह प्रयोग करें। एक गोला (खोपरा) लें। एक चाकू से उसका मुँह इतना काट लें कि उसमें एक उंगली जा सके। घर के प्रत्येक सदस्य मिलकर उस गोले में बूरा (पिसी चीनी) तथा कोई भी पाँच सूखे मेवे पीसकर अथवा छोटे-छोटे टुकड़े करके भर दें। जब तन्त्र में यह भरने की प्रक्रिया चले, प्रत्येक सदस्य प्रभु से दीन होकर घर में सुख-समृद्धि और सौभाग्य की प्रार्थना करता रहे।

जब गोला भर जाए तो घर का कोई पुरुष सदस्य किसी पीपल, बड़-बरगद के घने और छायादार पेड़ के नीचे यह इस प्रकार गाड़ दे कि गोले का कटा भाग धरती में से थोड़ा-सा दिखाई देता रहे।

गोला एक बार गाड़ने के बाद कोई पशु-पक्षी उसे खोदकर निकाल न दे, इसलिए उसके ऊपर एक पत्थर ऐसे रखकर ढक दे जिससे कि उसका छिद्र मात्र थोड़ा-सा खुला रह जाए। इसके बाद निःशब्द घर लौट आए। यदि गोले में भरने के बाद सामग्री बच जाए तो उसे गोले के चारों ओर छिड़क दे जिससे कि उसमें चींटियाँ जल्द लग जाएँ।

आप स्वयं सोचिए, चींटियों के लिए लम्बे समय का भोजन एकत्र करके आपने कितने पुण्य का कार्य किया है। आपके पुण्य कर्म के लिए प्रभु आपको क्यों नहीं सौभाग्यशाली बनाएँगे।

प्रयोग-१६

मुद्रा के रूप में चलन में कभी-कभी ऐसी धातु के सिक्के आ जाते हैं जिनका तन्त्र में विशेष महत्व होता है। महाराष्ट्र प्रवास में मुझे अनेक ऐसे व्यक्ति मिले जिन्हें इस प्रकार के सिक्कों से आशातीत लाभ

रहती है। रातों को नींद उड़ जाती है। असामान्य स्वप्न सारी रात सोने नहीं देते, उनके लिए चित्त की शान्ति के साथ-साथ यह प्रयोग धन सम्बन्धी अनेक समस्याओं का भी स्वतः ही समाधान करवा देता है।

किसी भी रविवार को सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य यह प्रयोग करें। एक गोला (खोपरा) लें। एक चाकू से उसका मुँह इतना काट लें कि उसमें एक उंगली जा सके। घर के प्रत्येक सदस्य मिलकर उस गोले में बूरा (पिसी चीनी) तथा कोई भी पाँच सूखे मेवे पीसकर अथवा छोटे-छोटे टुकड़े करके भर दें। जब तब में यह भरने की प्रक्रिया चले, प्रत्येक सदस्य प्रभु से दीन होकर घर में सुख-समृद्धि और सौभाग्य की प्रार्थना करता रहे।

जब गोला भर जाए तो घर का कोई पुरुष सदस्य किसी पीपल, बड़-बरगद के घने और छायादार पेड़ के नीचे यह इस प्रकार गाड़ दे कि गोले का कटा भाग धरती में से थोड़ा-सा दिखाई देता रहे।

गोला एक बार गाड़ने के बाद कोई पशु-पक्षी उसे खोदकर निकाल न दे, इसलिए उसके ऊपर एक पत्थर ऐसे रखकर ढक दे जिससे कि उसका छिद्र मात्र थोड़ा-सा खुला रह जाए। इसके बाद निःशब्द घर लौट आए। यदि गोले में भरने के बाद सामग्री बच जाए तो उसे गोले के चारों ओर छिड़क दे जिससे कि उसमें चींटियाँ जल्द लग जाएँ।

आप स्वयं सोचिए, चींटियों के लिए लम्बे समय का भोजन एकत्र करके आपने कितने पुण्य का कार्य किया है। आपके पुण्य कर्म के लिए प्रभु आपको क्यों नहीं सौभाग्यशाली बनाएँगे।

प्रयोग-१६

मुद्रा के रूप में चलन में कभी-कभी ऐसी धातु के सिक्के आ जाते हैं जिनका तन्त्र में विशेष महत्व होता है। महाराष्ट्र प्रवास में मुझे अनेक ऐसे व्यक्ति मिले जिन्हें इस प्रकार के सिक्कों से आशातीत लाभ

हुआ है। पदार्थ तन्त्र के अपने प्रयोगों में मैंने भी इन सिक्कों से प्रयोग करवाए हैं। अनेक लोगों के अनुभव में आया कि उन्हें चमत्कारी रूप से लाभ मिला है। परन्तु एक बात का विशेष रूप से ध्यान रखना है कि सिक्का आपको वास्तविक मिले क्योंकि इन सिक्कों के नकली सिक्कों की बाजार में भ्रमर है, इसलिए अधिकांशतः आपको नकली सिक्के ही मिलेंगे।

जालना के इंजीनियर सालुंके तथा इन्दौर के रेडियोलॉजिस्ट डॉ. क्रान्तीश शिवहरे से सर्वप्रथम पता चला कि नासिक से इन्दिरा गांधी पर सन् १९८६ के लगभग एक रुपए का सिक्का टंकण हुआ था। उसमें इन्दिरा जी का चेहरा है जिसमें उनके गले में रुद्राक्ष की एक माला पड़ी है। यह सिक्के बहुत ही अल्प संख्या में टंकण हुए थे इसलिए चलन से तत्काल ही लोप हो गए। बाजार में आपको भी यह सिक्का मिल जाएगा। इसका मूल्य पचास रुपए से लेकर दो-तीन हजार रुपए तक विक्रेता आपसे माँग सकते हैं। परन्तु आप धोखे में न आएँ क्योंकि यह सिक्के पूर्णतया नकली हैं। पाँच रुपए के इन्दिरा गांधी के सिक्के को बहुत ही कारीगरी से एक रुपए का बनाकर बेचा जा रहा है। यदि आप ध्यान से देखें तो आपको स्पष्ट हो जाएगा कि जहाँ पाँच लिखा हुआ था उसे काट-छाँटकर एक बना दिया गया है।

देवी-देवताओं के अनेक सिक्के भी आपको बाजार में प्रायः मिल जाएँगे। यदि सौभाग्य से आपको यह वास्तविक मिल जाए तो आप इनसे गोपाल राजू के प्रयोग कर सकते हैं। 'राम टका' एक बहुत ही सामान्य-सा सिक्का है। आप तलाश करेंगे तो यह आपको सरलता से मिल जाएगा परन्तु अधिकांशतः यह नकली हैं—फैब्रिकेटेड।

डॉ. क्रान्तीश शिवहरे के साथ मिलकर वास्तविक पदार्थों को चैतन्य करने के बाद उनके आभामण्डल को पी.आई. फोटोग्राफी द्वारा चित्रित करके हमने उनमें विलक्षण परिवर्तन देखे हैं। अपने धनदायक

प्रयोगों की अन्य पुस्तक में मैंने उन चित्रों को मूल रूप में छपवाया भी है। इन चित्रों से भी हमें असली-नकली की परख करना सम्भव हुआ है। यह बिल्कुल ही अलग विषय है।

जॉर्ज पंचम का सन् १९१८ का एक रुपए का सिक्का आपको सरलता से मिल जाएगा। यह चाँदी का भी है और गिलेट का भी। अपने प्रयोग के लिए आपको चाँदी वाला सिक्का लेना है।

कर्नाटक, मालवा, महाराष्ट्र आदि राज्यों की जनजातियों में मैंने ताँबे के एक पैसे तथा ताँबे के ही कुछ अन्य सिक्कों से सट्टा, लॉटरी, जुआ आदि खेलते देखा है। इस प्रकार से धन अर्जित करने के मैं बिल्कुल पक्ष में नहीं हूँ इसलिए इस प्रकार के प्रयोगों का मैंने अपने प्रयोगों में कहीं भी स्थान नहीं रखा है।

यदि आपको उपरोक्त में से कोई सिक्का मिल जाए तो दुर्भाग्य दूर करने के लिए आप उससे एक सरल सा प्रयोग करके देखें, पता नहीं प्रभु आपके लिए कहाँ से सौभाग्य के द्वार खोल दें।

सर्वप्रथम सिक्के को आप नीबू, रेत, खटाई आदि से रगड़कर साफ करके अच्छी तरह से चमका लें। किसी शुभ होरा-मुहूर्त में उसे नमक के पानी में कुछ घंटों के लिए डुबाकर रख दें। आप देखें कि शुभता के क्रम से आपको इनमें से कौन सा वृक्ष सुलभ है जहाँ आप प्रयोग प्रारम्भ कर सकते हैं—श्वेतार्क, सिरस, पीपल, बरगद, अशोक तथा केला। अपने प्रयोगों के लिए मैं गणपति स्वरूप श्वेतार्क का वृक्ष चुनता हूँ क्योंकि मेरे छोटे से घर के बड़े आँगन में वर्षों पुराना एक ऐसा वृक्ष मैंने संजोकर रखा है।

वृक्ष की जड़ में अपने अनुरूप नक्षत्र, होरा तथा मुहूर्त चुनकर आप वह सिक्का दबा दें। यहाँ से आपका प्रयोग प्रारम्भ होता है। यह वस्तुतः 'हठयोग प्रदीपिका' के नाथ सम्प्रदाय से प्रेरित होकर लिया गया है। नाथ सम्प्रदाय के लिए प्रसिद्ध है कि आदिगुरु शंकराचार्य अन्ततः नाथ सम्प्रदाय

के अनुयायी हो गए थे, अपने मत को तब से वह 'अवधूत मत' कहने लगे।

जो लोग तन्त्र में पार्वती और शिव अर्थात् श्रद्धा और विश्वास से जुड़े हुए हैं अथवा वामाचारी, दक्षिणाचारी, सिद्धान्ताचारी अथवा कौलाचारी हैं वह नाथानुयायी हैं—शिवरूप हैं। वह आस्थावान हैं कि नाथ सम्प्रदाय के प्रत्येक नाथ का नाम अपने में सिद्ध है, उनका उचित क्रम में प्रयोग कर दुर्भाग्य को दूर भगाया जा सकता है।

'महार्णव तन्त्र' में वर्णित नवनाथों के नाम आप याद कर लें। यह क्रम है—गोरक्षनाथ, जालंधरनाथ, नागार्जुन, सहस्रार्जुन, दत्तात्रेय, देवदत्त, जड़भरत, आदिनाथ तथा मत्स्येन्द्रनाथ। चुने हुए नक्षत्र से इन नवनाथों को नौ-नौ बार नमन करते हुए नौ दिन तक नित्य सिक्के के दबाये हुए स्थान पर नौ बार ही जल दें। वहाँ चावल तथा श्वेत पुष्प अर्पित करें। नवें दिन उक्त प्रकार से क्रिया करने के बाद सिक्का निकाल लें तथा आने वाली पूर्णिमा तक उसे मिट्टी लगे हुए वैसे ही घर में कहीं पवित्र स्थान में रख लें। पूर्णिमा के दिन सिक्के को साफ करके नारियल के पानी में डुबाकर रख दें तथा नवनाथों का ध्यान पूर्व की भाँति नौ-नौ बार ध्यान करते हुए उसे नारियल पानी से निकालकर लाल कपड़े में लपेट कर घर अथवा अपने कार्यस्थल में कहीं शुद्ध स्थान में रख दें। तदन्तर में प्रत्येक पूर्णिमा को इसी प्रकार उसे नारियल पानी में डुबाकर प्रत्येक नवनाथ का नौ-नौ बार ध्यान करते हुए उसे पुनः लाल कपड़े में लपेट कर रख लिया करें। नमन के लिए नामों को निम्न प्रकार से जप करें—

ॐ श्री गोरक्षनाथाय नमः

ॐ श्री जालन्धरनाथाय नमः

ॐ श्री नागार्जुनाथाय नमः

ॐ श्री सहस्रार्जुनाथाय नमः

ॐ श्री दत्तात्रेयनाथाय नमः

ॐ श्री देवदत्तनाथाय नमः

ॐ श्री जड़भरतनाथाय नमः

ॐ श्री आदिनाथाय नमः

ॐ श्री मत्स्येन्द्रनाथाय नमः

प्रयोग-१७

पाँच रुपए का एक ऐसा करंसी नोट कुछ समय पूर्व तक चलन में था जिसके पृष्ठ भाग में चार हिरण खड़े हुए हैं। व्यापक स्तर पर जब से मैंने उसका प्रयोग प्रारम्भ करवाया अथवा अपने भाषण, संगोष्ठी आदि में उसका वर्णन किया तब से उसका इतना प्रचार हो गया कि वह करंसी नोट प्रयोगकर्ताओं द्वारा छुपा लिए गए। आज भी थोड़ा सा प्रयास करने पर सम्भवतः वह आपको मिल जाएँ। आप ऐसे दो नए नोट जमा कर लें। इनका सर्वाधिक प्रभावशाली प्रयोग वैसे तो शरद पूर्णिमा तथा होली का दिन होता है तथापि यह किसी भी शुभ पूर्णिमा में भी किया जा सकता है।

शुभ मुहूर्त में एक दक्षिणावर्ती शंख लें। पूर्णिमा के दिन उसमें अपने किसी भी नियमित रूप से जपने जाने वाले मन्त्र के साथ-साथ चावल भी भरते रहें। चावल ठीक वैसे ही भरने हैं जैसे मन्त्रोच्चार के बाद हवन सामग्री अग्नि कुण्ड में छोड़ते हैं। सामग्री के परिमाण में ही चावल शंख में भरने हैं। जब शंख पूरी तरह चावलों से भर जाए तो आप रुक जाएँ। शंख में अब दोनों नोट कौन बनाकर अलग-अलग शंख में रखे चावलों में फँसा दें। यह शंख आप अपने घर के किसी भी ऐसे स्थान में रख सकते हैं जहाँ से यह हिलाया-डुलाया न जाए। शंख रखते समय यह ध्यान अवश्य रखें कि इसका पूँछवाला भाग उत्तर-पूरब दिशा में रहे। वर्ष में एक अथवा दो बार अच्छा हो कि होली तथा शरद पूर्णिमा में इसे पुनः इसी प्रकार भरकर स्थापित कर दिया करें। दुर्भाग्य दूर करने का यह एक अच्छा उपक्रम सिद्ध होगा।

प्रयोग-१८

सौभाग्य के लिए एक बहुत ही अच्छा, सरल तथा अनुभूत प्रयोग लिख रहा हूँ। इसके बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं। कोई ऐसा सुनने में नहीं आया कि जिसने यह किया हो और उसे अच्छा न लगा हो। एक बात यह अवश्य ध्यान रखें कि अच्छे की सीमा अपने-अपने प्रारब्ध पर भी निर्भर करती हो।

पवित्री अर्थात् एक तान्त्रिक मुद्रिका विशेष प्रकार से दुर्भाग्य को दूर करने के लिए बनाई जाती है। आप भी प्रयास कर देखें, पता नहीं प्रभु की अहैतुकी कृपा आप पर कहाँ तथा किस विधि-उपक्रम से हो जाए।

अपनी दाएँ हाथ की अनामिका ऊँगली की नाप के तीन धातु सोना, चाँदी तथा ताँबे के तीन छल्ले बनवा लें। हो सकता है सोने के छल्ले के लिए आप व्यय न कर पाएँ। इसके विकल्प के लिए आप एक पीतल का छल्ला बनवा लें तथा उसमें छोटी सी सोने की एक कील ऐसी लगवा लें कि नीचे से वह ऊँगली को स्पर्श करती रहे।

कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी अथवा उत्तराषाढा नक्षत्र में से किसी एक नक्षत्र काल में सोने का छल्ला सफेद आक अथवा बेल के वृक्ष के नीचे दबा दें तथा इस दिन से नौ दिन अर्थात् सूर्य के अगले नक्षत्र तक वृक्ष में नियमित जल से अर्घ्य दें। इसी प्रकार चन्द्र के नक्षत्रों रोहिणी, हस्त अथवा श्रवण तथा मंगल के नक्षत्रों मृगशिरा, चित्रा अथवा धनिष्ठा में से किन्हीं एक में चाँदी तथा ताँबे के छल्ले क्रमशः खिरनी तथा अनन्तमूल की जड़ में दबाकर चन्द्र तथा मंगल के अगले नक्षत्रों तक अर्थात् नौ दिन तक उपरोक्त की भाँति जल देते रहें।

अन्तिम दिन जल देने के बाद सूर्य की होरा में सोने, चन्द्र की होरा में चाँदी तथा मंगल की होरा में क्रमशः ताँबे का छल्ला निकालकर, धो-पोछकर धारण कर लें। यह विशेषरूप से ध्यान रखना है कि छल्ले उपरोक्त प्रकार से उन्हीं होराओं में धारण करने हैं।

प्रयोग-१९

प्रकृति ने हमारे चारों ओर वनस्पति सम्पदा का अकूत भण्डार भर दिया है। हमारा एक दुर्भाग्य यह भी है कि हम उस सम्पदा से अज्ञानतावश सौभाग्य लाभ नहीं ले पा रहे। वनस्पति तन्त्र प्रयोग सरल तथा साध्य है। इसके प्रयोग में कोई बन्धन भी नहीं है परन्तु यदि आप इस प्रयोग में नक्षत्र तथा होरा का ध्यान रखते हैं तो प्रयोग अधिक प्रभावशाली सिद्ध होगा। जिन वनस्पतियों का नाम मैं यहाँ दे रहा हूँ उनके अंगों में जड़, पत्ते तथा फल क्रम से लाभदायक सिद्ध होते हैं। आपको इन अंगों को मात्र लाल कपड़े में लपेटकर घर अथवा कार्य स्थल में कहीं पवित्र स्थान पर रखना है तथा एक माह बाद उन्हें पुनः नए से बदलकर पुराने को घर के बाहर कहीं छोड़ देना है। किस विषय में सौभाग्य के लिए कौन सी वनस्पति किस नक्षत्र तथा होरा में सौभाग्य के लिए रखी जाए, वह एक सारणी के रूप में यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ—

| क्रम | वनस्पति | कार्य सिद्धि | नक्षत्र | होरा |
|------|---|----------------|---------|--------|
| १. | विल्व | सन्तान सुख | अश्विनी | सूर्य |
| २. | पान | चोर से भय | भरणी | शुक्र |
| ३. | प्याज | रोगनिवारण | कृतिका | सूर्य |
| ४. | थूहर की जड़ | वाक् सिद्धि | कृतिका | सूर्य |
| ५. | शंखपुष्पी | धन-धान्य | पुष्य | शनि |
| ६. | चमेली की जड़ | विजय | पुष्य | सूर्य |
| ७. | पीली सरसों तथा निर्गुण्डी का पञ्चाङ्ग | व्यापार वृद्धि | पुष्य | सूर्य |
| ८. | बरगद | व्यापार वृद्धि | पुष्य | सूर्य |
| ९. | बेर | मंत्र सिद्धि | मघा | गुरु |
| १०. | चकौड़ा-पवॉर | विजय | हस्त | चन्द्र |

माना कि किसी रोग को लेकर आप अपने भाग्य को कोस रहे हैं तो उससे अच्छा आप यह प्रयोग कर देखें। कृतिका नक्षत्र तथा सूर्य की होरा में आप प्याज का एक पौधा उखाड़ लाएँ। इसी मुहूर्त में थोड़े से तने के साथ उसे लाल कपड़े में लपेट कर रख लें। तदन्तर में सूर्य के ही किसी नक्षत्र तथा होरा में इसे पुनः नए प्याज से बदल दिया करें।

इसी प्रकार ही अन्य विषयों से बन रहे दुर्भाग्य को दूर करने के लिए आप सारणीनुसार प्रयोग करते रहें।

प्रयोग-20

व्यक्ति की जन्म कुण्डली में कुछ ऐसे योग होते हैं जो उसकी उन्नति नहीं होने देते अथवा उन्नति होती भी है तो वह उस गति से नहीं होती जिस गति से व्यक्ति के गुण और कर्मानुसार अपेक्षित होती है। कालसर्प योग एक ऐसा ही दोष है जो जीवन में गति आने ही नहीं देता है। हालाँकि ज्योतिष के वाङ्मय साहित्य अथवा अन्य ज्योतिष जातक ग्रन्थों में इस दोष का वर्णन मिलता ही नहीं है। फिर भी पता नहीं यह किस बौद्धिक मानसिकता की देन है। इस विषय पर मैंने अलग से भी बहुत कुछ लिखा है। इसके निदान के लिए अपनी पुस्तक 'स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न' में भी मैंने विभिन्न रत्नों के संयोग गणना करके लिखे हैं। यह सब मेरे शोध तथा अपनी स्वयं की ज्योतिष आदि की विशुद्ध गणनाओं का परिणाम है, यह अन्यत्र नहीं मिलेगा।

वस्तुतः आप यह स्वीकार कर लें कि शास्त्रोक्त न होते हुए भी यह दोष है और जीवन में दुर्भाग्य देता ही देता है। मेरे व्यक्तिगत अनुभव तथा मेरे अन्य स्नेहियों के जीवन में भी एक सरल सा प्रयोग अनुभूत हुआ है। यदि आप इस तथाकथित दोष से दुर्भाग्यपूर्ण जीवन जी रहे हैं तो यह करके देखें, प्रभु अवश्य ही आपको सौभाग्यशाली बनाएँगे।

उत्तरांचल में ऋषिकेश से यदि आप नीलकण्ठ के रास्ते पर चलें

तो राम झूला से लगभग तीन किलोमीटर दूर एक प्रसिद्ध स्थल आता है—गरुड़ चट्टी। वहाँ गरुड़ तथा विष्णु भगवान् की एक पाषाण मूर्ति है। यह स्थान भीड़-भाड़ से बिल्कुल अलग-थलग है इसलिए पूर्णतया चैतन्य है। इस पाषाण मन्दिर के समीप ही एक कुण्ड है। इसमें स्नान करके विष्णु भगवान की मूर्ति से लिपटकर दीन-हीन होकर यदि कोई कालसर्प दोष पीड़ित हृदय से याचना करता है तो उसको आनन्द की अवश्य ही अनुभूति होती है। वैसे तो किसी भी सोमवार को आप मूर्ति से लिपटकर याचक बन सकते हैं तथापि अपने समय और सुविधानुसार कोई भी दिन चुना जा सकता है।

मूर्ति में लिपटते समय की विलक्षण अनुभूति का आभास प्रत्यक्ष दर्शन करने पर ही अनुभूत हो सकता है। इस दिव्य उपलब्धि का वर्णन लिखकर वर्णन नहीं किया जा सकता।

मैं समझता हूँ कि इस दिव्यता का प्रभाव इसीलिए है कि वह स्थान सर्वथा अछूता है—भीड़-भाड़ तथा आडम्बर से सर्वथा दूर।

प्रयोग-२१

जीवन में अकस्मात् घटित होने वाले कुछ दृश्य बहुत ही सौभाग्यशाली सिद्ध हो सकते हैं। परन्तु हम उन क्षणों को अनदेखा कर उनसे लाभ नहीं उठा पाते। यह हमारा दुर्भाग्य ही तो है। पाठकों के लिए कुछ ऐसी ही शुभ करवाने वाली बातें लिख रहा हूँ। पाठक ध्यान रखें कि यह सब उस स्थिति में ही शुभाशुभ करेंगी जब यह अकस्मात् घटित हुई हों।

बाग बगीचों में सुगमता से दिखने वाला थलचर नेवला व्यक्ति के लिए सौभाग्यशाली सिद्ध हो सकता है, ऐसी कल्पना किसी ने भी नहीं की होगी। किसी कार्यवश यदि आप घर से निकल रहे हों और अकस्मात् कोई नेवला आपको दिख जाए अथवा आपका रास्ता काटकर आगे बढ़

जाए तो आप एक क्षण के लिए रुककर उसे अपने मार्ग पर बढ़ जाने दें। जहाँ से वह निकला हो उस स्थान से एक चुटकी मिट्टी उठाकर चुपचाप अपने बटुए में रख लें। यदि आप बटुआ न रखते हों तो उस मिट्टी की एक पुड़िया बनाकर ऐसे ही जेब में रख लें। आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपको अच्छा लगने लगा है।

यदि अकस्मात् आपको नीलकण्ठ अथवा मस्ती में नाचता हुआ मोर दिखाई दे जाए और उसका कोई पंख टूट कर गिर जाए तो उसे तुरन्त उठा लें। अपने घर लाकर यह ऐसे ही किसी साफ से लाल कपड़े में लपेटकर रख लें।

यदि आप किसी आवश्यक कार्यवश घर से निकल रहे हैं और अकस्मात् आपको बछड़े को दूध पिलाती हुई कोई गाय दिख जाए तो आप तुरन्त घर लौट जाएँ। घर से लाकर एक रोटी और गुड़ उस दूध पिला रही गाय को खिला दें। यदि रोटी और गुड़ तत्काल उपलब्ध न हो, तो घर से कुछ भी खाने की वस्तु खिला सकते हैं। आपका पूरा दिन प्रसन्नचित्त और सौभाग्यशाली बीतेगा।

मार्ग में आते-जाते यदि आपको कोई शवयात्रा दिखाई दे तो अपने कार्य से रुककर उस यात्रा के साथ दस-पन्द्रह कदम चलें। यदि यात्रा के साथ बस, ट्रेन आदि में जा रहें होने के कारण लाचारी हो तब तो अलग बात है परन्तु यदि आप स्कूटर, साइकिल पर जा रहे हों तो शव यात्रा के साथ उतरकर, उस दिशा की ओर थोड़ा चलकर फिर अपने गन्तव्य की ओर बढ़ जाएँ।

घर आई नई नवेली दुल्हन के कपड़ों में यदि आपका कभी कोई मकड़ी दिखाई दे तो उसे मारें कदापि नहीं। उसे किसी कागज, झाड़ू आदि से घर के दरवाजे से बाहर छोड़ दें। यह बहुत ही सौभाग्यशाली प्रयोग है।

यदि नई नवेली दुल्हन सुहाग के जोड़े में कभी अकस्मात् किसी

बात पर इतना अधिक हँस ले कि खुशी के कारण उसकी आँखों से आँसू छलक आएँ और यह खुशी के आँसू घर का कोई दुःखी सदस्य अपनी उँगली में लेकर चाट ले तो उसके दुःख में कमी आकर उसे आत्मिक सन्तोष और असीम मानसिक शान्ति मिलती है।

प्रिय पाठक सदैव ध्यान रखें कि महिलाओं पर तीन स्थितियों में सर्वाधिक टोने-टोटके किए जाते हैं और वह दुष्परिणाम देने में प्रभावी सिद्ध भी होते हैं। पहली स्थिति उस समय सावधानी बताने वाली होती है जब महिला मासिकधर्म के दिनों में होती है। दूसरी स्थिति वह है जब गर्भावस्था में होती है तथा तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण वह जब वह सुहाग के जोड़े में जयमाला के लिए तैयार होने से लड़के के घर विवाह सम्पन्न होने के बाद तक विवाह के नए कपड़े बदल नहीं लेती।

अर्थात् इसको इस प्रकार समझ लीजिए कि उसको मासिकधर्म समय के पाँच दिन, गर्भावस्था से नौ माह और विवाह होने के समय दो-तीन दिन विशेषरूप से ध्यान रखना आवश्यक है। मैंने अनेक ऐसे उदाहरण देखे हैं कि लड़की के विवाह के समय उसके ऊपर से उतरे हुए फूल लेकर उसके दुर्भाग्य के लिए तन्त्र किया गया था। शादी के जोड़े में से थोड़ा-सा टुकड़ा काट लिया। शादी के समय उसे कुछ खिला दिया अथवा माहवारी के समय के उसके गन्दे कपड़े से कुछ कर दिया गया।

वैसे एक अन्य बात भी स्पष्ट कर दूँ कि बुरा करने वाले किसी भी कमजोर स्थिति का लाभ उठाकर बुरा करने से नहीं चूकते। राम ही जाने उन बुरा करने वालों का परिणाम क्या होगा? परन्तु यह अवश्य कह दूँ कि उनसे अधिक पाप के भागीदार तो वह नीच व्यक्ति हैं जो लाभ देकर तान्त्रिकों से यह सब क्रिया-कलाप करवाते हैं।

जिस किसी का भी घर इस प्रकार के दुष्परिणामों से प्रभावित हुआ है उनके लिए उस घर में 'रामरक्षा स्तोत्र' का पाठ बहुत ही लाभदायक सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त पीड़ित स्त्री अथवा पुरुष को यदि एक

अच्छा-सा जबरजद (पैरीडोट) नामक रत्न लॉकेट अथवा अंगूठी में पहनवा दें तो भी सन्तोषजनक प्रमाण मिलते हैं। परन्तु यह ध्यान रहे कि यह रत्न नकली अधिक मिलते हैं। एक अन्य सरल प्रयोग पाठकों के लिए लिख रहा हूँ।

पुष्य नक्षत्र में कहीं से चिरचिटा का एक पौधा सावधानी से पूरी जड़ सहित खोद लाएँ। यह पौधा सर्वसुलभ है। अपने क्षेत्र में स्थानीय लोगों से आप इसे सरलता से प्राप्त करवा सकते हैं। इन पौधों की जड़ महत्त्वपूर्ण है। अब जड़ से ऊपर पौधे के तने वाला भाग लगभग छह इन्च काटकर हटा दीजिए।

यह जड़ वाला भाग घर में गड़ढा खोदकर इस प्रकार दबा दीजिए कि जड़ वाला भाग ऊपर तथा तने वाला भाग धरती के नीचे की ओर रहे। ऊपर से देखने पर पता न चले कि यहाँ पर जड़ दबाई गई है। पूरे का पूरा पौधा धरती में समा जाना चाहिए। प्रयास यह रहे कि इसे कोई खोदकर निकाल न दे। यदि दुर्भाग्यवश कोई वहाँ से यह निकाल भी दे तो चिन्ता की कोई बात नहीं है। अगले पुष्य नक्षत्र में जड़ दबाने की प्रक्रिया पुनः दोहरा दें। इस प्रयोग से महिला पर बुरे प्रभाव के कारण उत्पन्न घर की अशांति पुनः शांति में बदलने लगेगी।

राह में चलते किसी भी असहाय व्यक्ति अथवा जीव का उपहास कभी न करें। यथासम्भव उसकी सहायता कर दें। गर्भवती स्त्री की दयनीय अवस्था से द्रवित होना सीखें। आस-पास अथवा आपके स्वयं के घर में यदि कोई ऐसी महिला है तो यथासम्भव उसके स्वाद का खाद्य पदार्थ उसे अवश्य उपलब्ध करवा दें। यह बहुत ही पुण्य का कार्य है।

प्रातःकाल अकस्मात् कोई नहा-धोकर सजी हुई भद्र महिला दिखाई दे जाए तो समझिए आपका सारा दिन सौभाग्यशाली बीतेगा। यदि कोई दुर्भाग्य की सताई महिला ऐसे में उसके बाएँ पाँव के नीचे की एक अंश भर मिट्टी चुपचाप अपनी माँग में भर लें तो उसके लिए वह दिन

सौभाग्य देने वाला सिद्ध होगा। पाँव की मिट्टी उसके वहाँ से चले जाने के बाद में भी उठाई जा सकती है।

अनेक परिवारों में घर के किसी सदस्य द्वारा अत्यधिक शराब अथवा अन्य नशे के उपयोग के कारण उपजे तनाव को दूर करने के लिए उस व्यक्ति को दाएँ हाथ की मध्यमा में चाँदी की अंगूठी में एक बड़े से बड़ा कटैला रत्न (एमीथिस्ट) पहना दें। उसकी नशे की लत छूट जाएगी। इसके लिए एक सरल-सा टोटका भी लिख रहा हूँ। वह व्यक्ति जब कभी नशे में धुत्त होकर घर लौटे और सोने से पहले एक अकस्मात् उसका जूता अथवा चप्पल उल्टी हो जाए तो उसके सोने के बाद वह चुपके से उठाकर घर के बाहर सात बार जमीन पर पटक कर घृणा से उस पर थूकें।

अब उस जूते अथवा चप्पल के भार के बराबर आटा निकालकर नशे में सोए हुए आदमी के ऊपर से सात बार उतारें और सँभाल कर रख दें। सुबह उस आटे की रोटी बनाकर कुत्ते को खिला दें। व्यक्ति की मानसिकता पर निश्चित रूप से अन्तर पड़ने लगेगा। प्रभाव कम हो तो यह प्रयोग पुनः दोहराते रहें।

रात्रि में खिलने वाले सफेद फूल तन्त्र में बहुत उपयोगी होते हैं। इन फूलों के मैंने अनेक सरलतम प्रयोग लोगों पर सफलतापूर्वक करवाए हैं। यहाँ उन्हीं में से एक लिख रहा हूँ। देर रात्रि में यदि आप कहीं से घर लौट रहे हों और अकस्मात् आपको रात की रानी, बेला आदि फूलों की सुगन्ध आ जाए तो आप तत्काल रुक जाएँ। एक बार पुनः दोहरा हूँ कि यह प्रयोग तब ही फलदायक सिद्ध होगा जब आप अकस्मात् ही किसी सुगन्ध से ठिठककर रुक गए हों।

अब "ॐ नमो नारायणाय" मन्त्र का उच्चारण करते हुए उस सुगन्ध वाली दिशा में बढ़कर उस पौधे से गिनकर नौ फूल तोड़ लें। इन्हें आकर एक कागज की पुड़िया में लपेट कर पूजा के स्थान पर, किसी

अन्य पवित्र स्थान अथवा गल्ले में रख दें। वहाँ दो अगरबत्ती जला दें। उक्त मन्त्र तब तक निरन्तर उच्चारण करते रहें जब तक कि अगरबत्ती पूरी तरह बुझ नहीं जाती। यह फूल ऐसे ही रखे रहने हैं। इनका प्रभाव लगभग एक माह तक बना रहता है।

गर्भवती स्त्री यदि बैठकर कोई फल खा रही हो और वह छिटककर उसकी गोद में गिर जाए तो यह उस महिला के लिए बहुत शुभ लक्षण है। यदि गोद में से ही यह फल उठाकर बिना टोके कोई ऐसी स्त्री खा ले जिसके बच्चे नहीं होते तो उसके लिए यह टोटका फलदायक सिद्ध हो सकता है।

ऐसे ही यदि कोई किसी आवश्यक कार्य से कहीं जा रहा हो। अकस्मात् उसके आगे वृक्ष से पका हुआ फल टूटकर आ गिरे तो उसे एकदम उठा लें। फल को लात कदापि न मारें। आगे कहीं रास्ते में जहाँ भी उसे धोने आदि की सुविधा मिले उसे धोकर खा लें। व्यक्ति की यात्रा अवश्य सफल होगी।

पुष्य नक्षत्र में चाँदी की एक छोटी-सी डिबिया बनवाकर रख लें। आपके पहले बेटे का अकस्मात् जब पहला दाँत टूटे तो उसे जमीन पर गिरने से पहले पकड़ कर उसे चाँदी की उस डिबिया में बन्द करके रख लें जो आपने पुष्य नक्षत्र में बनवाई थी। इसके बाद पूर्णिमा आने तक प्रतीक्षा करें। पूर्णिमा के दिन डिबिया में से दाँत निकालकर अच्छी तरह से धोकर साफ कर लें। डिबिया भी धोकर पवित्र कर लें। फिर दोनों को सूर्य के दर्शन कराएँ। अच्छी तरह से सूख जाने पर डिबिया में दाँत के साथ थोड़ा-सा शहद बन्द करके अपने घर में सुरक्षित रख लें, यह बहुत ही सौभाग्यशाली प्रयोग है।

आपको कभी चाँदी अथवा सोने का कोई आभूषण पड़ा मिल जाए तो उसे उठा लें। पहले यथाशक्ति यह प्रयत्न करें कि वह उसके वास्तविक मालिक के पास पहुँच जाए। यदि यह सम्भव न हो तो उसे घर कदापि न

रखें, किसी सुपात्र को दान कर दें। आपके ऊपर कितना ही कठिन समय क्यों न हो, विचलित न हों। यह आपकी परीक्षा की घड़ी होती है। प्रभु आपको अन्य माध्यमों से और देंगे। जिन लोगों के पास ऐसे माध्यम से यदि अधिक कुछ आ गया हो, तो वह उसका दशांश निकालकर सत्कर्म में लगा दें।

रतिक्रिया में लीन किसी पशु-पक्षी अथवा अन्य जीव का कभी उपहास न उड़ाएँ। उधर से दृष्टि बचाकर निकल जाएँ। अकस्मात् कभी कोई नाग और नागिन का जोड़ा आपको ऐसी स्थिति में मिल जाए तो यह बहुत ही शुभ लक्षण है। परन्तु आप वहाँ से तुरन्त हट जाएँ। कुछ देर बाद, जब उनकी रतिक्रिया समाप्त हो जाए और वह वहाँ से चले जाएँ तो आप उस स्थान विशेष की मिट्टी घर लाकर किसी चाँदी की डिबिया में भरकर घर में रख लें। उसमें थोड़ा-सा शहद भी बन्द कर दें। प्रभु आपका दुर्भाग्य दूर करेंगे।

गोपालराजू की अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें—

- ❖ सरलतम धनदायक तांत्रिक प्रयोग
- ❖ हस्तरेखाओं से रोग की पहचान (मेडीकल पामिस्ट्री)
- ❖ अंकों से चुनिए बच्चों के भाग्यशाली नाम
(३५०० नामों के शब्दकोश सहित)
- ❖ स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न
- ❖ सात दिन में ज्योतिष ज्ञान
- ❖ मन्त्र जाप के रहस्य और सरल प्रयोग
- ❖ अंधविश्वासों का सत्य और तथ्य

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विषय पर उत्कृष्ट पुस्तकें

- ❖ मनचाही सन्तान पुत्र या पुत्री (डॉ. अनिल मोदी)
- ❖ रोगनाशक धार्मिक अनुष्ठान (डॉ. अनिल मोदी)
- ❖ धन प्राप्ति के धार्मिक अनुष्ठान (डॉ. अनिल मोदी)
- ❖ पराविद्या और इच्छाशक्ति के चमत्कार (डॉ. एस.एल. धर्मरत्न)
- ❖ श्री नृसिंह तन्त्र और गढ़वाली शाबर (पं. वी.डी. भारतीय)
- ❖ मन्त्र प्रकाश संहिता एवं मुद्राएँ और रोगनाश (सुरेन्द्र दास 'निर्वाण')
- ❖ मन्त्र साधना में सफलता कैसे पायें (पं. महावीर प्रसाद मिश्र)
- ❖ पेड़ पौधों के तान्त्रिक प्रयोग और चमत्कारी प्रभाव (वैद्य महावीर सिंह)
- ❖ चमत्कार को नमस्कार : गढ़वाली मंत्र तंत्र (पं. वी.डी. भारतीय)
- ❖ अद्भुत मन्त्र सागर—तन्त्र के हजारों प्रयोग और अचूक टोटके
- ❖ तन्त्र की रहस्यमयी काली किताब (औदरनाथ तपस्वी)
- ❖ चमत्कारी 55 पूजा यन्त्र (पं. कुलपति मिश्र) सजिल्द
- ❖ यंत्र विधान (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ संकट मोचिनी कालिका सिद्धि (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ यंत्र माला (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ संजीवनी विद्या : महामृत्युंजय प्रयोग (योगीराज यशपाल जी)
- ❖ मन्त्र तन्त्र और रत्न रहस्य (तान्त्रिक बहल और पं. कपिल मोहन)
- ❖ पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें (अहिबलचक्र सहित) (तांत्रिक बहल)
- ❖ नाग और नागमणि (तांत्रिक बहल)
- ❖ तंत्र मंत्र द्वारा रोग निवारण (तांत्रिक बहल)
- ❖ मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ (तांत्रिक बहल)
- ❖ चमत्कारी मंत्र साधना (तांत्रिक बहल)
- ❖ पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ (तांत्रिक बहल)
- ❖ मन्त्र और तन्त्र साधना के सरल प्रयोग (तांत्रिक बहल)
- ❖ अलौकिक तान्त्रिक तरंग (के.एल. निषाद भैरमगढ़ी)
- ❖ ठल्लू तन्त्र, कौवा तन्त्र और पशु-पक्षी तन्त्र (अनुपम घोष 'मणिपुरी')
- ❖ तंत्र द्वारा यश, धन और विद्या प्राप्ति (पं. हरिओम कौशिक)

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार



गोपाल राजू

ज्योतिष चाराहमिहिर, ज्योतिष मार्तण्ड,
महामहोपाध्याय,
एक दर्जन से अधिक स्वर्णपदक तथा
मिलेनिमय अवार्ड विजेता,
तंत्र ज्योतिष में पी. एच. डी. (सम्मानार्थ)
शतकाधिक मानक उपाधियों से अलंकृत

दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय

- ❖ सूर्य उपासना एवं गायत्री मंत्र देखें पृष्ठ 13-35
- ❖ श्री राम-नाम जाप से सौभाग्य जगायें देखें पृष्ठ 36-45
- ❖ स्वरयोग की साधना से दुर्भाग्य हटायें देखें पृष्ठ 46-56
- ❖ शुभ और अशुभ दिन पहचानें देखें पृष्ठ 57-67
- ❖ यन्त्रों से दूर करें दुर्भाग्य देखें पृष्ठ 91-96
- ❖ रत्नों से दूर करें दुर्भाग्य देखें पृष्ठ 97-109
- ❖ वास्तु ज्योतिष में रंगों का महत्व जानें देखें पृष्ठ 110-118

यदि आप कहीं जा रहे हों और अचानक वृक्ष से पका हुआ फल टूटकर आ गिरे तो एकदम उठा लें। आगे कहीं भी उसे धोकर खा लें, यात्रा अवश्य सफल होगी, इत्यादि कई टोटके इसी पुस्तक में.....

| | | |
|---|---|---|
| ८ | १ | ६ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | ९ | २ |

दुर्भाग्य नाश करने वाला
श्री सूर्य यन्त्र